27/9/19

अभिप्रेरणा (Motivation)

'Motivation शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा मोटम Motom/ Movier से हुई है जिसका अर्थ 'To move" यानि गति करना होता है।"

गुड़ - "किसी क्रिया या कार्य को आरम्भ करने, जारी रखने तथा नियमित करने की प्रक्रिया अभिप्रेरणा कहलाती है।"

मैक्डूगल - "अभिप्रेरणा वे शारीरिक व मनोवैज्ञानिक दशायें हैं जो किसी कार्य को करने के लिये प्रेरित करती हैं।"

लावेल - "अभिप्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो आवश्यकता से आरम्भ होती है।" तथा उन साधनों की ओर ले जाती है जो आवश्यकता को संतुष्ट करती है।"

क्रेन्चफील्ड - "अभिप्रेरणा हमारे क्यों का उत्तर देती है।"

अभिप्रेरणा की विशेषतायें/प्रकृति :-

- अभिप्रेरणा व्यक्ति की आंतरिक अवस्था है।
- अभिप्रेरणा आवश्यकता से प्रारम्भ होती है।
- अभिप्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक (भावात्मक) प्रक्रिया है।
- अभिप्रेरणा एक क्रमिक व ज्ञानात्मक प्रक्रिया है।
- ——— ध्यान केंद्रित ——— " ———
- अभिप्रेरणा की गति प्रत्येक व्यक्ति में अलग-2 होती है।
- अभिप्रेरणा लक्ष्यप्राप्ति तक चलने वाली प्रक्रिया है।
- अभिप्रेरणा लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन है।

अभिप्रेरणा के प्रकार :- (2)

1. आंतरिक/ सकारात्मक/ प्राकृतिक अभिप्रेरणा
2. बाह्य अभिप्रेरणा/ नकारात्मक/ अप्राकृतिक अभिप्रेरणा

Scanned by CamScanner

1. आंतरिक अभिप्रेरणा :-

→ जब किसी क्रिया या कार्य को स्वयं की इच्छा से करता है तथा जिसको करने से सुख या सन्तोष की प्राप्ति होती है।

→ यह अभिप्रेरणा किसी भी कार्य को आरम्भ करती है-
जैसे- भूख, प्यास, काम, नींद, मल-मूत्र त्याग, मातृत्व प्रेम, सफलता की इच्छा, आराम, खेल-कूद, आत्म सम्मान, श्रद्धा भाव आदि।

2. बाह्य अभिप्रेरणा/नकारात्मक/अप्राकृतिक अभिप्रेरणा :-

→ जब किसी कार्य को स्वयं की इच्छा से ना करके दूसरों के दबाव में आकर करता है।

जैसे:- प्रशंसा, पुरस्कार, दण्ड, प्रतिस्पर्धा, सहयोग, शिक्षक, सहायक सामग्री, लक्ष्य तथा शिक्षक छात्र संबंध भी बाह्य प्रेरक में आता है।

अभिप्रेरणा के तत्व :-

(1) आवश्यकता :- यह दो प्रकार की होती है - 1. शारीरिक और 2. मनोवैज्ञानिक

(i) शारीरिक आवश्यकता :- भोजन, पानी, काम, मल-मूत्र त्याग

(ii) मनोवैज्ञानिक आवश्यकता :- प्रेम, सुरक्षा, आत्मसम्मान, उपलब्धि, सम्बन्ध

अब्राहम मैस्लो :-

सिद्धांत - आवश्यकता पदानुक्रम (1954 में दिया)

शारीरिक सुरक्षा → प्रेम → सम्मान → आत्मसिद्धी

विशेष :- मैस्लो ने 1959 में इस सिद्धांत में तीन आवश्यकतायें और जोड़ी-

(1) उत्तेजना की आवश्यकता

(2) एकीकरण/समग्र की आवश्यकता

(3) आध्यात्मिक आवश्यकता

चालक/प्रणोद/अन्तर्नोद/Driver :-

→ चालक शरीर की आंतरिक क्रिया या दशा है जो विशेष प्रकार का व्यवहार करने के लिये प्रेरित करता है।

जैसे- भूख, प्यास आदि।

Scanned by CamScanner

उद्दीपन / प्रोत्साहन / Incentive :-

⇒ जिस तत्व द्वारा चालक की संतुष्टि होती है वह उद्दीपन या प्रोत्साहन कहलाता है।

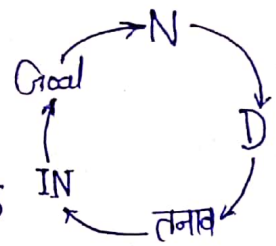

यह दो प्रकार का होता है- 1. सकारात्मक, 2. नकारात्मक

विशेष :- डेसी ने संज्ञा को अभिप्रेरणा चक्र में शामिल किया है।

⇒ जॉन पी डिसेको ने अभिप्रेरणा के चार तत्व बताये हैं-

1. उत्तेजना
2. आकांक्षा
3. प्रोत्साहन
4. दण्ड

V.Imp. **प्रेरक :-** M = N + D + I (वुडवर्थ)

गेट्स व अन्य के अनुसार :-

"प्रेरक प्राणी के भीतर की वे दशायें हैं जो निश्चित विधियों के अनुसार कार्य करने के लिये प्रेरित करती है।"

मैस्लो के अनुसार प्रेरकों का वर्गीकरण :-

1. जन्मजात प्रेरक :-

(i) भूख - कैनन व वाशबर्न ने इसका अध्ययन किया।

⇒ शरीर की माँस-पेशीयों में संकुचन होने तथा चीनी की मात्रा में कमी होनेपर भूख नामक प्रेरक उत्पन्न होता है।

(ii) इप्सटीन ने प्यास पर डबल डिप्लेशन सिद्धांत दिया है बताया कि प्यास के दो कारण होते हैं- 1. पानी की कमी से तथा 2. रक्त की कमी से।

(iii) काम - फ्रायड

(iv) नींद - क्लिटमैन

(V) मल-मूत्र त्याग प्रेरक

⇒ नींद भी दो प्रकार की होती है-

(A) तीव्र आँख गतिक

(B) अतीव्र आँख गतिक

Scanned by CamScanner

अर्जित प्रेरक :-

1. अनुमोदन प्रेरक - क्राउनी व मार्लो
2. संबंध प्रेरक - कारपेंटर, स्कैप्टर - यह प्रेरक 13-15 वर्ष में अधिक प्रबल होता है
3. आक्रामकता - डोलार्ड
4. शक्ति / सत्ता - फ्रिंज / बुस्सी

5. उपलब्धि प्रेरक :-

अध्ययन - 1961 में मैक्लिलैण्ड व एटकिंसन ने
⇒ चुनौतीपूर्ण व कठिन परिस्थितियों में सफलता प्राप्त करने की इच्छा उपलब्धि प्रेरक कहलाता है।

उपलब्धि प्रेरक से प्रेरित बालक की विशेषतायें :-

1. जोखिम उठाने की योग्यता होती है।
2. आकांक्षा का स्तर ऊँचा होता है।
3. कार्य में निरन्तरता बनी रहती है।
4. सफलता के प्रति चिंतित रहता है।
5. प्रतिस्पर्धा की भावना रहती है।

उपलब्धि प्रेरक के प्रभाव :-

1. परिवार का प्रभाव :-

(i) माता-पिता के स्वतंत्र व्यवहार का सर्वाधिक प्रभाव
(ii) विद्यालय का वातावरण
(iii) समाज का वातावरण - रूढ़िवाद, भाग्यवाद, परम्परायें

उपलब्धि प्रेरक के विकास में अध्यापक की भूमिका :-

(i) स्वतंत्र वातावरण उपलब्ध कराना
(ii) आत्म अनुशासन व आत्म मूल्यांकन
(iii) उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य सौंपना

Scanned by CamScanner

(iv) अच्छे उदाहरण व अभिप्रेरणा प्रदान करना

ध्यान रहे:- 1. उपलब्धि प्रेरक का मापन T.A.T. और C.I.E. परीक्षण द्वारा किया जाता है।

2. रूचि, आदत, आकांक्षा, मद व्यसन व चिंता को व्यक्तिगत अर्जित प्रेरक कहा जाता है।

थॉमसन के अनुसार प्रेरकों का वर्गीकरण :- 1. स्वाभाविक व 2. कृत्रिम

1. स्वाभाविक प्रेरक :-
- खेल, सुझाव, अनुकरण, प्रेम और सहानुभूति

2. कृत्रिम प्रेरक :- प्रशंसा, पुरस्कार, दण्ड, प्रतिस्पर्धा

गैरिट के अनुसार प्रेरकों का वर्गीकरण :-

1. जैविक प्रेरक
2. जन्मजात प्रेरक (भूख, प्यास, काम, नींद, मल-मूत्र त्याग)
3. मनोवैज्ञानिक प्रेरक - प्रेम, भय, सुख, दुख, क्रोध
4. सामाजिक प्रेरक :- जिज्ञासा, आत्मसम्मान, सामुदायिकता, रचनात्मकता, संग्रह की प्रवृत्ति।

अभिप्रेरणा के सिद्धांत :-

1. मनोविश्लेषण सिद्धांत :- फ्रायड
2. मूल प्रवृत्ति का सिद्धांत
3. उद्दीपन अनुक्रिया का सिद्धांत - थॉर्नडाइक
4. चालक न्यूनता का सिद्धांत - C.L. हल
5. आत्मसिद्धी (स्वयथार्थीकरण) - मैस्लो
6. अधिगम का क्षेत्रीय सिद्धांत
7. प्रोत्साहन का सिद्धांत

अभिप्रेरणा संघर्ष :-

1. उपागम - उपागम (Aprach-Aprach) / ग्राह्य-ग्राह्य / विधि-विधि :-
- दो सकारात्मक विचारों में होने वाला संघर्ष

Scanned by CamScanner

2. परिहार-परिहार/त्याग-त्याग/वर्जन-वर्जन :-

⇒ दो नकारात्मक विचारों में होने वाला संघर्ष परिहार-परिहार कहलाता है।

Neet-18

3. उपागम-उपागम-परिहार :-

⇒ एक सकारात्मक और एक नकारात्मक विचारों में होने वाला संघर्ष

4. बहुउपागम परिहार :-

⇒ एक से अधिक सकारात्मक व एक से अधिक विचारों में होने वाला संघर्ष बहुउपागम परिहार कहलाता है।

अधिगम में अभिप्रेरणा की भूमिका :-

1. रूचि उत्पन्न करना
2. सामूहिक कार्य
3. सफलता
4. प्रतिस्पर्धा
5. नवीनता
6. परिणाम का ज्ञान
7. प्रशंसा पुरस्कार व दण्ड का प्रयोग
8. खेल तथा मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग
9. शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग

मैलटन - "अभिप्रेरणा सीखने की अनिवार्य शर्त है।

Scanned by CamScanner

27/9/19

समायोजन

V.Imp गेट्स व अन्य:-

"समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने तथा वातावरण के मध्य संतुलन बनाये रखने के लिये व्यवहार में परिवर्तन करता है।"

बौरिंग और शेफर :- "समायोजन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं तथा उनको बनाये रखने वाली परिस्थितियों में संतुलन कायम रखता है।"

स्कीनर- "समायोजन एक अधिगम प्रक्रिया है।"

क्रोलमैन :- "समायोजन तनाव के साथ व्यवहार करने तथा वातावरण के साथ सम्बन्ध बनाने का प्रयास है।"

समायोजन की प्रकृति :-

1. समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
2. शारीरिक व मानसिक संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया है
3. समायोजन मनोवैज्ञानिक व शारीरिक दोनों रूपों में होता है।
4. समायोजन वातावरण तथा व्यवहार दोनों में परिवर्तन करता है।
5. समायोजन मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित है।
6. समायोजन बहुआयामी होता है। जैसे- शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, व्यावसायिक, घरेलू व लैंगिक समायोजन।

समायोजन तीन प्रकार का होता है-

1. रचनात्मक
2. मानसिक मनोस्थना
3. स्थानापन्न

Scanned by CamScanner

समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक :-

(1) भग्नाशा / कुण्ठा :-

गुड़ - "किसी इच्छा की पूर्ति में बाधा आने से उत्पन्न संवेगात्मक तनाव भग्नाशा कहलाता है।"

भग्नाशा के प्रकार :- 1. आंतरिक भग्नाशा और 2. बाह्य भग्नाशा

→ आंतरिक में स्वयं जिम्मेदार हैं और बाह्य में कोई भी कारक हो सकता है।

1. आंतरिक कारक :-

(i) मानसिक संघर्ष (सबसे बड़ा कारक)
(ii) विरोधी इच्छायें
(iii) असंगत आवश्यकता
(iv) शारीरिक दोष
(v) नैतिक आदर्श

2. बाह्य कारक :-

(i) भौतिक वातावरण जैसे- बाढ़, भूकम्प, सुनामी
(ii) सामाजिक नियम - परम्परायें
(iii) आर्थिक कारक
(iv) अन्य व्यक्ति

भग्नाशा की स्थिति में मनुष्य का व्यवहार -

1. एकांतवासी बन जाता है।
2. आक्रमणकारी बन सकता है।
3. रोगग्रस्त हो जाता है।
4. आत्मसमर्पण भी कर सकता है।

विशेष :- भग्नाशा का मापन रोजविग ने किया था।

तनाव :-

गेट्स व अन्य के अनुसार - "तनाव असन्तुलन की स्थिति है जो व्यक्ति को उत्तेजित दशा का अंत करने के लिये प्रेरित करती है।"

दुश्चिंता :- जब व्यक्ति-चेतन तथा अचेतन मन से उत्पन्न संघर्ष से अपने व्यक्तित्व की रक्षा नहीं कर पाता है तो वह दुश्चिंता का शिकार हो जाता है।"

दबाव :- स्ट्रेस (Stress) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Stringer शब्द से हुई है जिसका मतलब कसना होता है।

Scanned by CamScanner

(1) सकारात्मक और (2) नकारात्मक

दबाव के अन्य प्रकार -

(i) भौतिक दबाव, (ii) सामाजिक दबाव (iii) मनोवैज्ञानिक दबाव

दबाव को दूर करने की तकनीक -

फ्रॉकमैन लाजारस ने दबाव को दूर करने की दो तकनीक बताई हैं -

(i) समस्या केंद्रित और (ii) संवेग केंद्रित

द्वंद्व / संघर्ष :-

डगलस हॉलैण्ड के अनुसार - " दो विरोधी विचार या विरोधी उद्देश्य के विजयसे उत्पन्न होने वाली कष्टदायक संवेगात्मक दशा द्वन्द्व कहलाती है।"

शैफर के अनुसार - " संघर्ष या द्वंद्व वह स्थिति है जब दो ऐसी इच्छायें उत्पन्न हो जाती हैं जिनकी पूर्ति एकसाथ सम्भव नहीं होती है।"

समायोजन स्थापित करने की विधियाँ :-

I प्रत्यक्ष विधि :-

(i) बाधा का विनाश

(ii) अन्य उपाय की खोज

(iii) लक्ष्य का प्रतिस्थापन

(iv) व्याख्या करके निर्णय लेना

II समायोजन स्थापित करने की अप्रत्यक्ष विधियाँ / मानसिक मनोरचना / रक्षा युक्तियाँ :-

1. प्राथमिक विधि :-

(i) युक्तिकरण / औचित्यस्थापन / परिमेयकरण / तार्किकरण :-

⇒ अपनी असफलता के बाद कोई भी तर्कसंगत बहाना बनाकर उसका औचित्य स्थापित करना युक्तिकरण कहलाता है।

जैसे :- फेल होने के बाद परिणाम के समय घरवालों से बहाना बनाना कि पेपर ही out of syllabus आया था।

Scanned by CamScanner

(ii) दमन :- दुःखदाई विचार या घटना को अचेतन मन में दबा देना।

(iii) शमन :- दुःखदाई घटना को जबरदस्ती या बलपूर्वक अचेतन मन में दबा देना।

(iv) प्रतिगमन / प्रत्यावर्तन :-

» इस युक्ति में व्यक्ति छोटे बालक के समान व्यवहार करके समायोजन स्थापित करता है।

जैसे :- 10 साल का बालक 8 माह के बच्चे के समान व्यवहार करके समायोजन स्थापित करता है। (घुटनों के बल चलकर)

(v) रूपान्तरण :-

» इसमें व्यक्ति तनाव को शारीरिक लक्षण के रूप में बदल देता है।
जैसे- युद्ध के भय से सैनिक द्वारा बीमारी का बहाना बनाना।

Imp.
(vi) उदात्तीकरण / मार्गान्तीकरण / शोधन :-

» यह समायोजन स्थापित करने की सबसे रचनात्मक युक्ति है।
» इस युक्ति में व्यक्ति गलत विचार को सही विचार के रूप में बदल देता है।

जैसे- एक बदमाश व्यक्ति का बहुत अच्छा व्यक्ति बन जाना (तुलसीदास)

(vii) प्रतिक्रिया निर्माण :-

» मन में अन्तर्निहित इच्छा के बिल्कुल विपरीत व्यवहार करना।

जैसे- मन बनावे, मुँह हिसावे बगुला भगत
मन में राम बगल में छुरी

2. समायोजन स्थापित करने गौण विधियाँ :-

(i) क्षतिपूर्ति :-

» किसी एक कार्य की पूर्ति दूसरे कार्य के माध्यम से करना।

जैसे :- एक विकलांग बालक कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करके क्षतिपूर्ति करता है।

(ii) प्रक्षेपण :-

» अपनी कमी को दूसरों पर थोपना

जैसे :- नाच न जाने आँगन टेढ़ा

Scanned by CamScanner

(iii) आत्मीकरण :-

⇒ किसी आदर्श व्यक्ति से सामंजस्य स्थापित करना अर्थात् उसके गुणों या अवगुणों का अनुकरण शुरू कर देना।

(iv) अन्तक्षेपण :-

⇒ इसके अन्तर्गत व्यक्ति स्वयं को आदर्श व्यक्ति घोषित कर देता है।

(v) विनिवर्तित व्यवहार / विलोपन / पलायन :-

⇒ भावी असफलता से डरकर अपने-आपको अलग कर लेना।

जैसे :- परीक्षा में असफलता के भय से परीक्षा देने ही न जाना

(vi) आक्रामक व्यवहार :- ②

(A) प्रत्यक्ष आक्रामक - मूल व्यक्ति या वस्तु पर गुस्सा उतारना

(B) अप्रत्यक्ष आक्रामक - मूल व्यक्ति या वस्तु के स्थान पर दूसरे व्यक्ति या वस्तु पर गुस्सा उतारना।

जैसे :- पिता द्वारा खुद की पिटाई होने पर छोटे भाई या बहन पर गुस्सा उतारना।

(vii) नकारात्मक व्यवहार :-

⇒ नियमविरोधी या गलत व्यवहार करके अपने महत्व को साबित करना।

जैसे :- प्रतिबन्धित स्थान पर गाड़ी चलाना।

(viii) मन तरंग / कल्पना तरंग / दिवास्वप्न :-

⇒ हवाई किले बनाकर समायोजन स्थापित करना।

(ix) सहानुभूति युक्ति :-

⇒ दूसरों के सामने अपनी दुःखद स्थिति का वर्णन करना।

Scanned by CamScanner

कुसमायोजन

Imp. गेट्स व अन्य :-
"कुसमायोजन व्यक्ति तथा वातावरण के मध्य असंतुलन का उल्लेख करता है"

कुसमायोजन के प्रकार :-

1. साधारण कुसमायोजन - चोरी करना, झूठ बोलना
2. गंभीर कुसमायोजन - लम्बे समय तक मानसिक संघर्ष का समाधान नहीं कर पाना जैसे - न्यूरोसिस हिस्टीरिया
3. अत्यधिक गंभीर कुसमायोजन :- भावनात्मक पागलपन / असंतुलन

कुसमायोजित बालकों की विशेषतायें :-

- चोरी करना
- झूठ बोलना
- चिंतित रहना
- भयभीत रहना
- अकेले रहना
- किस्तर गीला करना
- अंगुली हिलाना
- अंगूठा चूसना
- गाली-गलौंच करना
- पैर हिलाना
- जल्दी जाना - देर से आना
- Home work नहीं करना

कुसमायोजन के कारण :-

1. व्यक्तिगत कारण :-
   - निम्न स्तर की बुद्धिलब्धि पाई जाती है।
   - शारीरिक रोग या दोष
   - वंशानुक्रम

2. पारीवारिक कारण :-
   - माता-पिता की मृत्यु होना
   - सौतेले माता-पिता होना
   - उपेक्षापूर्ण व्यवहार
   - आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होना
   - निर्धनता
   - माता-पिता के लडाई-झगडे

Scanned by CamScanner

3. विद्यालयी कारण :-

- कठोर अनुशासन
- अमनोवैज्ञानिक विधियाँ
- शिक्षक का पक्षतापूर्ण व्यवहार
- दोषपूर्ण पाठ्यक्रम व मूल्यांकन

4. सामाजिक वातावरण :-

- बुरी संगति
- जातिवाद
- वर्ग संघर्ष
- सामाजिक भेदभाव

कुसमायोजित बच्चों के साथ अध्यापक का व्यवहार :-

- कारणों का पता लगाकर समाधान या निदानात्मक-उपचारात्मक विधि का प्रयोग।
- सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करना
- निर्देशन व परामर्श देना, सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा देना
- व्यंग्यात्मक टिप्पणी नहीं करना।

बच्चों के प्रति माता-पिता का व्यवहार :-

1. जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति करना
2. बालक के सामने झगड़ा या वाद-विवाद न करना
3. बालक दूसरे बच्चों से तुलना नहीं करें।
4. बालक के भविष्य के बारे में ज्यादा उत्सुक न हों।

Scanned by CamScanner

28/9/2019

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के के Persona से हुई है। जिसका अर्थ होता है मुखौटा या नकाब।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ व्यक्तित्व :-

गुडवर्थ - "व्यक्तित्व वंशानुक्रम तथा वातावरण की अन्तः क्रिया का नाम है।"

Imp. आलपोर्ट - "व्यक्तित्व उन मनोदैहिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ अपूर्व समायोजन निर्धारित करता है।"

वैलेण्टाइन - "व्यक्तित्व जन्मजात और अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।"

बोरिंग - "वातावरण के साथ सामान्य तथा स्थाई समायोजन ही व्यक्तित्व है।"

मन - "व्यक्तित्व व्यवहार के तरीकों, रुचियों तथा अभिवृत्तियों का सबसे विशिष्ट संगठन है।"

अच्छे व्यक्तित्व की विशेषताएँ :-

(1) आत्मचेतना - अपने आपको जागरूक बनाये रखना।
(2) सामाजिकता - समाज में लोकप्रियता होनी चाहिये।
(3) गत्यात्मकता - NOKIA Company का Ex.
(4) उत्तम समायोजन शक्ति - जैसा माहोल है अपने आपको वैसा ही बना लेना
(5) विकास की निरन्तरता -
(6) दृढ इच्छाशक्ति.
(7) संवेगीय स्थिरता - स्थिर रहना, भावनाओं में नहीं बहना
(8) महत्वाकांक्षी - हमेशा आगे बढने की सोचते रहना

Scanned by CamScanner

व्यक्तित्व के प्रकार (सामाजिक दृष्टिकोण से):-

(1) हिप्पोक्रेटस के द्वारा:- सबसे पहले 400 ईसा पू. ④

(i) रूप - मंद / निष्क्रिय
(ii) कालापित - उदासी / निराशावादी (कुत्ते की प्रवृत्ति)
(iii) पीलापित - क्रोधी स्वभाव वाले व्यक्ति
(iv) रक्त - आशावादी उल्लास से युक्त

(2) चरक संहिता के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार :- ③

(i) वात (ii) पित्त (iii) कफ

(3) वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार:- ③

(i) सतोगुणी (ii) रजोगुणी (iii) तमोगुणी

शारीरिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार :-

Imp.

(1) क्रेन्चमर के अनुसार :- ④

अपनी पुस्तक "फिजिक & करेक्टर" में व्यक्तित्व के चार प्रकार बताये -

(i) सुडोलकाय / एथलेटिक प्रकार ⇒ संतुलित शरीर, आत्मविश्वासी व समायोजित

(ii) लम्बाकार / कृशकाय / सिजोआइड ⇒ अत्यधिक दुबले-पतले, निराशावादी व चिंतित

(iii) गोलाकाय / स्थूलकाय / साइक्लोआइड ⇒ गोलमटोल, मिलनसार, रंगीन के शौकीन

(iv) विशालकाय / डिसप्लास्टिक

2. शेलडन के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार :-

(i) लम्बाकृति / एक्टोमार्फी / सेरीब्रोटोनिया
(ii) आयताकृति / मेसोमार्फी / सोमेटोनिया
(iii) गोलाकृति / एण्डोमार्फी / विसरोटोनिया

Scanned by CamScanner

समाजशास्त्रीय आधार पर व्यक्तित्व के प्रकार :-

1. स्प्रेंगर के अनुसार :-

(i) सैद्धांतिक → जैसे- पत्रकार, लेखक, दार्शनिक

(ii) आर्थिक व्यक्तित्व :- व्यापारी, दुकानदार, उद्योगपति

(iii) सामाजिक :- अध्यापक व सामाजिक कार्यकर्ता

(iv) राजनैतिक व्यक्तित्व :- नेता

(v) धार्मिक व्यक्तित्व :- संत-महात्मा

(vi) सौंदर्यात्मक व्यक्तित्व :- कलाकार, अभिनेता, चित्रकार, मूर्तिकार

Imp

मनोवैज्ञानिक आधार पर व्यक्तित्व के प्रकार :- (2) युंग

अंतर्मुखी	बहिर्मुखी
- ये आत्मकेंद्रित होते हैं।	- ये दूसरों पर केंद्रित होते हैं।
- ये मितभाषी (कम बोलना) होते हैं।	- ये वाचाल होते हैं।
- एकांतवासी	- समूह में रहने वाले
- इनके मित्र कम होते हैं।	- इनके मित्र अधिक होते हैं।
- इनमें सामाजिकता का अभाव पाया	- ये अत्यधिक सामाजिक होते हैं।
- ये शर्मीले स्वभाव के होते हैं।	- इनमें शर्मीलेपन का अभाव पाया जाता है।
- ये निराशावादी होते हैं।	- ये आशावादी होते हैं।
- ये लेखनप्रधान व विचारप्रधान होते हैं	- ये कार्य व भाषण प्रधान होते हैं।
- ये आध्यात्मिक व साहित्यिक होते हैं।	- इनकी रुचि समाज व राजनीति में होती है।
- ये अध्ययन में विशेष योग्यता रखते हैं	- ये सामान्य होते हैं।
- इनकी मानसिक शक्तियों का विकास विशेष रूप से होता है।	- इनका सामान्य रूप से
- इनमें मनोविनोदी का अभाव पाया जाता है	- ये मनोविनोदी (हँसी-मजाक) होते हैं।
- इनकी समायोजन शक्ति कमजोर पाई जाती है	- इनकी उत्तम समायोजन शक्ति होती है।
जैसे- दार्शनिक, वैज्ञानिक, लेखक	राजनेता, अध्यापक, सभी कलाकार

Scanned by CamScanner

उभयमुखी :- अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी का मिश्रित रूप

आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार :- मॉर्गन व ग्लीलैण्ड

1. भावुक :- प्रसन्नचित
2. कर्मशील :- कलाकार व खिलाड़ी
3. विचारशील :- थॉर्नडाइक ने कल्पना के आधार पर इनके तीन प्रकार बताये -

(i) सूक्ष्म विचारक
(ii) स्थूल विचारक
(iii) प्रत्यक्ष विचारक

व्यक्तित्व का A और B प्रकार :- फ्रीमैन व रोजर ने दिया

C प्रकार - मौरिस ने

D प्रकार - डैमोलेट (अवसादग्रस्त)

H प्रकार - कोबासा (ये कठोर होते हैं)

T प्रकार - फ्रैंकले (ये सृजनात्मक होते हैं)

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक

1. वंशानुक्रम
2. वातावरण - (i) भौतिक (ii) सामाजिक (iii) सांस्कृतिक वातावरण

विशेष :- (i) रूथ बेंटिक्ट और मार्गरिड मिड ने सेमोआ जनजाति पर अध्ययन किया था।

(ii) एडलर के अनुसार मध्यम जन्मक्रम के व्यक्ति का व्यक्तित्व सबसे संतुलित होता है।

3. अन्तःस्रावी ग्रंथियाँ -

एड्रीनल ग्रंथि - संवेगात्मक विकास को प्रभावित करती है।
थॉयराइड ग्रंथि - मानसिक विकास को
एस्ट्रोजन - महिलाओं में लैंगिक विकास को
टेस्टास्टेरोन - पुरुषों में लैंगिक विकास को

Scanned by CamScanner

④ स्नायुमण्डल :- यह मानसिक विकास को प्रभावित करता है।
⑤ शारीरिक संरचना और स्वास्थ्य का व्यक्तित्व पर प्रभाव :- पड़ता है।
⑥ व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारक :-
रूचि, आदतें, आकांक्षा और मूल प्रवृत्तियाँ

एम्बीडेक्ट्रस - ये दोनों हाथों का एकसाथ प्रयोग करने वाले व्यक्ति होते हैं।

व्यक्तित्व मापन की विधियाँ

I आत्मनिष्ठ विधियाँ :-

(1) आत्मनिरीक्षण विधि :- खुद का निरीक्षण खुद के द्वारा करना। (वि. वुण्ट ने दी)

(2) व्यक्ति इतिहास विधि / केस स्टडी :- टाईडमैन

→ इस विधि द्वारा विशिष्ट बालक जैसे :- बाल अपराधी, मंदबुद्धी, प्रतिभाशाली तथा सृजनात्मक बालकों के व्यक्तित्व का गहन अध्ययन किया जाता है।

(3) प्रश्नावली विधि :- सुकरात
- इसका मनोविज्ञान में प्रयोग वुडवर्थ ने किया

यह चार प्रकार की होती है -
(i) खुली प्रश्नावली (iii) मिश्रित प्रश्नावली
(ii) बन्द प्रश्नावली (iv) चित्रित प्रश्नावली

④ साक्षात्कार विधि :-
→ आमने - सामने बैठकर विचारों का आदान-प्रदान करना साक्षात्कार विधि कहलाती है।
→ यह दो प्रकार की होती है -
(i) संरचित (औपचारिक)
(ii) असंरचित (अनौपचारिक)

वस्तुनिष्ठ विधियाँ

① निरीक्षण विधि :-
(i) सहभागी - साथ में रहकर निरीक्षण करना
(ii) असहभागी - दूर से निरीक्षण
(iii) स्वाभाविक - इसमें जिसका निरीक्षण किया जाता है उसे पता नहीं रहता है।

Scanned by CamScanner

- यह विधि छोटे बालक और पागल व्यक्ति का निरीक्षण करने की सर्वश्रेष्ठ विधि है।

② समाजमिति विधि:- J.L. मोरेनो

⇒ किसी समूह की संरचना का अध्ययन करके श्रेष्ठ व्यक्तित्व का पता लगाया जाता है।

③ रेटिंग स्केल :- फ्रांसिस गाल्टन

④ परिस्थिति परीक्षण

⑤ शारीरिक परीक्षण विधि - इसमें वैज्ञानिक विधियों द्वारा मापन किया जाता है।

प्रक्षेपी विधियाँ - फ्रायड

अचेतन - प्रक्षे० प्रक्षेपी विधियों द्वारा अचेतन मन में दबी हुई दमित इच्छाओं का अध्ययन किया जाता है।

① I.B.T. (Ink Block Test) स्याही-धब्बा परीक्षण :-

प्रतिपादक - हरमन रोर्शा, 1921 में

10 कार्ड - 5 काले व सफेद + 5 विविध रंग

⇒ इस परीक्षण में चार बिन्दुओं के आधार पर व्यक्तित्व का मापन किया जाता है।

(i) स्थिति (iii) मौलिकता
(ii) विषयवस्तु (iv) निर्धारण

⇒ यह परीक्षण छोटे बच्चों के लिये उपयोगी नहीं होता।

② C.A.T. (~~Thematic~~ Child Apprecepatation Test) ~~प्रासंगिक~~ बालक अन्तर्बोध परीक्षण :-

प्रतिपादक :- लियोपोर्ड बैलक, 1948
3-10 वर्ष तक के बच्चों के लिये
10 कार्ड होते हैं।

भारत में अनुवाद - डॉ० उमा चौधरी ने 1960 में
विकास - डॉ. अर्नेस्ट क्रिस - 1951

③ T.A.T. (Thematic Appecepatation Test) प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण :-

प्रतिपादक - मॉर्गन मुर्रे (U.S.A.) - 1935

कार्ड - 30 + 1

10 Male 10 Male + Female
10 Fmale 1 खाली

Scanned by CamScanner

* यह परीक्षण 14 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों के लिये उपयोगी होता है।
* भारत में इसे उमा चौधरी लेकर आई।
* एक बार में 19+1 कार्डों का प्रयोग होता है।
* इस परीक्षण का प्रयोग बालक की आवश्यकताओं, समायोजन शक्ति, संबंध तथा अभिवृद्धि का मापन करने में किया जाता है।

④ F.W.A.T. (स्वतंत्र शब्द साहचर्य परीक्षण):-

प्रतिपादक :- फ्रांसिस गाल्टन - 1879

* इसने 75 शब्दों के आधार पर
* युंग व फ्रायड़ ने इसका विकास किया 1904 में, वर्तमान में 100 शब्द हैं।

⑤ S.C.T. वाक्यपूर्ति परीक्षण:-

प्रतिपादन - पायने व ट्रेण्डलर के द्वारा - 1930 में

- इसमें 40 अधूरे वाक्य होते हैं।
- विश्व में सबसे पहले प्रयोग - हर्बिगहास के द्वारा
- भारत में प्रयोग विश्वनाथ मुखर्जी के द्वारा

⑥ S.A.T. (प्रौढ़ बोध परीक्षण):-

प्रतिपादक - लियोपोर्ड बैसक

कार्डों की संख्या - 16

उपयोगी - 50 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों के लिये

⑦ मनोनाटकीय विधि - J.L. मोरेनो

⑧ मोजेक परीक्षण -

⑨ चित्र कहानी परीक्षण - स्टीनमैन, 22 चित्र

⑩ घर-पेड़ व्यक्ति परीक्षण - बक

⑪ आत्मबोध परीक्षण - राबर्ट 1927

⑫ तस्वीर कुण्ठा परीक्षण - रोजनविग - 24 चित्र होते हैं।

⑬ सन्जोदी परीक्षण - संजोदी - इसमें 48 फोटोग्राफ होते हैं उनको व्यवस्थित करना पड़ता है।

Scanned by CamScanner

⑭ मनोविश्लेषण विधि :- फ्रायड़

(i) स्वतंत्र साहचर्य विधि

(ii) स्वप्न विश्लेषण विधि

(iii) शब्दों का मिलान

व्यक्तित्व के सिद्धांत

(1) मनोविश्लेषणवाद :- जनक - फ्रायड़

(A) आकारात्मक मॉडल :-

(i) चेतन मन :- कुल मन का 1/10 भाग

→ इसका सम्बन्ध वर्तमान, वास्तविकता, सामाजिकता व नैतिकता से होता है।

→ इसकी तुलना बर्फ के ऊपरी भाग से की गई है।

(ii) अर्द्धचेतन / अवचेतन मन :-

→ न तो चेतन और न ही अचेतन। जैसे किसी को वस्तु देकर भूल जाना।

(iii) अचेतन मन :-

→ यह कुल मन का 9/10 भाग होता है।

→ इसका सम्बन्ध अनैतिक, असामाजिक तथा दमित इच्छाओं से होता है।

→ यह कुल मन का सबसे बड़ा भाग होता है।

→ सबसे अधिक प्रभावित करने वाला होता है।

→ इसका सम्बन्ध स्वप्न से होता है।
जैसे - नींद में बड़बड़ाना

→ यह गत्यात्मक तथा झूठा मन है।

(B) संरचनात्मक मॉडल :-

(i) Id / इदम् / उपाह :-

→ यह अचेतन मन का स्वामी, दमित इच्छाओं का भण्डार, प्राकृतिक वातावरण से उत्पन्न मूल प्रवृत्तियों का केंद्र।

→ आनन्ददायी सिद्धांत से संचालित जन्म के साथ उत्पन्न Id

Scanned by CamScanner

(ii) Ego/अहम् :- चेतन मन का स्वामी, वास्तविकता के सिद्धांत से संचालित, व्यक्ति की कार्यपालक शाखा, मनोवैज्ञानिक वातावरण से उत्पन्न, बुद्धि तथा तर्क से कार्य करता है।

* यह 2-3 साल के मध्य उत्पन्न होता है।

(iii) Super Ego/परम् अहम् :-

* सामाजिकता व नैतिकता रूपी वादी मूल्यों से संचालित,
* सामाजिक वातावरण से उत्पन्न
* Id तथा Ego के दबाव का कार्य करता है
* यह भगवान का प्रतीक होता है।

(C) सहवर्ती इच्छा :- प्रेम करना, बदले में प्रेम पाना

(D) गतिकी मॉडल :-

(i) मूल प्रवृत्ति - इरोस - जीवन - रचनात्मक कार्य
थेनाटोस - मृत्यु - आक्रमणकारी कार्य

विशेष :- फ्रायड़ ने लिबिडो (काम प्रवृत्ति) को जीवन मूल्य का आधार माना है।

(E) गतिकी मॉडल :-

चिन्ता :-

(i) वास्तविक चिन्ता
(ii) तांत्रिका तापी चिंता - Id को Ego से डर
(iii) नैतिक चिंता - Super Ego से दण्डित होने का भय

अहं रक्षात्मक प्रक्रम :-

* इसमें फ्रायड़ ने व्यक्तित्व की रक्षा करने वाली अप्रत्यक्ष विधियों का उल्लेख किया है।

Scanned by CamScanner

मनोलैंगिक विकास की अवस्थायें

(1) मुखावस्था (oral stage) :- 0-1 वर्ष

(i) चूसण - 0-6 माह तथा (ii) दशन 7-12 माह

(2) गुदावस्था :-

Anal - 2-3 वर्ष

- मल-मूत्र क्रियाओं में आनन्द लेता है।
- इन क्रियाओं के कम करने पर - धारणात्मक
- ज्यादा करने पर - क्षोभात्मक

(3) लिंगप्रधान :- 4-5 वर्ष

(i) आडिपस - माता के प्रति प्रेम (लड़कों में पाई जाने वाली)

(ii) इलेक्ट्रा - लड़की का पिता के प्रति प्रेम (लड़कियों में पाई जाती है)

विशेष :- लिंग के प्रति ईर्ष्या का भाव पाया जाता है।

(4) अव्यक्त अवस्था :- 6-12 वर्ष

* इस अवस्था में बालक काम क्रियायें नहीं करेगा

(5) जननेन्द्रियावस्था :- 13 वर्ष....

(i) समलिंगी - लड़का लड़के से प्यार

(ii) विषमलिंगी - लड़की का लड़के से प्यार

विशेष :- सिगमण्ड फ्रायड ने बाल्यावस्था के अनुभव व अचेतन अभिप्रेरणा पर अधिक बल दिया है।

Scanned by CamScanner

नवमनोविश्लेषणवाद

(1) कार्ल युंग - विश्लेषणात्मक सम्प्रदाय की स्थापना - 1913 में की थी।
- चेतन - अचेतन पर बल दिया।
कार्ल युंग ने व्यक्तित्व के 5 प्रकार बताये -
(i) परसोना
(ii) आत्म (हिपो आर्किटाईप)
(iii) एनिमा (फादर आर्किटाईप)
(iv) छाया प्रतिरूप - शैडो
(v) एनिमस (मदर आर्किटाइप)

(2) एडलर -
- वैयक्तिक मनोवैज्ञानिक
- व्यक्तित्व की एकता
- जीवनशैली
- पुरुषोचित विरोध
- हीनता मनोवृत्ति - बाल्यावस्था में उत्पन्न (अपराधबोध की वजह से उत्पन्न होती है।

(3) केरेन हार्नी -
» इसने महिलाओं की हीनता का विरोध किया तथा आशावादी दृष्टिकोण पर बल दिया।

(4) इरिक फ्रोम :-
» मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानते हुये सामाजिक कारकों पर बल दिया।

(5) सुलीवान :- अन्तः वैयक्तिक उपागम दिया
- पारस्परिक सम्बन्धों को महत्वपूर्ण माना

Scanned by CamScanner

③ विशेषक उपागम / शीलगुण उपागम :-

प्रतिपादक- आलपोर्ट व कैटल

(i) आलपोर्ट :-

* आलपोर्ट ने भावविभात्मक उपागम का उल्लेख करते हुये व्यक्तित्व में तीन प्रकार के गुणों का उल्लेख किया है।

(A) कार्डिनल :- जो महान व्यक्तियों में पाया ही जाता है। (सत्य)

(B) केंद्रीय :- यह सभी में पाया जाता है कम या ज्यादा (सामाजिक आत्मविश्वास)

(C) गौण :- विशेष तरीके से बोलना, बैठना, उठना, चलना, खाना आदि।

विशेष :- कार्यात्मक स्वायत्तता व प्रेपियम जैसे विरोधी गुणों का उपयोग किया।

(ii) कैटल :-

कैटल के अनुसार सामान्य व्यक्ति में 23 गुण

असामान्य में 12 गुण

प्रधान व्यक्ति में 16 P.F.

④ सामाजिक संज्ञानात्मक उपागम

- अलबर्ट बाण्डुरा
- वाल्टर
- सैलिगमेन

- इन्होंने अनुकरण को सबसे महत्वपूर्ण माना है।

⑤ मानवतावादी :- मैस्लो - आत्मसिद्धि

⑥ स्वप्रत्यय / सांवृत्तिक उपागम-

घटनाशास्त्र - कार्ल रोजर्स

- स्वयं तथा दूसरों की अनुभूतियों का अध्ययन करना सामर्थ्य कहलाता है।

⑦ विभिन्न उपागम-

(i) आईजेन्क :- इसने त्रिआयाम दिये हैं।

Scanned by CamScanner

(A) अन्तर्मुखी बनाम बहिर्मुखी
(B) भावात्मक स्थिरता बनाम अस्थिरता
(C) मनस्तापी (अवसाद)

(ii) पाल कोस्टा / रॉबर्ट मैक्रे :- पंचकारक मॉडल
इसके पाँच नाम हैं-
(A) अनुभवों का खुलापन
(B) बहिर्मुखता
(C) सहमतिशीलता
(D) अंतः विवेकशीलता
(E) तंत्रिका तापिता

(8) जीवन अवधि उपागम
प्रतिपादक - इरिक- इरिक्सन
> पूरी जिन्दगी भर व्यक्तित्व का विकास

(9) संज्ञानात्मक उपागम
प्रतिपादक - कैटी / कुर्त लेविन
> यह उपागम इस बात पर बल देता है कि हम वातावरण का प्रत्यक्षीकरण कैसे करते हैं तथा समस्याओं का समाधान कैसे करते हैं।

(10) माँग सिद्धांत
प्रतिपादक - हेनरी मुर्रे
> इनके अनुसार 40 माँगों से व्यक्तित्व प्रभावित होता है।

(11) शरीर गठनात्मक उपागम
> यह उपागम विलियम जेम्स, क्रेशमर व शेल्डन ने दिया था।

विशेष:- व्यक्तित्व आविष्कारिका :- यह व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष तथा विशेष गुणों का मापन करता है।

(1) - 1918 में वुडवर्थ ने दिया, 116 प्रश्न थे
> यह सैनिकों की संवेगात्मक अस्थिरता का मापन करता है।

(ii) MMPI (मिनीसोटा बहुपक्षीय व्यक्तित्व आविष्कारिका :-
प्रतिपादक - हाथवे व मैकिन्ले, 1940 में संशोधन-1943

Scanned by CamScanner

⇒ 16 वर्ष से अधिक आयु के बालकों का व्यक्तित्व मापन

⇒ इसमें 10 नैदानिक मापनी होती है। तथा 3 वैधता मापनी

बुद्धि

टर्मन - "बुद्धि अमूर्त विचारों को सोचने की योग्यता है।"

बकिंघम - "बुद्धि सीखने की योग्यता है।"

⇐ अल्फ्रेड बिने - बुद्धि इन चारों शब्दों में निहित है-
(1) ज्ञान (2) आविष्कार (3) निर्देश (4) आलोचना

⇐ वेक्सलर - बुद्धि एक सार्वजनिक योग्यता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है व समायोजन स्थापित करता है।

स्टर्नबर्ग - "बुद्धि विभिन्न वस्तु तथा विचारों के मध्य जटिल सम्बन्धों को समझने की योग्यता है।"

कॉलसेनिक - "बुद्धि विभिन्न योग्यताओं का योग है।"

बुद्धि की प्रकृति/विशेषतायें :-

(1) बुद्धि एक जन्मजात शक्ति है।

(2) बुद्धि का अधिकतम विकास जन्म से लेकर मध्य किशोरावस्था तक (14-16 वर्ष स्पीयरमैन) हो जाता है।

(3) बुद्धि वंशानुक्रम तथा वातावरण का परिणाम होती है।

(4) बुद्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पड़ता

(5) बुद्धि समस्या समाधान, समायोजन तथा चिंतन करने की योग्यता है।

विशेष - बुद्धि ज्ञान नहीं है, बुद्धि प्रतिभा नहीं है, बुद्धि स्मृति नहीं है, बुद्धि कौशल नहीं है।

Scanned by CamScanner

बुद्धि के प्रकार :- थॉर्नडाइक ने 1920 में बुद्धि के तीन प्रकार बताये जिनका समर्थन गैरेट ने किया था-

(1) मूर्त / गामक / यांत्रिक / व्यावहारिक / स्थूल बुद्धि ।
(2) अमूर्त / सूक्ष्म / सैद्धांतिक बुद्धि
(3) सामाजिक बुद्धि

(1) मूर्त बुद्धि :-

➢ इस बुद्धि का सम्बन्ध हस्तकला तथा मशीनों से है।
जैसे :- इंजीनियर मैकेनिक औद्योगिक कार्यकर्ता कारीगर कम्प्यूटर ऑपरेटर आदि।

(2) अमूर्त बुद्धि :-

➢ इस बुद्धि का सम्बन्ध शब्द, संकेतों, प्रतिमा, प्रतीक, सूत्रों तथा पुस्तकीय ज्ञान से है।
जैसे- वैज्ञानिक, लेखक, दार्शनिक, गणितज्ञ, पेंटर, साहित्यकार, डिजाइनर आदि।

(3) सामाजिक बुद्धि :-

➢ वह बुद्धि जिसमें व्यक्ति को समाज तथा वातावरण के साथ सम्बन्धों को महत्वपूर्ण माना जाता है।

Imp बुद्धि के सिद्धांत

(1) बुद्धि का एकखण्ड / एक तत्व सिद्धांत :-

➢ यह सिद्धांत अल्फ्रेड बिने के द्वारा दिया गया, थर्मन व स्टर्न इसके सहयोगी थे।
➢ इस सिद्धांत को अखण्ड व निरंकुश सिद्धांत भी कहा जाता है।

(2) बुद्धि का द्विकारक सिद्धांत (स्पीयरमैन-1904) :-

इस सिद्धांत के द्वारा स्पीयरमैन ने बुद्धि के दो कारक बताये-

G
(सामान्य बुद्धि)
- यह सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करती है।
- जन्मजात होती है।
- अपरिवर्तनशील होती है।

S
(विशिष्ट बुद्धि)
- जैसे- संगीत, नृत्य
- यह अर्जित होती है।
- इसे विकसित किया जा सकता है।

Scanned by CamScanner

(3) स्पीयरमैन ने 1911 में इस सिद्धांत में तीसरा सिद्धांत सामूहिक खण्ड के नाम से जोड़ दिया। तब इस सिद्धांत को त्रिकारक सिद्धांत के नाम से जाना गया।

बुद्धि का बहुकारक सिद्धांत :-

बुद्धि का यह सिद्धांत थॉर्नडाइक ने दिया था-

(i) यह बुद्धि में कोई G व S कारक नहीं मानता
(ii) सांख्यिक योग्यता
(iii) शाब्दिक योग्यता
(iv) तार्किक योग्यता
(v) दिशा योग्यता
(vi) स्मृति योग्यता

थॉर्नडाइक ने बुद्धि में चार गुण बताये-
(i) स्तर
(ii) विस्तार
(iii) क्षेत्र
(iv) गति

» इस सिद्धांत को बालू के टीले का सिद्धांत, परमाणुवादी सिद्धांत या अंसतालक सिद्धांत कहा गया।

(4) बुद्धि का समूहकारक सिद्धांत :-

» बुद्धि का यह सिद्धांत थर्स्टन ने 1938 में दिया
Book - प्राथमिक मानसिक योग्यता
थर्स्टन ने बुद्धि की निम्नलिखित योग्यतायें बताई-

(i) शब्द अर्थ योग्यता
(ii) शब्द वाक् योग्यता
(iii) सांख्यिक योग्यता
(iv) तार्किक योग्यता
(v) स्मृति योग्यता
(vi) स्थानिक योग्यता
(vii) प्रत्यक्षीकरण योग्यता

(5) मात्रा सिद्धांत (थॉर्नडाइक) :- स्नायुतन्तु

(6) प्रतिमान / प्रतिदर्श :- प्रतिपादक - थॉमसन
» बुद्धि में सभी मानसिक योग्यताओं का अंश पाया जाता है।

(7) G.F/G.C. (तरल / गैस) सिद्धांत :- कैटल व हॉर्न ने - 1963 में
तरल - सामान्य बुद्धि
गैस - विशिष्ट बुद्धि के समान

Scanned by CamScanner

⑧ बुद्धि का A, B, C सिद्धांत :- हैब ने दिया

G - वंशानुक्रम (A) S - वातावरण (B) - परीक्षण प्राप्तांक (C)

⑨ Imp बुद्धि का पदानुक्रमिक महत्व :- बुद्धि का यह सिद्धांत सिरिल बर्ट वर्नन ने दिया

G सामान्य

(i) V.ed शाब्दिक / शैक्षिक

(ii) K.M. ज्ञानात्मक / यांत्रिक

(iii) विशिष्ट योग्यता

⑩ बुद्धि का त्रिआयामी सिद्धांत / S.O.I. (संरचना बुद्धि का)

प्रतिपादक - गिलफोर्ड - 1967

(i) संक्रिया / प्रक्रिया / Process :-

(A) संज्ञान - समझना
(B) स्मृति - लेखन
(C) स्मृति - धारण
(D) अभिसारी चिंतन
(E) अपसारी चिंतन
(F) मूल्यांकन

(ii) विषयवस्तु - सूचनायें

(A) दृष्टि
(B) श्रवण
(C) आकारात्मक (शाब्दिक)
(D) सांकेतिक
(E) व्यावहारिक

(iii) उत्पादन आयाम / परिणाम :-

(A) इकाई
(B) वर्ग
(C) सम्बन्ध
(D) विधियाँ
(E) रूपांतरण
(F) आशय / निहितार्थ

विशेष :- इसने प्रारम्भिक रूप से बुद्धि के 120 कारक बताये
- वर्तमान में 180 कारक हैं।

Scanned by CamScanner

बहुबुद्धि सिद्धांत :- हावर्ड गार्डनर - 1983

इनकी पुस्तक - Freness of mind

1983 में 7 प्रकार बताये

1998 में 8 प्रकार

2000 में 9वाँ प्रकार बताया

① भाषात्मक शाब्दिक :-

लेखक साहित्यकार व्याख्याता

कवि वकील

② तार्किक / गणितीय :- वैज्ञानिक, गणितज्ञ तथा नोबेल पुरस्कार विजेता

③ संगीतात्मक :- वाद्ययंत्र बनाने वाले

④ स्थानिक बुद्धि :- दिशा - प्रतिमा

मूर्तिकार शतरंज के खिलाड़ी भूगोलवेत्ता आदि।

पायलट सर्वेक्षक

⑤ शारीरिक गतिक :- जैसे :- धावक, नृत्यकी, डांसर, तैराक इत्यादि।

⑥ व्यक्तिगत आत्मन बुद्धि / अन्तः व्यक्ति :- स्वयं को जानने की योग्यता। जैसे- योगी

⑦ व्यक्तिगत अन्य / अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि :-

⇒ दूसरों की योग्यता को जानने वाले। जैसे- डॉक्टर, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, राजनेता

⑧ प्राकृतिक बुद्धि :- प्रकृति के प्रति संवेदनशील

जैसे :- वनस्पति वैज्ञानिक, शिकारी, पर्यटक, किसान इत्यादि।

⑨ आस्तित्ववादी बुद्धि :- जीवन के रहस्यों को जानने की इच्छा रखने वाला

जैसे- तत्व विज्ञानी, दार्शनिक

⑪ त्रितंत्र - त्रिचापीय बुद्धि :- प्रतिपादक - स्टर्नबर्ग

(i) घटक / विश्लेषण - टुकड़ों में

(ii) अनुभव / सृजनात्मक - निर्माण

(iii) सन्दर्भ / व्यावहारिक - दैनिक जीवन की समस्या का समाधान

Scanned by CamScanner

⑫ बुद्धि का त्रिस्तर सिद्धांत :- कैरोल ने दिया

(i) सामान्य स्तर
(ii) विशिष्ट स्तर
(iii) संकीर्ण स्तर

⑬ बुद्धि का इकाई सिद्धांत :- जॉनसन तथा स्टर्न ने दिया।

⑭ सहकालिक अनुक्रमिक मॉडल :- J. P. दास - 1994
PASS Model

⑮ बुद्धि का बहुमानसिक योग्यता सिद्धांत :- कैली ने दिया

⑯ बुद्धि का CAVD सिद्धांत :- थॉर्नडाइक ने दिया

C	A	V	D
पूर्ति	आंकिक	शब्दावली	दिशा

⑰ बुद्धि का आश्चर्यजनक सिद्धांत :- ब्लूम ने दिया

> ब्लूम जी कहते हैं कि बुद्धि नाम की कोई-चीज नहीं है।

1/10/2019

बुद्धि का मापन (Imp.)

⇒ बुद्धि मापन के जन्मदाता अल्फ्रेड बिने हैं।

⇒ मानसिक शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कैटल (1890) ने किया था।

⇒ मानसिक आयु का विचार 1908 में अल्फ्रेड बिने ने दिया।

⇒ बुद्धिलब्धि का सबसे पहले सुझाव विलियम स्टर्न ने 1912 में दिया -
$\frac{MA}{CA}$ (टर्मन ने इसमें ×100 जोड़ा था) 1916 में)

शैक्षिक लब्धि का सूत्र :- $\frac{EA}{CA} \times 100$

लब्धि उपलब्धि सूत्र :- $\frac{MA}{CA} \times 100$

⇒ क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण के जन्मदाता :- सेगुइन - 1866 हैं।

Scanned by CamScanner

बेसल वर्ष:- जिस अधिकतम आयुस्तर के प्रश्नों को बालक हल ~~नहीं~~ कर लेता है तो पाता है वह उसका ~~टर्मिनल~~ बेसल वर्ष कहलाता है।

टर्मिनल वर्ष:- जिस अधिकतम आयु स्तर के प्रश्नों को बालक हल नहीं कर पाता है तो वह उसका टर्मिनल वर्ष कहलाता है।

I.Q.		प्रकार
140+	→	प्रतिभाशाली (2.20%)
120-139	→	अतिश्रेष्ठ Very Superiour (6.70%)
110-119	→	श्रेष्ठ Superiour (16.10%)
90-109	→	सामान्य/औसत (50%)
80-89	→	पिछड़ा/सीमांत
70-79	→	दुर्बल
50-69	→	अल्प/मन्द Morourne
25-49	→	मूढ/हीन
20-25	→	जड़

* सामान्य मन्दबुद्धि बालक की बुद्धि होती है- 35-50 के बीच।

बुद्धि परीक्षण के प्रकार

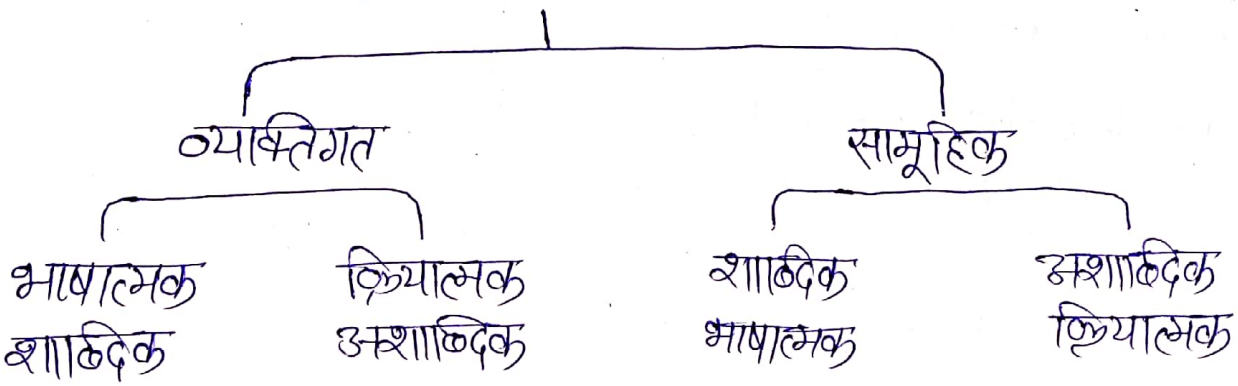

विशेष:- (1) शाब्दिक परिक्षण का प्रयोग पढ़े- लिखे लोगों की अमूर्त बुद्धि का मापन करने में किया जाता है।

Scanned by CamScanner

(2) अशाब्दिक क्रियात्मक परिक्षण का प्रयोग अनपढ़, बहरे, गूंगे, छोटे बालक तथा अलग-अलग देशों में रहने वाले लोगों की मूर्त बुद्धि का पता लगाने में किया जाता है।

व्यक्तिगत शाब्दिक परीक्षण :-

Imp. (1) बिने- साइमन परीक्षण :-

प्रतिपादक - अल्फ्रेड बिने + सहयोगी (साइमन)

कब - 1905 [1908, 11 में संशोधन]

प्रश्नों की संख्या - 30 प्रश्न थे जो वर्तमान में 59 प्रश्न हो गये

Imp. (2) स्टेनफोर्ड- बिने परीक्षण :-

प्रतिपादक - टर्मन

कब - 1916 में

प्रश्न - 90 प्रश्न

आयुस्तर - 2-22 वर्ष

(3) आवृत्ति परीक्षण :-

प्रतिपादक - टर्मन व मैरिल, 1937 में

आयु स्तर - 2-18 वर्ष

प्रश्न - नहीं थे।

विशेष :- भारत में पहला व्यक्तिगत शाब्दिक परीक्षण - C.H. राईस - 1922

⇒ हिंदुस्तान बिने परीक्षण उर्दू भाषा में बनाया गया।

व्यक्तिगत अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण

(1) पोर्टियस भूल- भुलैया परीक्षण :-

प्रतिपादक - S.D. पोर्टियस - 1924

आयु स्तर - 3-15 वर्ष

(2) कोह ब्लॉक डिजाइन क्रियात्मक परीक्षण :- S.C. कोह

(3) पास एलोंग क्रियात्मक परीक्षण :-

प्रतिपादक - अलेक्जेण्डर पास - 1932

9 एलोंग

Scanned by CamScanner

(4) घन रचना क्रियात्मक परीक्षण :-
प्रतिपादक - गा 26 घन

(5) मैरिल पारमर परीक्षण :-
आयु स्तर - 13 माह से 5½ वर्ष

(6) पिण्टर पीटरसन क्रियात्मक परीक्षण :-
1917 में 4-6 वर्ष तक

(7) भारत में व्यक्तिगत अशाब्दिक परीक्षण :-
प्रतिपादक - चन्द्रमोहन भाटिया - 1955
आयुस्तर - 11-16 वर्ष, 5 उपपरीक्षण

सामूहिक अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण

* सामूहिक परीक्षाओं की शुरुआत अमेरीका से मानी जाती है।

(1) आर्मी अल्फा परीक्षण :- ऑर्थर एस ओटिस (1917)

(2) सामान्य सेना वर्गिकरण टैस्ट :-

(3) सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण - टर्मन - 1920

विशेष :- भारत में पहला सामूहिक शाब्दिक परीक्षण J. बेनरी ने 1927 में बनाया

सामूहिक अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण

(1) आर्मी - बीटा बुद्धि परीक्षण :- ऑर्थर एस ओटिस ने 1919 में दिया।

(2) शिकागो क्रियात्मक परीक्षण :-
⇒ इसे अमेरीका की सैनिक परिषद् ने बनाया
आयु स्तर - 6 वर्ष से वयस्क होने तक

(3) संस्कृति मुक्त परीक्षण :-
आर. बी. कैटल, आयु स्तर - 4-8, 8-12 एवं उच्च स्तर

(4) रैवेन प्रोग्रेसिव मैट्रीसेज परीक्षण :- J. C. व रैवेन (1938)
रंगीन साँचे
बुद्धि के G कारक का परीक्षण करता है।

Scanned by CamScanner

सामान्य बुद्धि परीक्षण

मिश्रित परीक्षण :-

(1) बेक्सलर बुद्धि परीक्षण :- प्रतिपादक - डेविड बेक्सलर - 1939 (44, 55 में संशोधित)

आयु स्तर - 5-15 वर्ष — 7 शाब्दिक
16 - 64 वर्ष — 7 अशाब्दिक

विशेष :- भारत में पी. एन मेहरोत्रा ने 11-17 वर्ष के बच्चों के लिये मिश्रित बुद्धि परीक्षण बनाया था।

* विचलन बुद्धिलब्धि का सम्प्रत्यय - डेविड बेक्सलर ने दिया था।

संवेगात्मक बुद्धि

⇒ थॉर्नडाइक ने 1920 में सामाजिक बुद्धि का प्रकार बताया जो संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित है।

⇒ 1983 में गार्डनर ने व्यक्तिगत आत्मन् तथा व्यक्तिगत अन्य बुद्धि का उल्लेख किया जो संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित है।

⇒ संवेगात्मक बुद्धि शब्द का प्रयोग सबसे पहले 1990 में जॉन मेयर और पीटर सेलोवी (अमेरिकी) ने अपनी पुस्तक "What is E.I." में संवेगात्मक बुद्धि शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया था।

⇒ "संवेगात्मक बुद्धि तथा संवेगात्मक विकास" नामक पुस्तक भी सेलोवी ने ही लिखी।

⇒ "संवेगात्मक बुद्धि बुद्धिलब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों?" नामक पुस्तक डेनियल गोलमैन ने लिखी।

डेनियल गोलमैन - संवेगात्मक बुद्धि संवेगों को जानने, समझने तथा सम्बन्ध स्थापित करने की योग्यता है।

Scanned by CamScanner

गोलमैन ने संवेगात्मक बुद्धि के पाँच तत्व बताये हैं-

(1) आत्मचेतना/आत्मयोग्यता :-

⇒ अपने गुण व कमियों की समझ तथा अपने अन्दर की भावनाओं की समझ ही आत्मचेतना है।

(2) आत्मनियंत्रण :- अपनी भावनाओं पर नियंत्रण

(3) आत्माभिप्रेरणा :- "I Can Do It" [Heart of EQ]

(4) सहानुभूति/परानुभूति :-

⇒ दूसरों की सहायता करने वाला व्यक्ति / दूसरों के दुःख दर्द को अपना समझना।

Imp:

संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिमान

① योग्यता प्रतिमान :- प्रतिपादक- जॉन मेयर और पीटर सेलोवी

(i) संवेगों का प्रत्यक्षीकरण करने की योग्यता

(ii) विचार करके संवेगों का प्रयोग करने की योग्यता

(iii) संवेगों को समझने की योग्यता

(iv) संवेगों का प्रबंधन करने की योग्यता

② गुण प्रतिमान :- के. वी. पेट्राईडस

③ मिश्रित प्रतिमान :- डेनियल गोलमैन

⇒ इसके अनुसार संवेगात्मक बुद्धि योग्यता व गुण दोनों हैं।

संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता

1. जीवन में सफलता प्रदान करने की योग्यता
2. जीवन को सुखमय तथा शांतिप्रिय बनाना

Scanned by CamScanner

3. नेतृत्व के गुणों का विकास करना
4. समस्याओं के समाधान में
5. भविष्यवाणी करने में।
6. समायोजन स्थापित करने में
7. सम्बन्ध बनाने की योग्यता
8. आत्मविश्वास को बढ़ाने में
9. अधिगम की गति को बढ़ाने में
10. तनाव को दूर करने में
11. मूल्यांकन करने में।

विशेष:-

संवेगात्मक बुद्धि के मापन में गोलमैन, जॉन मेयर, पीटर सैलोवी, रेयुवेन बार, कीथ. फ्रिस्से और डॉ. मंगल ने योगदान दिया।

Scanned by CamScanner

1/10/19

व्यक्तिगत भिन्नतायें

व्यक्तिगत भिन्नताओं का अध्ययन सर्वप्रथम 1890 में फ्रांसिस गाल्टन ने किया था

व्यक्तिगत भिन्नताओं के प्रकार:-

1. शारीरिक भिन्नतायें
2. मानसिक भिन्नतायें
3. संवेगात्मक भिन्नतायें
4. सामाजिक भिन्नतायें
5. मनोवैज्ञानिक विन्नतायें-
6. जैसे- रुचि, आदतें, अभिवृत्ति आकांक्षा स्तर
6. व्यक्तित्व की भिन्नतायें- जैसे- अंतर्मुखी, बहिर्मुखी
7. गामक योग्यताओं में भिन्नतायें- जैसे- चलना- फिरना, दौड़ना आदि।
8. सीखने की गति में अन्तर
9. उपलब्धि में भिन्नतायें
10. लैंगिक भिन्नतायें
11. विचारों में भिन्नतायें- जैसे- राजनैतिक, धार्मिक आदि।

व्यक्तिगत भिन्नताओं को प्रभावित करने वाले कारक:-

1. वंशानुक्रम
2. वातावरण
3. लिंग का प्रभाव
4. जाति का प्रभाव
5. आयु तथा परिपक्वता का प्रभाव
6. आर्थिक स्थिति का प्रभाव
7. शिक्षा का प्रभाव

व्यक्तिगत भिन्नताओं की शिक्षा में उपयोगिता:-

1. बालकों का वर्गीकरण करने में उपयोगी
2. शिक्षण विधियों का चयन करने में उपयोगी
3. पाठ्यक्रम का निर्माण करने में उपयोगी
4. बच्चों को गृहकार्य देने में उपयोगी
5. शारीरिक दोषों के अनुसार शिक्षा प्रदान करने में उपयोगी

Scanned by CamScanner

Imp.

(1) किंडरगार्टन विधि :-

प्रतिपादक - फ्रॉबेल - 1837 - जर्मनी

➢ फ्रॉबेल ने कहा कि - " विद्यालय एक बगीचे के समान है जिसमें शिक्षक माली है तथा बच्चे पौधे हैं।

➢ यह विधि 4-8 वर्ष के बालकों के लिये उपयोगी है।

(2) मॉण्टेसरी विधि :-

प्रतिपादक - मारिया मॉण्टेसरी, आयुस्तर - 3-6 वर्ष के बालकों हेतु

➢ इस विधि के तत्त उपकरणों के माध्यम से शिक्षा दी जाती है।

➢ इसमें शिक्षा प्रदान करने के तीन तरीके हैं -

(i) भाषा की शिक्षा, (ii) कर्मेन्द्रियों की शिक्षा, (iii) ज्ञानेन्द्रियों की शिक्षा

(3) डाल्टन विधि :-

प्रतिपादक - हेलेन पार्कहर्स्ट (अमेरीका)

➢ इस विधि में बालक पर किसी भी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं होता है, बालक स्वतंत्र रूप से अध्ययन करके सीखता है।

(4) विनेटिका विधि :-

प्रतिपादक - वॉशबर्न

➢ व्यक्तिगत भिन्नताओं व सामाजिक विकासानुसार विषयवस्तु को दो-दो भागों में विभाजित करके शिक्षा प्रदान की जाती है।

(5) खेलविधि :-

प्रतिपादक - हेनरी कोलडवेल कुक → पुस्तक - "Play Way"

➢ कुक ने यह विधि अंग्रेजी शिक्षण के लिये सर्वश्रेष्ठ बताई

Scanned by CamScanner

⑥ अन्वेषण विधि :-

प्रतिपादक - आर्मस्ट्रॉंग

➢ इस विधि में बच्चा खोज ~~करके~~ सीखता है।

⑦ ड्रेकाली विधि :-

➢ इस विधि के माध्यम से मन्दबुद्धि बालकों को संगीत तथा खेल के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है।

⑧ प्रोजेक्ट अथवा योजना विधि :-

प्रतिपादक - जॉन डी.बी. किलपेट्रिक

➢ यह विधि जॉन डी. बी. के प्रयोजनवाद पर आधारित है।

विशिष्ट बालक

➢ विशिष्ट बालक चार प्रकार के होते हैं-

(1) भौतिक विशिष्ट
(2) संवेगात्मक विशिष्ट
(3) विकलांग बालक
(4) बहुविकलांग बालक

I भौतिक विशिष्ट बालक :-

सृजनात्मक बालक

स्टर्न के अनुसार :- जब किसी कार्य का परिणाम नवीन व उपयोगी हो।

स्टेगनर व कारवास्की के अनुसार :- "सृजनात्मक पूर्ण या आंशिक रूप से नवीन वस्तु का निर्माण करना है।"

गिलफोर्ड :- "सृजनात्मकता का सम्बन्ध उत्पादकता से है।"

ड्रे व डाल के अनुसार :- "सृजनात्मकता में किसी वस्तु का निर्माण निहित है जो लक्ष्यपूर्ण हो।"

Scanned by CamScanner

सृजनात्मकता की प्रकृति या स्वरूप:-

(1) सृजनात्मकता जन्मजात व अर्जित होती है।

(2) सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है।

(3) सृजनात्मकता का प्रारम्भ 6 वर्ष से होता है तथा 30 वर्ष की आयु में उच्चतम सीमा पर पहुँच जाता है।

(4) सृजनात्मकता का सम्बन्ध अपसारी चिंतन (पार्श्वचिंतन) से है।

(5) सृजनात्मकता व बुद्धि में सकारात्मकता का सम्बन्ध पाया जाता है।

विशेष:- (i) सृजनात्मकता के लिये होना आवश्यक है। अर्थात् यह देहली मॉडल है।
(ii) मंदबुद्धि बालक सृजनात्मक नहीं होता तथा प्रतिभाशाली बालक भी सृजनात्मक हो यह आवश्यक नहीं।

(6) सृजनात्मकता प्रक्रिया व परिणाम दोनों है।

(7) सृजनात्मकता एक अनुपम मानसिक क्रिया है जिसको प्रशिक्षण द्वारा विकसित किया जा सकता है।

(8) सृजनात्मकता तीन प्रकार की होती है- (i) आकस्मिक, (ii) सहज और (iii) संरचनात्मक (आने वाली पीढियों के लिये किसी वस्तु का निर्माण करना)

विशेष:- प्लेटो ने सृजनात्मकता को "दैविक प्रेरणा" कहा है।

नित्शे ने सृजनात्मकता को पागलपन कहा
कांट ने —— " —— अंतर्ज्ञान
डार्विन ने —— " —— कॉस्मिक जीवनशक्ति
बार्टलेट ने —— " —— साहसिक चिंतन
स्टेन ने —— " —— उत्पाद
गिलफोर्ड ने —— " —— असाधारण गुण
टॉरेन्स ने —— " —— मानसिक प्रक्रिया

Scanned by CamScanner

V. Imp. **सृजनात्मक बालकों की विशेषतायें:-**

(1) निर्माण / उत्पादकता / विधायिता / रचना करते हैं।
(2) मौलिकता / नवीनता
(3) उपयोगिता
(4) विस्तारण की योग्यता
(5) धारा प्रवाहिता
(6) लोचशीलता (समय के साथ बदलाव लाना)
(7) परिहासप्रिय
(8) कल्पनाशीलता
(9) संवेदनशीलता (सेंसेटिव/भावुक)
(10) अध्ययन में सामान्य
(11) साहसी स्वभाव
(12) कार्य में लीनता
(13) अपने गुण व कमियों की समझ
(14) उत्तम समायोजन शक्ति
(15) सौंदर्यात्मक मूल्यों की अभिव्यक्ति
(16) उत्तरदायित्व की भावना
(17) दूरदर्शिता
(18) स्पष्टवादी
(19) जिज्ञासा की प्रवृत्ति

गिलफोर्ड के अनुसार सृजनात्मकता की विशेषतायें:-

(1) ~~मौलिक~~ तात्कालिक स्थिति से परे जाने की योग्यता (केंद्रविमुखी चिंतन)
(2) समस्या को पुनः परिभाषित करने की योग्यता।
(3) विचारों में समन्वय स्थापित करने की योग्यता
(4) विचारों में रूपांतरण या परिवर्तन करने की योग्यता

Imp. Reet-2018
सृजनात्मकता का मापन

(1) **टॉरेन्स का मिनीसोटा सृजनात्मक परीक्षण (1966):-**

⇒ 6 शाब्दिक व 6 अशाब्दिक

⇒ यह परीक्षण धाराप्रवाहिता, मौलिकता, विस्तार, नवीनता व लोचशीलता का मापन करता है

Scanned by CamScanner

(2) गिलफोर्ड का मेरीफील्ड परीक्षण (1967):-

→ यह परीक्षण संवेदनशीलता, पुनः परिभाषित करने की योग्यता तथा मौलिकता का मापन करता है।

(3) रिमोट एसोसियेट परीक्षण :-

प्रतिपादक - मेडनिक (1974)

विशेष:- (i) गेटजेल, जैक्शन, वालच और कॉगन ने भी सृजनात्मकता के मापन में योगदान दिया था।

(ii) भारत में B.K. पासी ने 1972 और बाकर मेहन्दी ने 1973 में सृजनात्मकता का परीक्षण किया था

सृजनात्मकता के विकास में अध्यापक की भूमिका

(1) स्वतंत्र वातावरण उपलब्ध कराना।

(2) आत्मानुशासन व आत्ममूल्यांकन की योग्यता का विकास करना।

(3) अच्छे उदाहरण प्रस्तुत करना।

(4) अभिनव कार्यक्रमों का आयोजन करना।

Imp.

विधि:-

(1) ब्रेन स्टोरमिंग - आसबोर्न (बौद्धिक आक्रमण)

(2) सिनेटिक्स - विलियम गार्डन

(3) वैज्ञानिक पूछताछ - रिचर्ड सचमैन

(4) मुक्त प्रश्नावली - सुकरात

Scanned by CamScanner

सृजनात्मकता के सिद्धांत :-

(1) मनोविश्लेषण - फ्रायड - पूर्व-चेतना पर सृजनात्मकता निर्भर करती है।

(2) साहचर्यवाद - जॉनलॉक व रिबोट ⇒ संयोग पर सृजनात्मकता निर्भर करती है।

(3) गेस्टाल्टवाद - कोहलर, कोफ्का, वर्दीमर ⇒ सृजना. अवबोध पर निर्भर करती है।

(4) अस्तित्ववाद/संरचनावाद - विलियम वुण्ट व टिचनर ⇒ सृजनात्मकता मिलन अथवा सामंजस्य पर निर्भर करती है।

सृजनात्मकता की अवस्थायें :-

(1) आयोजन (योजना)
(2) उद्भव (चिंतन करना)
(3) प्रबोधन (समाधान नजर आता है)
(4) प्रभावीकरण/संशोधन (परिवर्तन)

सृजनात्मकता के परीक्षण :

(1) चित्रपूर्ति परीक्षण
(2) वृत्त परीक्षण
(3) टीन के डिब्बों का परीक्षण
(4) प्रोडक्ट इम्प्रूवमेण्ट टास्क

Scanned by CamScanner

मन्दबुद्धि बालक

क्रो & क्रो :- "वे बालक जिनकी बुद्धिलब्धि 70 से कम होती है, मंदबुद्धि बालक कहलाते हैं।"

» 1919 में जीन स्टार्ट ने सबसे पहले मन्दबुद्धि बालकों पर अध्ययन किया।

» विश्व में सबसे पहले मन्दबुद्धि केंद्र 1837 में सेगुई ने पेरिस में खोला था।

मंदबुद्धि बालकों की विशेषतायें :-

(1) सीमित मानसिक बौद्धिक क्षमता-
ये चिंतन, समस्या समाधान, अधिगम स्थानांतरण, अन्तःदृष्टि तथा स्मृति

(2) शारीरिक न्यूनता- विकलांग

(3) सामाजिक न्यूनता - अस्थिर

(4) संवेगात्मक न्यूनता - हँसना ही हँसना या रोना ही रोना

(5) मौलिकता का अभाव

(6) रूढिवादी व अन्धविश्वासी

(7) इनकी शब्दावली दोषपूर्ण होती है।

(8) रुचियाँ सीमित व साधारण होती हैं।

(9) इनमें सुझाव ग्रहण करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

(10) इनके अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध अच्छे होते हैं। (अधिक दोस्त)

(11) इनकी समायोजन योग्यता कमजोर होती है।

Scanned by CamScanner

मंदबुद्धि बालकों की शिक्षा:-

(1) इनके लिये विशेष विद्यालय व विशेष शिक्षक होते हैं।

(2) विशेष ही पाठ्यक्रम होता है- जैसे- शारीरिक शिक्षण, आर्थिक प्रशिक्षण (हस्तकौशल की शिक्षा), सामाजिक व नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण।

(3) अच्छी आदतों के निर्माण की शिक्षा।

(4) खेल व मनोवैज्ञानिक निदानात्मक विधियाँ।

(5) मूर्त वस्तुओं व चित्रों से शिक्षा।

Imp. **मंदबुद्धि बालकों का वर्गीकरण:-**

अमेरीकी मन्दबुद्धि एसोसियेशन के अनुसार-

(1) साधारण मन्दबुद्धि बालक:-

⇒ इनका I.Q. ~~35-51~~ होता है। 52-67/70 होता है।

⇒ आयुस्तर- 8-11 वर्ष के बच्चे के समान होते हैं।

⇒ ये शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

(2) अल्प मन्दबुद्धि बालक:-

⇒ इनका I.Q. 35-51 होता है

⇒ 4-7 वर्ष के बच्चे के समान होते हैं।

⇒ प्रशिक्षणीय श्रेणी के होते हैं।

(3) गम्भीर मन्दबुद्धि बालक:-

⇒ इनका I.Q. 20/21 — 34/35 होता है।

⇒ निर्भर- क्रियात्मक व भाषा कमजोर होती है तथा ये दूसरों पर निर्भर होते हैं।

(4) अत्यधिक गम्भीर बालक:-

⇒ इनका I.Q. 20 से कम होता है।

⇒ ये शारीरिक रूप से बहुविकलांग होते हैं।

⇒ इनकी अल्पआयु में ही मृत्यु हो जाती है।

Scanned by CamScanner

प्रतिभाशाली बालक

टर्मन व ओडेन के अनुसार :- "प्रतिभाशाली बालक शारीरिक गठन, सामाजिक समायोजन तथा विद्यालय उपलब्धि में सामान्य बालकों से बहुत श्रेष्ठ होते हैं।"

प्रतिभाशाली बालकों की विशेषतायें:-

(1) ये बालक जन्मजात ही प्रतिभाशाली होते हैं।

(2) इनकी बुद्धिलब्धि 140 या इससे अधिक होती है।

(3) इनकी मानसिक योग्यतायें उच्च स्तर की होती हैं।
जैसे:- समस्या समाधान, चिंतन, जिज्ञासा, विशाल शब्दकोष, सामान्यीकरण की योग्यता तथा अन्तःदृष्टि।

(4) सामान्य अध्ययन में रुचि रखते हैं।

(5) अपने से अधिक आयु वाले दोस्त बनाते हैं।

(6) मानवीय मूल्यों से युक्त होते हैं।

(7) इनमें नेतृत्व का गुण पाया जाता है।

(8) इनमें उत्तरदायित्व की भावना पाई जाती है।

(9) ये अध्ययन में विशेष योग्यता रखते हैं।

प्रतिभाशाली बालकों की नकारात्मक विशेषतायें:-

(1) ये बेचैन रहते हैं तथा रुचि ना होने पर लापरवाही दर्शाते हैं।

(2) ये स्वार्थी व आलोचक होते हैं।

(3) इनकी लिखावट (Hand writing) खराब होती है।

(4) ये नियम या सिद्धांतों के खिलाफ आवाज उठाते हैं।

Scanned by CamScanner

7/10/2019

प्रतिभाशाली बालकों की समस्यायें :-

(1) समायोजन की समस्या,
(2) सामाजिक विकास की समस्या,
(3) मनोवैज्ञानिक समस्या,
(4) हीनता की भावना,
(5) बुद्धि के दुरुपयोग की समस्या।

प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा :-

(1) विशाल तथा विविध पाठ्यक्रम,
(2) व्यक्तिगत निर्देशन व परामर्श
(3) विशेष शिक्षण विधि (योजना, करके सीखना + अनुसंधान)
(4) सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा,
(5) संवर्धन कार्यक्रम अथवा त्वरण गति के कार्यक्रमों का आयोजन,
(6) एक वर्ष में दो कक्षायें उत्तीर्ण करने की छूट
(7) विशेष शिक्षक नीतियाँ जैसे- निदानात्मक, उपचारात्मक तथा मनोवैज्ञानिक विधियाँ
(8) छोटे समूह में शिक्षा।
(9) प्रेम, सहयोगी एवं सकारात्मक व्यवहार।

Scanned by CamScanner

II संवेगात्मक विशिष्ट बालक

बाल अपराधी बालक

गुड़ के अनुसार:- "कोई बालक जिसका व्यवहार सामान्य व्यवहार से इतना अलग हो जाये कि उसे समाज विरोधी कहा जाने लगे, बाल अपराधी कहलाते हैं।

बाल अपराध विज्ञान के जनक:- सीजर लाम्ब्रोसो हैं।

बाल अपराधी बालकों के कार्य:-

(1) चोरी करना
(2) नशा करना
(3) जूआ खेलना
(4) हत्या करना
(5) यौन अपराध करना
(6) सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पँहुचाना
(7) बिना टिकिट यात्रा करना
(8) भगौड़ापन होना
(9) चुनौति देना
(10) कानून को तोड़ना
(11) ठगी या बेईमानी करना

बाल अपराधी बालकों की विशेषतायें:-

(1) ये बालक शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट होते हैं।
(2) इनका मन अध्ययन में नहीं लगता
(3) ये बालक जिद्दी, स्वार्थी, साहसी व बहिर्मुखी होते हैं।
(4) ये वर्तमान के आनन्द में विश्वास करते हैं भविष्य की चिंता नहीं।
(5) इनमें समाजविरोधी कार्यों की प्रवृत्ति पाई जाती है।
(6) ये समस्याओं को उचित विधि से हल नहीं करते हैं।
(7) इनकी आयु 18 वर्ष से कम होती है।

इनके बाल अपराधी बनने के कारण:-

(1) वंशानुक्रम (XYY गुणसूत्र का होना)
(2) शारीरिक रोग या दोष का होना।

Scanned by CamScanner

(3) पारिवारिक वातावरण
(4) विद्यालय का वातावरण
(5) सामाजिक वातावरण
(6) मनोवैज्ञानिक कारण- (अवरुद्ध इच्छायें, संवेगात्मक असंतुलन, निम्न बुद्धिलब्धि)

अपराधी बालक के उपचार की ~~कानून~~ मनोवैज्ञानिक विधि :-

(1) मनोविश्लेषण विधि
(2) व्यक्ति इतिहास विधि
(3) मनोनाटकीय विधि
(4) अनिर्देशित विधि (कार्ल रोजर्स)

बाल अपराधी बालक के उपचार की कानून विधि :-

(1) प्रशिक्षण
(2) बाल सुधार गृह
(3) किशोर न्यायालय
(4) किशोर बन्दीगृह
(5) बेस्टर्ल - [16-21] - व्यावसायिक/औद्योगिक
(6) सर्टिफाइड स्कूल

समस्यात्मक बालक

वेलेण्टाइन के अनुसार :- "वे बालक जिनका व्यवहार या व्यक्तित्व किसी बात में गम्भीर रूप से असमान होता है जैसे :- चोरी करना, झूठ बोलना, क्रोध करना तथा परिवार, विद्यालय, समुदाय के खिलाफ किया जाने वाला प्रत्येक कार्य

विशेष :- इनका उपचार- निदानात्मक तथा उपचारात्मक विधि का प्रयोग करके।

विकलांग बालक

(1) चक्षु विकलांग :- ब्रेल सवेकल, मोटे अक्षर की Books, उभरे हुये मॉडल, श्रव्यसहायक

(2) वाक् विकलांग :- जैसे :- हकलाना, तुतलाना
⇒ इसके लिये अभ्यास विधि का प्रयोग किया जाता है।

(3) श्रवण विकलांग :- औष्ठवाचक विधि का प्रयोग

Scanned by CamScanner

अलाभान्वित बालक :-

➢ वे बालक जो शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े होते हैं।

समावेशी शिक्षा :-

➢ यह अवधारणा सभी प्रकार के बच्चों को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने पर बल देती है।

➢ सभी प्रकार के भेदभाव से दूर तथा व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षाओं की उपलब्धता पर बल देती है।

पिछड़े बालक

सिरिल बर्ट के अनुसार :- "वे बालक जो विद्यालय जीवन के मध्य में अपने से नीचे की उस कक्षा का औसत कार्य नहीं कर पाते हैं जो उनकी आयु के बालकों के लिये सामान्य होता है।

➢ इनका शिक्षा अंक 85 से कम होता है।

ये बालक दो प्रकार के होते हैं-

(I) सामान्य पिछड़े बालक (सभी में कमजोर)

(II) विशिष्ट पिछड़े (विषय विशेष में कमजोर)

पिछड़े बालकों की विशेषतायें :-

(I) सीखने की गति धीमी होती है।

(II) मानसिक योग्यतायें सीमित होती हैं।

(iii) निराशावादी व आत्मविश्वास का भाव होता है।

(IV) सामान्य पाठ्यक्रम व सामान्य शिक्षण विधियों से सीख नहीं पाते।

(V) इनकी बुद्धिलब्धि 80-90 होती है।

(VI) इनकी शैक्षिक उपलब्धि कमजोर होती है।

(VII) समायोजन का अभाव होता है।

(VIII) इनमें समाजविरोधी कार्य करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

Scanned by CamScanner

पिछड़ेपन के कारण :-

(I) शारीरिक रोग या दोष हो सकता है।
(II) पारीवारिक कारण
(III) विद्यालय का वातावरण
(IV) निम्न बुद्धिलब्धि
(V) दोषपूर्ण सामाजिक वातावरण

पिछड़े बालकों की शिक्षा :-

(I) सरल व रुचिपूर्ण पाठ्यक्रम
(II) विशेष विद्यालय
(III) विशेष अध्यापकों के द्वारा शिक्षा
(IV) विशेष शिक्षण विधियाँ - जैसे- निदानात्मक, उपचारात्मक तथा मनोवैज्ञानिक विधियाँ
(V) छोटे समूह में शिक्षा
(VI) प्रेम सहयोगी व सकारात्मक व्यवहार
(VII) सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा

Scanned by CamScanner

7/10/19

बाल विकास

- जेम्स ड्रेवर के अनुसार :-
  "बाल मनोविज्ञान वह अध्ययन है जिसमें जन्म से लेकर मध्य परिपक्व अवस्था तक के बालक का अध्ययन किया जाता है।"

- क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :-
  "गर्भाधान से लेकर किशोरावस्था के प्रारम्भ तक का अध्ययन बालविकास कहलाता है।"

⇒ बालविकास का वैज्ञानिक अध्ययन सबसे पहले 1794 में पेस्टॉलॉजी ने किया था।

* रूसो ने अपनी पुस्तक Emile (काल्पनिक शिष्य एवं Book) में बच्चों की शिक्षा का अध्ययन किया।

* बाल अध्ययन आन्दोलन की शुरुआत अमेरीका (1893) में स्टेनलेहॉल द्वारा की गई।

2 समीति :-
(I) बाल अध्ययन समीति
(II) बाल कल्याण समीति

मगजीन / पत्रिका / Book :- पेडोलोजिकल सेमेनरी

⇒ प्रथम बाल निर्देशन केन्द्र - विलियम हिली के द्वारा 1909 में शिकागो में स्थापित किया गया।

⇒ भारत में गिजुभाई बधेका ने 1920 में बाल अध्ययन केंद्रों की स्थापना की।

बाल विकास के आयाम / क्षेत्र :-

(I) शारीरिक विकास
(II) मानसिक विकास
(III) सामाजिक विकास
(IV) नैतिक विकास
(V) संवेगात्मक विकास
(VI) भाषात्मक विकास
(VII) गामक विकास
(VIII) सौंदर्यात्मक विकास

Scanned by CamScanner

अभिवृद्धि :-

शरीर तथा उसके अवयवों में होने वाला मात्रात्मक परिवर्तन अभिवृद्धि कहलाता है।

विकास :- शरीर तथा मन में होने वाला सभी प्रकार का परिवर्तन विकास कहलाता है।

विकास में शामिल :- अभिवृद्धि + योग्यता + परिपक्वता + वातावरण + अन्तःक्रिया

हरलॉक के अनुसार :-

(I) विकास व्यक्ति में नवीन योग्यता व विशेषताओं को व्यक्त करता है।

(II) परिवर्तनों की वह श्रृंखला जो परिपक्वता और अनुभव के परिणामस्वरूप होती है।

	अभिवृद्धि	विकास
1.	मात्रात्मक	1. मात्रात्मक + गुणात्मक
2.	निर्धारित समय तक	2. लगातार व जीवनपर्यन्त
3.	शारीरिक परिवर्तन	3. सभी प्रकार के परिवर्तन
4.	संरचना	4. संरचना + कार्य
5.	एकीकृत नहीं होती है	5. एकीकृत होता है
6.	मापन का विषय है	6. मूल्यांकन का विषय है

Imp.

विकास के सिद्धांत :-

(I) सतत् विकास का सिद्धांत- हरलॉक

(II) विकास की गति में भिन्नता का सिद्धांत :- सिर का विकास सबसे पहले तथा 0-2 वर्ष में विकास सबसे तेज

(III) विकास की दिशा का सिद्धांत :- सिर से पैर की ओर (मस्तकोधमुखी)

(IV) समान प्रतिमान का सिद्धांत :- सम्पूर्ण मनुष्य जाति का विकास एक ही क्रम में होता है।

Scanned by CamScanner

(V) सामान्य से विशिष्ट क्रियाओं का सिद्धांत

(VI) व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सिद्धांत :- विकास की गति व्यक्तिगत होती है।

(VII) परस्पर संबन्ध का सिद्धांत

(VIII) केंद्र से दूर या निकट से दूर का सिद्धांत :- पेट की हड्डियों का विकास सबसे पहले धड़-पैर की हड्डियों का बाद में।

(IX) वंशानुक्रम वातावरण की अन्तःक्रिया का सिद्धांत

(X) अधिगम तथा परिपक्वता का सिद्धांत

(XI) वर्तुलाकार प्रगति का सिद्धांत :- विकास कभी भी रैखीय नहीं होता अपितु पूर्व अनुभवों को जोड़ते हुये वर्तुलाकार होता है।

(XII) भेदात्मक विकास का सिद्धांत :- लड़का व लड़की के विकास की अवस्था अलग-अलग होती है।

(XIII) ~~मिश्र~~ एकीकरण का सिद्धांत :- पहले सम्पूर्ण अंग का प्रयोग, फिर अंग के भागों का प्रयोग और अन्त में दोनों में समन्वय स्थापित कर लेता है।

विशेष:- विकास सामाजिक व सॉस्कृतिक परिवर्तनों से भी प्रभावित होता है
- वायगोत्स्की

विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

(I) वंशानुक्रम :- बी. एन. झा.

→ वंशानुक्रम हमारी जन्मजात विशेषताओं का योग है।

वंशानुक्रम की प्रक्रिया :-

मातृकोष + पितृकोष → संयुक्त उत्पाद
23 + 23 → 46 सामान्य
→ 45 टर्नर सिण्ड्रोम [लड़कियों x0
└ 30-40
→ 47 डाउन्स सिण्ड्रोम (मंगोलिज्म) - 10-25-50
→ [क्लिनफेल्टर सिण्ड्रोम = xxy]

Scanned by CamScanner

* आनुवांशिकता के वाहक जीन्स होते हैं (क्रोमोसोम में रहते हैं, निर्माण 1 कोष से होता है)

वंशानुक्रम के नियम :-

(I) बीजकोष निरन्तरता का नियम :- प्रतिपादक - बीजमैन

(II) समानता का नियम :- सोरेन्सन

(III) विभिन्नता का नियम :- डार्विन, सोरेन्शन व मेण्डल - विपरीत गुणों का पाया जाना।

(IV) प्रत्यागमन का नियम

(V) अर्जित गुणों के संक्रमण का नियम :- लैमार्क

(VI) वर्णशंकर / वंशानुओं का नियम :- मेण्डल (इसने मटर पर प्रयोग किये और पाया) (आधारभूत नियम) कि वर्णशंकर वस्तु हमेशा अपने मौलिक स्वरूप की ओर अग्रसर होती है।

(VII) बायोमेट्री का नियम :- फ्रांसिस गाल्टन - इनके अनुसार वंशानुक्रम में पूर्वजों का प्रभाव घटते हुये रूप में पड़ता है।

वंशानुक्रम का प्रभाव :-

(I) शारीरिक संरचना का प्रभाव :- कार्ल पियरसन

(II) मानसिक विकास का प्रभाव :- गाईड

(III) व्यवसायी योग्यता का प्रभाव :- कैटल

(IV) सामाजिक स्थिति का प्रभाव :- विनशीप

(V) महानता का प्रभाव :- गाल्टन

(VI) चरित्र का प्रभाव :- डगडेल

(VII) प्रजाति की श्रेष्ठता का प्रभाव

वातावरण का प्रभाव :-

* जे. एस. रॉस के अनुसार "वातावरण वह बाह्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।"

वुडवर्थ :- "वातावरण के अन्तर्गत वे सभी प्रभाव आजाते हैं जिन्होंने बालक को जन्म से प्रभावित किया है।"

Scanned by CamScanner

जिसबर्ट :- "वातावरण वह वस्तु है जो अन्य वस्तु को घेरे हुये है तथा सीधा उस पर अपना प्रभाव डालती है।

वाटसन :- Book - व्यवहारवाद - "आप मुझे चाहे जो बालक देदो आप जो कहोगे मैं उसे वही बना दूँगा।"

वुडवर्थ :- "वंशानुक्रम व वातावरण एक-दूसरे के पूरक हैं जहाँ वंशानुक्रम (आत्मा का बीज) तथा वातावरण (शरीरवृद्धि) है।)

अन्य कारक :-

(III) वृद्धि का प्रभाव
(IV) लिंग का प्रभाव
(V) अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का प्रभाव
(VI) पारीवारिक कारणों का प्रभाव
(vii) मनोवैज्ञानिक कारणों का प्रभाव
(VIII) संतुलित भोजन का प्रभाव

विकास की अवस्थायें

① शैशव अवस्था :-

0 - 5/6 वर्ष, 2 - 5/6 वर्ष पूर्व बल्यावस्था
काल :- 0-2 वर्ष

सिग्मण्ड फ्रायड के अनुसार :- "बालक को जो कुछ भी बनना होता है वह शुरू के 4-5 वर्षों में ही बन जाता है।"

रूसो के अनुसार :- "बालक के हाथ, पैर व नेत्र प्रारम्भिक शिक्षक होते है।"

न्यूमैन के अनुसार :- "5 वर्ष की आयु बालक के शरीर व मास्तिष्क के लिये बड़ी ग्रहणशील होती है।"

वैलेण्टाइन के अनुसार :- "शैशवावस्था सीखने का आदर्शकाल है।"

* भावीजीवन की आधारशिला शैशवावस्था को कहा गया है

जीन पीयाजे ने शैशवावस्था को अतार्किक चिंतन की अवस्था कहा है।

Scanned by CamScanner

खिलौनों की आयु - पूर्व बाल्यावस्था (2-6 वर्ष)

हरलॉक ने खतरनाक/ अपीली काल कहा।

शैशवावस्था की विशेषतायें

(1) शारीरिक व मानसिक विकास की तीव्रता :-

गुडएनफ के अनुसार :- "बालक का जितना मानसिक विकास होता है, उसका आधा प्रथम तीन वर्षों में हो जाता है।"

(2) काल्पनिक जगत् में निवास :-

(3) आत्मप्रेम व आत्मगौरव की प्रवृत्ति :-

(4) नैतिकता का अभाव

(5) दूसरों पर निर्भर होने की प्रवृत्ति -

(6) एकांत व साथ रहने की प्रवृत्ति -

(7) संवेगों की स्पष्ट अभिव्यक्ति -

(8) दोहराने की प्रवृत्ति -

(9) मूल प्रवृत्तियों पर आधारित व्यवहार -

(10) जिज्ञासा की प्रवृत्ति -

(11) सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता -

↳ जैसे - बालक प्रथम 6 वर्षों में इतना सीख लेता है कि बाद के 12 वर्षों में भी नहीं सीख पाता - गैसेल

(12) काम प्रवृत्ति - अंगूठा चूसना, दाँतों से काट लेना

(13) सामाजिकता का अभाव

(14) एच्छिक क्रियायें करना (17 से 18 माह)

(15) उद्देश्यपूर्ण क्रियायें करना (2 वर्ष)

(16) नकारात्मक व्यवहार करना

(17) लिंग पहचान करना

Scanned by CamScanner

शैशवावस्था में बालकों के लिये शिक्षा:-

(1) उचित वातावरण व उचित व्यवहार

(2) मातृभाषा में शिक्षा

(3) चित्र व कहानियों के माध्यम से शिक्षा

(4) वास्तविक वस्तुओं के माध्यम से शिक्षा

(5) सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा

(6) जिज्ञासा व मूलप्रवृत्तियों की संतुष्टि

(7) क्रिया व खेलविधि का प्रयोग

(8) आत्मनिर्भता की शिक्षा

बाल्यावस्था

काल:- 6 - 12 वर्ष
6 - 9 वर्ष तक संचयकाल
10 - 12 परिपक्व काल

परिमाण/अवधारणायें:-

फ्रायड ने बताया:- "जीवन का निर्माणकाल"

रॉस :- "मिथ्या परिपक्वता का काल"

कॉल व ब्रुश:- "अनोखा काल"

किलपेट्रिक :- "प्रतिद्वंदात्मक / समाजीकरण का काल"

विद्यालय आयु:- 6 - 10 वर्ष प्लेयर जॉन्स

वैचारिक क्रिया:- 7 - 12 वर्ष - पियाजे

⇒ उत्पाती, सारस आयु, गन्दी आयु, रचनात्मक आयु, तोलीय आयु

Scanned by CamScanner

बाल्यावस्था की विशेषतायें:-

(1) शारीरिक व मानसिक विकास में स्थिरता
(2) आत्मनिर्भरता का विकास
(3) वास्तविक जगत में निवास
(4) प्रबल जिज्ञासा की प्रवृत्ति
(5) सामाजिकता व नैतिकता का विकास
(6) बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विकास
(7) रचनात्मकता की प्रवृत्ति
(8) संग्रह की प्रवृत्ति
(9) निरुद्देश्य भ्रमण की प्रवृत्ति
(10) वैज्ञानिक व तार्किक कार्यों में रुचि
(11) समलैंगिक सामूहिक खेलों में रुचि
(12) भविष्य के प्रति चिन्ता का ना पाया जाना
(13) काल्पनिक भय का अन्त
(14) मानसिक रुचियों में परिवर्तन
(15) काम प्रवृत्ति की न्यूनता
(16) नेतृत्व के गुण का विकास

बाल्यावस्था में शिक्षा:-

- ब्लेयर, जॉन्स, सिम्पसन के अनुसार:- "बाल्यावस्था वह समय है जब तक बालक के आधारभूत दृष्टिकोण, मूल्यों तथा आदर्शों का निर्माण बहुत कुछ सीमा तक हो जाता है"

(1) भाषाज्ञान पर बल
(2) संवेगों की अभिव्यक्ति पर बल
(3) जिज्ञासा का की संतुष्टि
(4) पर्यटन व स्काउटिंग की व्यवस्था
(5) रोचक व उपयोगी पाठ्यक्रम
(6) रचनात्मकता व संग्रह की प्रवृत्ति को प्रोत्साह
(7) क्रिया व खेलविधि का प्रयोग
(8) पाठ्य सहगामी क्रियाओं की विशेषता

किशोरावस्था

काल:- 12/13 — 18/19 वर्ष

12 — 16 वर्ष पूर्व किशोरावस्था
17 — 19 उत्तर किशोरावस्था

'एडोलसेन्स' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एडोलेसियर शब्द से हुई है जिसका अर्थ है "परिपक्वता की ओर"

स्टेनले हॉल के अनुसार:-

"(i) किशोरावस्था तूफान, तनाव व संघर्ष की अवस्था है।
(ii) किशोरावस्था एक नया जन्म है।"

Scanned by CamScanner

किलपैट्रिक के अनुसार :- "किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।"

विग/हण्ट :- "किशोरावस्था को व्यक्त करने वाला एक ही शब्द है- परिवर्तन"

पियाजे :- "किशोरावस्था महान आदर्शों तथा वास्तविकता से अनुकूलन का समय है।"

जरशील्ड :- "किशोरावस्था वह अवस्था है जब विचारशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्व अवस्था की ओर अग्रसर होता है।"

हैडो कमेटी के अनुसार :-

"11 या 12 वर्ष की आयु में बालक की नशों में एक तूफान उठता है, यदि उसे दिशा दी जाये तो सफलता अन्यथा विनाश की स्थिति आती है।"

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :-

"किशोर वर्तमान तथा भावी जीवन की आशा को अभिव्यक्त करता है।"

सामान्य कथन

Scanned by CamScanner

किशोरावस्था में आने वाली समस्यायें:-

(1) शारीरिक परिवर्तनों की समस्या
(2) मानसिक विकास में जिज्ञासाओं की समस्या
(3) महत्वाकांक्षी व अपराध प्रवृत्ति की समस्या
(4) स्थिरता व समायोजन की समस्या
(5) किशोरावस्था शैशवावस्था का पुनः प्रारम्भ है।
(6) अपचारी समस्या (चोरी करना, घर से भागना)
(7) ~~नशाविकास~~ नशाविकार सम्बन्धी ~~समस्या~~
(8) आहारविकार सम्बन्धी समस्या [एनोरेक्सिया नरवोसा - पतला होने के लिये भूखे रहना
→ बुलिमिया - अधिक खाना खाने वाले

किशोरावस्था की विशेषतायें:-

(1) अधिकतम शारीरिक व मानसिक विकास
(2) दिवास्वप्न (दिन में सपने देखना) की प्रवृत्ति
(3) व्यक्तिगत व घनिष्ठ मित्रता
(4) संवेगात्मक विकास की प्रबलता
(5) रुचियों में परिवर्तन - संगीत, सिनेमा, साहित्य, उपन्यास पढ़ना
(6) वीरपूजा - किसी को आदर्श मानकर उसके जैसे बनने की कोशिश करना।
(7) चिंताओं में वृद्धि
(8) समाज सेवा की भावना - रॉस - किशोर समाजसेवा के आदर्शों का निर्माण करता है।
(9) समूह के प्रति भक्ति
(10) स्थिति व महत्व की अभिलाषा
(11) आत्मसम्मान व आत्मचेतना

Scanned by CamScanner

(12) ईश्वर व धर्म में विश्वास/अविश्वास

(13) स्वतंत्रता व विद्रोह की भावना- कोलसेनिक- "किशोर प्रौढ़ों को अपने मार्ग में बाधा समझता है।

(14) अपराध प्रवृत्ति का विकास- वैलेण्टाइन- "किशोरावस्था अपराध प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय है।"

(15) काम प्रवृत्ति की परिपक्वता [1. आत्मप्रेम (नारसिज्म) 1.
2. समलिंगी प्रेम
3. विषमलिंगी प्रेम

(16) अहम् भाव [काल्पनिक श्रोता- स्वयं की कमी की ओर बार-2 ध्यान जाना
व्यक्तिगत दन्तकथा- स्वयं के प्रति यह भाव कि कोई मुझे समझ नहीं सकता।

किशोरावस्था के बालकों की शिक्षा:-

(1) शारीरिक विकास की शिक्षा
(2) मानसिक विकास की शिक्षा
(3) संवेगात्मक विकास का प्रशिक्षण
(4) उदात्तीकरण विधि का प्रयोग
(5) सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा
(6) निरन्तर निर्देशन व परामर्श
(7) अभिप्रेरणा का प्रयोग
(8) जीवन कौशल की शिक्षा
(9) व्यावसायिक शिक्षा
(10) जीवनदर्शन की शिक्षा- अर्थात् कर्तव्य तथा अधिकारों का ज्ञान
(11) उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य सौंपना

Scanned by CamScanner

(12) किशोर के व्यक्तित्व का आदर करना
(13) लोकतांत्रिक व्यवहार
(14) सम्बन्धों का प्रशिक्षण

किशोरावस्था के विकास के सिद्धांत:-

(1.) आकस्मिक विकास का सिद्धांत - स्टैनले हॉल व एडोलसेंस (1904)
(2) क्रमिक विकास का सिद्धांत - थॉर्नडाइक, किंग व हॉलिंगवर्ग ने दिया
(3) मनोलैंगिक सिद्धांत - फ्रायड
(4) मनोसामाजिक विकास - एरिक एरिक्सन
(5) मानवशास्त्रीय सिद्धांत - मार्गरीड़ मिड़ रूथ बेंडिक्ट

विशेष:- हेविंग हर्स्ट ने किशोरावस्था का विकासात्मक कार्य सिद्धांत दिया तथा जेम्स मार्शिया ने पहचान संकट का अध्ययन किया है।

शारीरिक विकास

	शैशवावस्था	बाल्यावस्था	किशोरावस्था
1. भार	7.15 Pond 7.13 Pond 7 Pond Avrage	80-95 Pond	25 Pond
लम्बाई	30.5 इंच M 20.3 इंच F 50 सेमी औसत	2-3 इंच	18-21 वर्ष तक (M) 16 वर्ष तक (F)
सिर	$\frac{1}{4}$ भाग, 350 ग्राम विकास 90%	1/6 भाग ~~27-28 स्थायी~~ 1260 ग्राम 95% विकास	1/8 भाग, 1350 ग्राम 100% विकास
दाँत	6 माह से प्रारम्भ 4 वर्ष तक 20 दूध के दाँत	27-28 स्थाई दाँत	32 स्थाई

Scanned by CamScanner

हड्डियाँ	270	350	206
मॉसपेशियों का भार	30 23%	6 वर्ष 27% 12 वर्ष 33%	44-45%

शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

(1) वंशानुक्रम :- माता-पिता के जैसा रंग-रूप, लम्बाई
(2) अन्तःस्रावी ग्रंथियाँ :- पीयूष ग्रंथि, एड्रीनल ग्रन्थि
(3) संतुलित भोजन का प्रभाव
(4) दिनचर्या

* शारीरिक विकास पर विद्यालय तथा अध्यापक का सबसे कम प्रभाव पड़ता है।
* तारुण्य विकास - 15-16 वर्ष को कहा गया है।
* रूटिन - गाल को छूने पर मुंह खोलते हुये सिर को घुमाना

मोरो - 2-5 माह का बच्चा अपने पैरों को अन्दर की ओर मोड़ना (तेज आवाज देने पर)

बेबीन्स्की - 0-5 माह के बच्चे के पैरों की अंगुलियों को आगे की ओर मोड़ना (तलवे को छूने पर)

मानसिक विकास

हरलॉक :- "कोई भी दो बालक समान मानसिक योग्यता के नहीं होते"

जॉनलॉक :- "बालक जन्म के समय कोरा कागज होता है जिस पर वह अपने अनुभव लिखता है।"

मानसिक क्रियायें - संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, चिंतन, कल्पना, स्मृति, चिंतन, समस्या समाधान

Scanned by CamScanner

शैशवावस्था में मानसिक विकास:-

1 वर्ष का बच्चा 3-5 शब्द बोलेगा
2 वर्ष का बच्चा 100-200 शब्द तथा दो शब्दों का वाक्य बनाता है।
3 वर्ष में- लाइन खींचेगा और नाम बता देगा
4 वर्ष - वस्तुओं को आरोही क्रम में रख देगा, लिखना प्रारम्भ करेगा
5 वर्ष - वस्तुओं और रंगों में अन्तर करेगा तथा 10-11 शब्दों का वाक्य बना लेगा।

बाल्यावस्था में मानसिक विकास:-

6 वर्ष - 14 तक गिनती बोलेगा, शरीर के अंगों के नाम बता देगा सरल प्रश्नों का उत्तर बता देना

7 वर्ष - तुलना व अन्तर करने की योग्यता का विकास

8 वर्ष - कविता व कहानियाँ दोहरायेगा, 16 शब्दों का वाक्य बना लेगा।

9 वर्ष - दिनाँक समय व सिक्कों का ज्ञान

10 वर्ष - दैनिक जीवन के नियम तथा परम्पराओं का ज्ञान, जीवन-मृत्यु का ज्ञान, 3 मिनट में 70 शब्द बोलना

11 वर्ष - तार्किक योग्यता, जिज्ञासा व निरीक्षण शक्ति का विकास

12 वर्ष - समस्या समाधान की योग्यता का विकास

किशोरावस्था में मानसिक विकास:-

गुडवर्थ:- "15-20 वर्ष की अवस्था में मानसिक विकास अपनी उच्चतम सीमा पर पहुँच जाता है।"

⇒ किशोरावस्था में बुद्धि का अधिकतम विकास, मानसिक स्वतंत्रता का विकास, अमूर्त चिंतन, सामान्यीकरण, निगमन तार्किक योग्यता, कल्पना तथा

Scanned by CamScanner

स्मृति का अधिकतम विकास हो जाता है।

किशोरावस्था में मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

(1) वंशक्रम (2) वातावरण (3) शारीरिक स्वास्थ

(4) माता-पिता की शिक्षा तथा आर्थिक स्थिति का प्रभाव

(5) विद्यालय व शिक्षक का प्रभाव

मनोसामाजिक विकास :-

प्रतिपादक- इरिक इरिक्शन → Ego पर बल

8 अवस्थायें :-

(1) विश्वास तथा अविश्वास (आस्था बनाम अनास्था) - 0-18 माह

(2) स्वतंत्रता बनाम संदेह की अवस्था - 18 माह से 3 वर्ष

(3) पहल बनाम अपराध की अवस्था - 3-6 वर्ष

(4) परिश्रम V/s हीनता - 6-12 वर्ष

(5) पहचान भूमिका की अवस्था - 13-18 वर्ष

(6) मित्रता - अलगाव की अवस्था - 19-35 वर्ष

(7) सृजनात्मकता V/s निष्क्रियता - 35-65 वर्ष

(8) ईमानदारी बनाम निराशा या सम्पूर्णता बनाम हताशा - 65 वर्ष से अधिक
↳ आदमी अपने किये गये कार्यों का मूल्यांकन करता है।

सामाजिक विकास का पारिस्थितिक मॉडल :-

प्रतिपादक - ब्रोनफेन ब्रेन्नर

(1) लघु मण्डल - परिवार, विद्यालय और समूह

(2) मध्य मण्डल - परि. विद्या. समूह के बीच का सम्बन्ध

Scanned by CamScanner

(3) बाह्य मण्डल - माता-पिता का कार्य सम्बन्ध- गाँव का तालाब, मंदिर, विद्या.
(4) वृहत मण्डल - सामाजिक रीति- रिवाज, परम्परायें
(5) घटक मण्डल - बालक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

10-10-19

सामाजिक विकास:-

हरलॉक के अनुसार:- "सामाजिक विकास का अर्थ सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता प्राप्त करना है।

सोर व टेलफार्ड- "सामाजिक विकास की प्रक्रिया दूसरे व्यक्तियों के साथ प्रथम अन्तःक्रिया/ सम्पर्क से प्रारम्भ होती है। जो आजीवन चलती है।

क्रो एण्ड क्रो- "जन्म के समय बालक न तो सामाजिक होता है और ना ही असामाजिक, कुछ समय बाद वह सामाजिक बन जाता है।"

शैशवावस्था में सामाजिक विकास

① 3 माह का बालक अपनी माँ को पहचनता है, माँ के दूर जाने पर रोता है।
② 4 माह का बालक साथ खेलने पर हँसता है।
③ 5 माह का बालक क्रोध व प्रेम के व्यवहार को समझने लगता है।
④ 10 माह का बालक अपने प्रतिबिम्ब के साथ खेलने लगता है।
⑤ 12 माह का बालक मना किये जाने वाले कार्य को नहीं करेगा।
⑥ 2 वर्ष के बालक में सामाजिक अनुमोदन की प्रवृति होती है।
⑦ 3 वर्ष का बालक दूसरे बच्चों के साथ खेलना व सम्बन्ध बनाना प्रारम्भ करता है। अर्थात् सामाजिकता का प्रारम्भ 3 वर्ष की आयु से शुरु होता है।
⑧ सहनुभूति, समानुभूति, प्रतिस्पर्धा का भाव 4 वर्ष के बालक में पाया जाता है
⑨ 5 वर्ष का बालक वस्तुओं का लेन-देन करने लगता है तथा उसके अन्दर भाई-बहन की रक्षा का भाव पैदा होता है।

Scanned by CamScanner

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास

Imp ⇒ बाल्यावस्था में सामाजिकता का सर्वाधिक विकास होता है जैसे
- सहयोग करना,
- बड़ों का सम्मान करना
- सामाजिक सूझ का विकास
- लैंगिक अलगाव
- समूह समायोजन,
- टोली का विश्वासदस्य
- सामाजिक प्रतिस्पर्धा
- सुझाव ग्रहण करने की प्रवृत्ति

किशोरावस्था में सामाजिक विकास

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार- " 11-12 वर्ष की आयु में बालक के अनुरूप दृष्टिकोण तथा सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन होने लगता है।"

1. किशोरावस्था जटिल सामाजिकरण की अवस्था
2. सामाजिक चेतना व सामाजिक परिपक्वता का विकास
3. समाजसेवा व बलिदान की भावना
4. नेतृत्व के गुण का विकास
5. समूह का सक्रिय सदस्य बन जाना
6. लैंगिक चेतना का विकास

* किशोरावस्था में सामाजिक परिपक्वता का मापन एडगर डोल ने किया था।

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

1. वंशानुक्रम
2. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव

Scanned by CamScanner

③ संवेगात्मक स्वास्थ का विकास

↳ क्रो एण्ड क्रो :- सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास साथ-2 चलते है।"

④ परिवार का प्रभाव

↳ पेस्टालॉजी ने परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा है।"

⑤ विद्यालय व शिक्षक का प्रभाव

↳ ओटपे ने विद्यालय को सामाजिक आविष्कार कहा"

⑥ खेल का मैदान

↳ स्कीनर व हैरीमैन ने खेल के मैदान को निर्माण स्थल कहा है।

⑦ लिंग का प्रभाव

9. सामाजिकरण क्या है?

Ans. समाज के नियम आदर्श व परम्पराओं के अनुकूल अपने-आपको बना लेना सामाजीकरण कहलाता है।

Scanned by CamScanner

कार्य. संवेगात्मक विकास

Imotion शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के इमोवेयर से हुई है जिसका अर्थ होता है उत्तेजित हो जाना।

वुड़वर्थ:- "संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।"

जरशील्ड:- "किसी आवेग, उत्तेजित हो जाने तथा भड़क जाने की अवस्था को संवेगात्मक विकास कहते है।"

रॉस:- "संवेग चेतना की वह अवस्था है जिसमें भावात्मक तत्व की प्रधानता है।"

संवेगात्मक विशेषतायें:-

(1) संवेग सार्वभौमिक होते हैं।

(2) संवेग अन्तर्मुखी होते हैं।

(3) ~~संवेर~~ संवेग शारीरिक व मानसिक स्थिति में परिवर्तन करते हैं।

(4) संवेग सुखात्मक व दुखात्मक दोनों प्रकार के होते हैं।

(V) संवेगों का सम्बन्ध मूल प्रवृत्तियों से होता है।

✓ विशेष:- मूल प्रवृत्तियों का प्रतिपादन

Scanned by CamScanner

v) मैक्डूगल ने मूल प्रवृत्तियों को मानव व्यवहार का चालक कहा है।

(vi) मूल प्रवृत्तियाँ जन्मजात होती हैं, ये नष्ट नहीं होती, इनमें संशोधन हो जाता है।

मूल प्रवृत्तियों के तीन पक्ष होते हैं- ज्ञानात्मक (ii) भावात्मक और (iii) क्रियात्मक

मूलप्रवृत्ति	संवेग
1. पलायन	1. भय
2. युद्धप्रियता	2. क्रोध
3. निवृत्ति	3. घृणा
4 शिशुरक्षा	4. वात्सल्य
5. संवेदना	5. दुःख
6. काम	6 कामुकता
7. जिज्ञासा	7. आश्चर्य
8. आत्महीनता	8. अधीनता का भाव
9. आत्मप्रदर्शन	9. घमण्ड
10. सामूहिकता	10. एकाकीभाव
11. भोजन अन्वेषण	11. भूख
12. रचनात्मकता	12. कृतिभाव
13. संग्रह प्रवृत्ति	13. लोभ
14. हास	14. आमोद

Scanned by CamScanner

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास :-

(1) संवेग अस्थाई, स्वाभाविक तथा हिंसात्मक होते हैं।

(2) संवेगों की गति आरम्भ में तेज तथा बाद में धीमी होती जाती है।

(3) वाटसन के अनुसार शैशवावस्था में भय, क्रोध और प्रेम मुख्य संवेग होते हैं।

(4) ब्रिजेज के अनुसार :- जन्म के समय कोई भी संवेग नहीं होता केवल उत्तेजना होती है लेकिन दो वर्ष तक सभी संवेगों का विकास हो जाता है।

3 माह ⇒ ० यथा दुःख, आनन्द
6 माह ⇒ भय, प्रेम, घृणा, क्रोध
12 माह ⇒ उल्लास, अनुराग
18 माह ⇒ ईर्ष्या
24 माह ⇒ हर्ष, उल्लास, आमोद

बाल्यावस्था में संवेगों का विकास :-

(1) बालक अपने संवेगों का दमन कर लेता है, संवेग नियंत्रित अवस्था में होते हैं।

(2) स्थाई भावों का निर्माण (आत्म सम्मान, आदर)

(3) बालक के संवेगों पर शिक्षक तथा विद्यालय का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

(4) उपनाम से पुकारना तथा चूमा जाना पसन्द नहीं होता।

Scanned by CamScanner

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास :-

कॉल व ब्रश :- किशोरावस्था के आगमन का मुख्य लक्षण संवेगात्मक विकास में अत्यधिक तेज परिवर्तन है।"

(1) बालक के संवेग यहाँ पर सर्वाधिक अनियंत्रित हो जाते हैं।

(2) बालक में अमूर्त संवेग पाये जाते हैं।

(3) मुख्य संवेगों में काम, प्रेम, भय, क्रोध, दया, ईर्ष्या किशोरावस्था के संवेग हैं।

(4) किशोरावस्था में संवेगों पर शारीरिक संरचना का प्रभाव अधिक पड़ता है।

संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

(1) शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव

(2) थकान का प्रभाव

(3) अभिलाषाओं का पूरी नहीं होना

(4) विद्यालय व अध्यापक का प्रभाव

(5) परिवार का प्रभाव, समूह का प्रभाव

(6) सिनेमा तथा साहित्य का प्रभाव

(7) वंशक्रम और वातावरण का प्रभाव

संवेगात्मक समस्यायें :-

हकलाना, तुतलाना, अंगूठा चूसना, बिस्तर गीला करना, पलायन करना, शर्मीलापन, वामहस्तता (Left Handy)

Scanned by CamScanner

Imp. संवेगात्मक विकास के सिद्धांत :-

(1) जेम्स लॉन्ज का सिद्धांत :-
पहले संवेगात्मक व्यवहार, उसके बाद संवेगों की अनुभूति

(2) कैनन बोर्ड का सिद्धांत :- व्यवहार व अनुभूति साथ-साथ होंगे।

(3) मौलिक संवेगों का सिद्धांत :- भय, प्रेम और क्रोध मौलिक ~~सिद्धांत~~ संवेग होते हैं। (वाटसन)

(4) द्विकारक सिद्धांत :- स्टैनले व शेल्टर ने दिया था। उत्तेजना व संज्ञान होते हैं।

(5) संवेगात्मक मूल्यांकन सिद्धांत :- लेजारस

(6) संवेग संक्रियात्मक - लिण्डसले

संवेगों को प्रशिक्षित करने की विधियाँ :- ④

(1) दमन
(2) मानसिक व्यस्तता
(3) मार्गान्तीकरण
(4) ~~शारीरिक~~ ~~वि~~ सांवेगिक विवेचन (संवेगों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति)

हाईपोथेलेमस :- संवेगों पर नियंत्रण

Scanned by CamScanner

नैतिक विकास

सैमुअल स्माईल :- "चरित्र आदतों का पुंज है।"

शैशवावस्था में नैतिक विकास :-

(1) इस अवस्था में नैतिकता का अभाव पाया जाता है लेकिन माता-पिता के भय से बच्चा नैतिकता का पालन करता है.

(2) 2 वर्ष का बच्चा अच्छे लड़के और बुरे लड़के में अन्तर करेगा।

(3) 4 वर्ष का बालक अच्छे कार्य व बुरे कार्य में अन्तर समझेगा

बाल्यावस्था में नैतिकता का विकास

(1) नैतिकता का सर्वाधिक विकास तथा नैतिक सापेक्षता (चोरी आदि की आलोचना) का प्रारम्भ

स्ट्रैंग :- "बालक में न्याय, विवेक व ईमानदारी के गुणों का विकास हो जाता है"

किशोरावस्था में नैतिक विकास

टैक व हैविंग हर्ष :- "बालक नैतिक सिद्धांतों का निर्माण करता है तथा उसके आधार पर अपने कार्यों का मूल्यांकन करता है।

(1) आदर्श व्यक्ति की कल्पना करना तथा उसके अनुसार बनने की कोशिश करना।

(2) कर्तव्य अधिकार तथा अन्तःकरण के आधार पर नैतिकता का पालन करता है।

Scanned by CamScanner

"किशोर धर्म की संकीर्णता को स्वीकार नहीं करता" - मैडिवल

नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

⑥ संवेग, आदतें और मूलप्रवृत्तियाँ (नये कारक) इनके अलावा सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक ही हैं।

नैतिक विकास का सिद्धांत :- [1969] कोहलबर्ग

(1) प्रि कन्वेंशनल स्टेज / पूर्व परम्परागत / पूर्व औपचारिक / पूर्व रूढ़िगत / पूर्व लौकिक अवस्था :- 0-6

(i) आज्ञा व दण्ड की अवस्था ⇒ 0-2 वर्ष

(ii) सरल अहंकार / सापेक्ष, सहायक उद्देश्य (जिसकी लाठी उसकी भैंस)
↳ अपनी आवश्यकताओं को समझना, दूसरों के अधिकारों को जानना तथा बराबरी के लेनदेन के आधार पर नैतिकता का पालन

(2) कन्वेंशनल स्टेज (6-12 वर्ष) :- परम्परागत, रूढ़िगत, लौकिक, औपचारिक

(i) अच्छा लड़का, व लड़की की अवस्था (6-9 वर्ष) [Good boy, Bad boy, Good girl]
↳ प्रशंसा प्राप्त करने के लिये नैतिकता का पालन करना।

(ii) सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की अवस्था :-
⇒ कर्तव्य भावना से प्रेरित होकर नैतिकता का पालन करना, इसे कानून की अवस्था भी कहा जाता है।

③ उत्तर परम्परागत / Post Convational stage :-

⇒ उत्तर परम्परागत, Post रूढ़िगत, उत्तर औपचारिक

(i) सामाजिक समझौते की अवस्था (पूर्व किशोर आधारहीन आत्मचेतना)
⇒ अनुबन्धन के आधार पर नैतिकता का पालन करना

Scanned by CamScanner

Imp. (ii) आंतरिक विवेक :-

⇒ इस अवस्था में बालक विवेक के आधार पर नैतिकता का पालन करता है

जीन पियाजे के अनुसार नैतिकता का विकास :- ④

Book : Moral Gudgement of Chield - 1932

जीन पियाजे ने चार अवस्थायें बताई हैं:-

(I) अनॉमी अवस्था (0-5 वर्ष) :-

⇒ कानून रहित अवस्था, जहाँ बालक प्राकृतिक परिणामों द्वारा नैतिकता का पालन करता है।

(II) हैटरोनॉमी अवस्था (5-8 वर्ष) :-

⇒ इस अवस्था में बालक कृत्रिम परिणामों के द्वारा नैतिकता का पालन करता है।

(III) पारस्परिक आदान-प्रदान (8-13 वर्ष) :-

⇒ सहयोग की नैतिकता के आधार पर नैतिकता का पालन।

(IV) ऑटोनॉमी / स्वायत्तता की अवस्था (13-18 वर्ष) :-

⇒ इस अवस्था में बालक अपने विवेक के आधार पर नैतिकता का पालन करता है।

हैविंगहर्स्ट के अनुसार नैतिकता का विकास :- ⑤

(I) निरपेक्षता की अवस्था - 0-2 वर्ष

(II) आत्मकेन्द्रित अवस्था - 2-7 वर्ष

(III) परम्परानुकूल - 7-12 वर्ष

(IV) विवेकहीन अचेतावस्था - 12-16 वर्ष

(V) विवेकयुक्त परोपकारी अवस्था - 17-19 वर्ष

Scanned by CamScanner

कैरोल गिलीगन के अनुसार :-

(I) पूर्व परम्परागत → हीन

(II) परम्परागत → समान

(III) उत्तर / पश्च परम्परागत → जवाबदेही

गामक विकास (Moter Skill) :-

⇒ शरीर की मॉसपेशीयाँ तथा अंगों में गति तथा शक्ति का विकास ही गामक विकास कहलाता है।

गामक विकास के चरण :-

(I) वस्तु की ओर आकर्शित होना

(II) वस्तु को पकड़ने की कोशिश करना

(III) समझने की कोशिश करना

(IV) वस्तु के बारे में सोच बनाना

गामक कौशल के प्रकार :-

① सूक्ष्म गति कौशल :-

⇒ अंगुलियों की सहायता से की जाने वाली गतिविधियाँ

(i) लिखना :-

18 माह का बच्चा पैन को घसीटता है।

3 वर्ष का बालक रेखायें खींचेगा

4 वर्ष का लिखना शुरु करेगा

5-6 वर्ष का बालक वर्णमाला का विकास करेगा

(II) ब्लॉक :- 3 वर्ष का बालक ब्लॉक बनाता है।

Scanned by CamScanner

(III) आत्मपोषण:- 8 माह का बालक दूध की बोतल पकड़ना सीख लेता है।

(IV) 2 वर्ष का बालक चम्मच से खाना खाने लग जाता है।

(V) 3 वर्ष का बालक अंगुलियों से खाना खाने लग जाता है।

(VI) 6 वर्ष का बालक मेज पर खाना खा सकता है।

(VII) 10 वर्ष का बालक सम्पूर्ण विकास कर लेता है।

④ कपड़े पहनना-निकालना:-

(I) 3 वर्ष का बालक कपड़े निकालने लग जाता है।

(II) 4-5 वर्ष का बालक कपड़े पहनना सीख लेता है।

⑤ 2 वर्ष का बालक बॉल फेंकने लग जाता है।
4 वर्ष का बालक बॉल को पकड़ (कैच) लेता है।

⑥ स्थूल कौशल:- शरीर की मॉसपेशियों की सहायता से कार्यकरना

(I) 2 वर्ष का बालक ट्राई साईकिल चलाना प्रारम्भ कर देता है।
3 वर्ष का बालक साईकिल चलाना प्रारम्भ कर देता है।
8 वर्ष का बालक तैरना सीख जाता है।

नृत्य:- 3 वर्ष का बालक नृत्य करना प्रारम्भ कर देता है।
6 वर्ष का बालक नियंत्रण के साथ नृत्य करने लग जाता है।

शारीरिक क्रियायें:-

1 माह का बालक ठोड़ी को ऊपर करके देखना प्रारम्भ करता है।
2- माह का बालक छाती को ऊपर उठाकर देखने लग जाता है।
3- माह का बालक वस्तु को पकड़ेगा और छोड़ेगा
4- माह का बालक सहारे से बैठने लग जाता है।

Scanned by CamScanner

- 5 माह का बालक गोद में बैठना प्रारम्भ कर देता है।
  6 माह का बालक कुर्सी पर
  8 माह का बालक सहारे से खड़ा होना प्रारम्भ कर देता है।
  9 माह का बालक घुटनों के बल चलना प्रारम्भ कर देता है।
- 10 " " "
- 12 माह का बालक अपने आप खड़ा हो जाता है।
  14/15 माह का बालक खुद चलेगा।
- 2-3 वर्ष का बालक दौड़ना-उछलना शुरू कर देता है।
- 4 वर्ष का बालक सीढ़ियाँ चढ़ जाता है।

बालक की शारीरिक क्रियाओं को प्रभावित करने वाले कारक :-

1. वातावरण
2. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ
3. अभिप्रेरणा व अभ्यास
4. परिपक्वता का प्रभाव
5. लिंग का प्रभाव

बालक का भाषात्मक विकास :-

- 10 माह का बालक 1 शब्द बोलने लगता है - माँ (सार्थक)
- 12 माह का बालक 3-4 शब्द बोलता है।
- 2 वर्ष का बालक 100-200 शब्द बोलता है।
  3 वर्ष का बालक 896 शब्द बोल लेता है। (शिष्टाचार शब्दावली)
  4 वर्ष का बालक 1540 शब्द (समय शब्दावली)

Scanned by CamScanner

5 वर्ष का बालक 2072 शब्द - रंग-मुद्रा शब्दावली

≈ 6 वर्ष में 2562 - गुप्त शब्दावली

8 वर्ष 3600 शब्द

10 वर्ष में 5400 शब्द

≈ 12 वर्ष में 7200 शब्द

14 वर्ष में 9000 शब्द

≈ 16 वर्ष में 11700 शब्द

18 वर्ष में 15000 - 19000 शब्द

भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

(1) शारीरिक व मानसिक स्वास्थ का प्रभाव

(2) अभ्यास व अभिप्रेरणा का प्रभाव

(3) परिपक्वता का प्रभाव

(4) लिंग का प्रभाव

(5) अनुकरण, खेल, वार्तालाप, कहानी सुनाना और प्रश्नोत्तर

बलबलाना :- मानव वाणी का प्रथम शब्द होता है

क्रन्दन :- यह भाषा विकास की प्रथम अवस्था होती है।

भाषायी सापेक्षता का सिद्धांत :- (बेंजामिन व हार्क)

भाषा विचार की अन्तरवस्तु का निर्धारण करती है।

2. भाषा का जेनेरेटिक ग्रामर सिद्धांत :- (चामस्की) :-

→ बच्चे सर्वभाषा व्याकरण के साथ जन्म लेते हैं।

3. वायगोत्स्की के अनुसार :-

→ वाइगोत्स्की ने विचार व भाषा को अलग-अलग माना है।

→ भाषा तीन प्रकार की होती है -

Scanned by CamScanner

(1) आन्तरिक भाषा
(2) आत्मकेन्द्रित भाषा
(3) सामाजिक भाषा- दूसरों के साथ बात करना

④ जीन पियाजे ने ~~चिंतन~~ को भाषा को चिंतन का वाहक बताया है।

⑤ जेरोम ब्रुनर ने बताया कि विचार एक आंतरिक भाषा है।

क्रियात्मक अनुसन्धान (Action Reasurche):-

(1) 1926 में बकिंघम ने रिसर्च फोर टीचर्स में इसकी आवश्यकता पर बल दिया।

(2) सबसे पहले 1946 में कोलियर ने अमेरीका में इसका प्रयोग किया।

(3) इसका प्रतिपादन 1953 में स्टीफन एम कोरे ने किया था।

(4) Book: "विद्यालय की कार्यविधि में सुधार करने के लिये क्रियात्मक अनुसंधा

स्टीफन एम कोरे के अनुसार क्रियात्मक अनुसन्धान की परिभाषा:-

"विद्यालय से सम्बन्धित कार्यकर्ताओं के द्वारा किया गया अनुसन्धान जिसके द्वारा वे अपने कार्यों में सुधार कर सकें।

मौलिक अनुसन्धान:-

मौलिक अनुसन्धान	क्रियात्मक अनुसन्धान
(1) भौतिक विज्ञान से सम्बन्धित	1. सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित
(2) मौलिक का उद्देश्य है नवीन सिद्धांतों की खोज करना	2. इसका उद्देश्य है विद्यालय की कार्यप्रणाली का अध्ययन तथा उसमें सुधार करना।

Scanned by CamScanner

(3) न्यायदर्श- सम्पूर्ण जनसंख्या में से
(4) इसकी रूपरेखा जटिल होती है।
(5) इसका सामान्यीकरण सम्भव है
(6) इसे कोई भी विशेषज्ञ कर सकता है
(7) मूल्यांकन बाहरी व्यक्ति करता है

(3) न्यायदर्श- केवल कक्षा-कक्ष में से
(4) इसकी रूपरेखा लचीली होती है।
(5) इसका सामान्यीकरण सम्भव नहीं है।
(6) केवल विद्यालय सम्बन्धी कार्य करना
(7) मूल्यांकन स्वयं के द्वारा किया जाता है।

क्रियात्मक अनुसन्धान के उद्देश्य एवं उपयोगिता :-

1. विद्यालय की कार्यप्रणाली सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना तथा उनमें सुधार करना।
2. विद्यालय में लोकतांत्रिक वातावरण की स्थापना करना।
3. विद्यालय के कार्यकर्ताओं को जागरूक बनाना।
4. विद्यालय की दैनिक जीवन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना तथा उनमें सुधार करना।
5. पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियों को उपयोगी बनाना।

क्रियात्मक अनुसन्धान के अध्ययन का क्षेत्र :-

(I) व्यवहार सम्बन्धी समस्यायें
(II) शिक्षण सम्बन्धी समस्यायें
(III) पाठ्य सहगामी समस्यायें
(IV) परीक्षा सम्बन्धी समस्यायें
(V) विद्यालय संगठन व प्रशासन सम्बन्धी समस्यायें

Scanned by CamScanner

क्रियात्मक अनुसन्धान के सोपान :- (7)

(1) समस्या का ज्ञान

(2) समस्या के ऊपर विचार विमर्श करना

(3) योजना का निर्माण उपकल्पना का निर्धारण

(4) तथ्य संग्रह करने की विधियों का निर्धारण

(5) योजना का क्रियान्वयन व तथ्यों का संकलन

(6) निष्कर्ष निकालना

(7) दूसरों को परिणामों की सूचना देना

क्रियात्मक अनुसन्धान के चार प्रकार :-

(1) प्रयोगात्मक

(2) निदानात्मक

(3) अनुभाविक

(4) सहभागी (साथी)

Scanned by CamScanner

शिक्षा का अधिकार [R.T.E.]-2009

20 जुलाई, 2009 को ~~संसद~~ राज्यसभा में

4 अगस्त, 2009 को लोकसभा में तथा

26 अगस्त, 2009 को राष्ट्रपति द्वारा मंजूरी दी गई।

- 1 अप्रैल, 2010 से जम्मू-कश्मीर को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में लागू हो गया
- 1 अप्रैल, 2011 से राजस्थान में लागू हुआ।
- भारत विश्व में 135वाँ देश है जिसने R.T.E. को लागू किया।
- R.T.E. सर्वप्रथम "नार्वे" देश में लागू हुआ।
- 1 दिसम्बर, 2002 को 86वें संविधान संशोधन के द्वारा भाग-3 के तहत शिक्षा का मौलिक अधिकार घोषित किया गया। तथा भाग-4 में 11वाँ मूल कर्तव्य यह जोड़ा गया।

* R.T.E. में 7 अध्याय, 38 धारायें व 1 अनुसूची है।

R.T.E. का प्रथम अध्याय:-

धारा-प्रथम- प्रस्तावना

धारा-1: निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा का अधिकार, धार्मिक संस्थाओं पर लागू नही

धारा-2: शब्दावली

(I) 6-14 वर्ष की आयु स्तर के बालकों के अविभावकों पर लागू

(II) समुचित सरकार - केन्द्र व राज्य सरकारों के सहयोग से

(III) प्रारम्भिक शिक्षा- 1-8 तक की कक्षायें

(IV) अनुवीक्षक प्रक्रिया- प्रवेश से है।

(V) दुर्बल वर्ग:- जिनकी आय निर्धारित आयसीमा से कम हो दुर्बल वर्ग में आते हैं।

Scanned by CamScanner

(VI) असुविधाग्रस्त :- ST, SC व पिछड़े वर्ग

(VII) विहित - नियम बनाने से है।

(VIII) विद्यालय- सरकारी विद्यालय, निजी विद्यालय, अनुदानित व विशिष्ट विद्यालय, सैनिक विद्यालय व नवोदय विद्यालय आदि।

अध्याय-2

दूसरा अध्याय :- विस्तार

धारा-3

(1) प्रत्येक बालक का नजदीकी विद्यालय में निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार।

धारा-4 : आयु के अनुसार कक्षा-कक्ष में स्थान देना

धारा-5 : टी.सी. प्राप्त करना बालक का अधिकार होगा

अध्याय-③ 6-11 धारायें

समुचित सरकार, स्थानीय प्राधिकार तथा माता-पिता के कर्तव्य

धारा-6 : 1-5 तक प्रत्येक गाँव या ढाणी के विद्यालय की अधिकतम दूरी 6-8 तक का विद्यालय दो किमी. की दूरी पर होगा।

धारा-7 : वित्तीय अनुपात केंद्र सरकार द्वारा 60% तथा राज्य सरकारों द्वारा 40% वहन किया जाता है, पूर्वोत्तर राज्यों में यह अनुपात 90:10 है।

धारा-8 : इसमें समुचित सरकारों द्वारा किये जाने वाले दायित्वों का उल्लेख है।

धारा-9 : स्थानिय प्राधिकार के दायित्वों का पालन करना।

धारा-10 :- माता-पिता का दायित्व है कि वे अपने बच्चों को विद्यालय में पुँहुचायें।

Scanned by CamScanner

धारा-11 : 3-6 वर्ष तक के बालकों के लिये आँगनबाड़ी में शिक्षा की व्यवस्था।

अध्याय-④ विद्यालय व शिक्षक की भूमिका

धारा-12 : सभी निजी विद्यालयों में कक्षा प्रथम में 25% सीटें गरीब बच्चों के लिये आरक्षित रहेंगी।

धारा-13 : प्रवेश प्रक्रिया के दौरान न तो प्रवेश परीक्षा ली जायेगी तथा न ही साक्षात्कार और ना ही डोनेशन के नाम पर फीस वसूली जायेगी।

धारा-14 : प्रवेश प्रक्रिया के दौरान् आवश्यक प्रमाण पत्रों से मुक्ति

धारा-15 : 1-8 तक की कक्षाओं में प्रवेश की अंतिम तिथि 30 सितम्बर है लेकिन पूरे वर्ष भर प्रवेश लिया जा सकेगा।

धारा-16 : बालक को न तो फेल किया जा सकेगा और ना ही विद्यालय से निकाला जा सकेगा, जब तक वह प्रारम्भिक परीक्षा पास न करले।

धारा-17 : बालक को शारीरिक व मानसिक रूप से दण्डित नहीं किया जायेगा।

धारा-18 : बिना मान्यता के विद्यालय चलाने पर पूर्ण प्रतिबन्ध है, अगर पाया गया तो जुर्माना 1 लाख रुपये है।

धारा-19 : विद्यालय के मानक सम्बन्धी प्रावधान

धारा-20 : सरकार समुचित मानकों में परिवर्तन कर सकती हैं

धारा-21 : S.M.C. में 16 सदस्य होते हैं जो 2 वर्ष के लिये चुने जाते हैं।

S.M.C. → School management Committee (विद्यालय प्रबंधन समीति)

Scanned by CamScanner

⇒ प्रत्येक महिने की अमावश्या को मीटिंग होती है जिसमें अविभावकों को सदस्य बनाया जाता है। जिनमें सर्वाधिक महिला सदस्य होती हैं।

धारा-22: प्रत्येक 3 वर्ष के लिये विद्यालय विकास योजना बनेगी जो S.M.C. के सदस्यों द्वारा बनाई जायेगी।

धारा-23: इस धारा में अध्यापक के पद की योग्यता का उल्लेख है।

धारा-24: अध्यापक का कर्तव्य होगा कि वह नियमित रूप से विद्यालय आये।

Trick- निपात प्रकाश

(I) नियमित रूप से विद्यालय आयेगा।

(II) पाठ्यक्रम समय पर पूरा करायेगा।

(III) प्रति सप्ताह 45 कालांश होंगे

(IV) माता-पिता के साथ मीटिंग का आयोजन करेगा।

(V) सरकारी प्रशिक्षणों में भी भाग लेना होगा।

धारा-25: छात्र-शिक्षक अनुपात

(I) 1-5 तक की कक्षा में 30 विद्यार्थियों पर 1 अध्यापक रहेगा = 30:1

(II) 150 विद्यार्थियों से अधिक पर एक HM + 5 अन्य अध्यापक रहेंगे

(III) 200 विद्यार्थियों पर 40:1 रहेगा।

(IV) 200 कुल कार्य दिवस होंगे।

(V) 800 कुल कालांश होंगे

Scanned by CamScanner

(VI) 6-8 तक की कक्षाओं में अनुपात 35:1 रहेगा।

→ 100 बच्चों पर 1 H.M. रहेगा।

1 अध्यापक गणित + विज्ञान पढ़ायेगा।

1 अध्यापक सामाजिक विज्ञान पढ़ायेगा।

→ 200 कुल कार्यदिवस होंगे।

→ 1000 कालांश होंगे।

धारा-26: किसी भी विद्यालय में 10% से अधिक पद रिक्त नहीं रह सकते

धारा-27: चुनाव, जनगणना व आपदा कार्यों के अलावा अध्यापक की ड्यूटी किसी भी अन्य सरकारी कार्यों में नहीं लगाई जायेगी।

धारा-28: कोई भी अध्यापक निजी ट्यूशन नहीं करवा सकता।

अध्याय-5 पाठ्यक्रम

धारा-29: सीखने के अधिकतम अवसर उपलब्ध करवाना,

- सर्वांगीण विकास पर बल देना,
- मूल्य आधारित मातृभाषा में शिक्षा,
- सतत् व व्यापक मूल्यांकन,
- गतिविधि आधारित प्रश्न।

धारा-30: प्रारम्भिक परीक्षा पूरी होने तक बोर्ड परीक्षा अनिवार्य नहीं होगी

Scanned by CamScanner

अध्याय-6 बाल अधिकारों का संरक्षण

धारा-31: बाल संरक्षण अधिनियम-2005 के तहत राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग और राज्य बाल संरक्षण आयोग का गठन।

धारा-32: बाल संरक्षण आयोग में अपील का प्रावधान।

धारा-33: राष्ट्रीय शिक्षा सलाहकार समीति का गठन।

धारा-34: राज्य शिक्षा सलाहकार समीति के सदस्यों का उल्लेख - वर्तमान में सदस्य संख्या-15 है।

अध्याय-7 (प्रकीर्णन) विशेष

धारा-35: समुचित सरकार के द्वारा निगम बनाने की प्रक्रिया।

धारा-36: धारा 13, 18, 19 में परिवर्तन करने सम्बन्धी शक्तियाँ।

धारा-37: S.M.C. व बाल संरक्षण आयोग के खिलाफ कोई भी शिकायत नहीं की जा सकेगी।

अंतिम धारा-38: इस धारा के अन्तर्गत राज्य सरकारों को नियम बनाने की शक्ति प्रदान की गई है।

Scanned by CamScanner

N.C.F. 2005

* प्रोफेसर यशपाल कमेटी की सिफारिश पर यह अधिनियम लागू किया गया।
* इस कमेटी में 23 विद्वान् थे।
* पाठ्यचर्या शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के कैरीकुलम या क्यूरर से हुई है जिसका अर्थ है- "दौड़ का मैदान"
* पाठ्यचर्या कलाकार रूपी शिक्षक के हाथ में वह साधन है जिसके द्वारा वह पदार्थ रूपी विद्यार्थी को अपने आदर्शों में ढालता है।

N.C.F.-2005 के मार्गदर्शन सिद्धांत/-उद्देश्य:-

(1) शिक्षा को बालक के बाहरी जीवन से जोड़ना।

(2) शिक्षा को रटन्त प्रणाली से मुक्त करवाना।

(3) बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देना।

(4) परीक्षा को कक्षा-कक्ष की गतिविधि से जोड़ते हुये लचीला बनाना।

(5) राष्ट्रीय, नैतिक, मानवीय तथा पर्यावरणीय मूल्यों को विकसित करना।

Scanned by CamScanner

N.C.F. 2005 की विधियाँ :- ⑤

① करके सीखना (किलपैट्रिक ने दी)

② निरीक्षण करके सीखना
(इस पर वाटसन ने बल दिया)

③ परीक्षण करके सीखना (विलियम वुण्ट ने दी)

⇒ विलियम वुण्ट ने 1879 ई. में जर्मनी के लिपजिंग शहर में प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की।

④ सामूहिक विधि :- वाद-विवाद, सेमिनार, कार्यशाला

⑤ मिश्रित विधि :- पूर्ण तथा अंश की विधि

N.C.F. 2005 की मुख्य विशेषतायें :-

N.C.F. 2005 का प्रारम्भ टैगोर के निबन्ध सभ्यता व प्रगति के इस कथन से होता है कि <u>रचनात्मकता व आनन्द बचपन की कुन्जी है।</u>

① प्रथम विशेषता :- शिक्षक का प्रारम्भ मूर्त से अमूर्त और ज्ञात से अज्ञात की ओर होना चाहिये।

Scanned by CamScanner

② सूचना को ज्ञान नहीं मानना है।

③ रटने की जगह संअवधारणाओं को समझने पर बल देना होगा।

④ खेल तथा मनोवैज्ञानिक विधियों के प्रयोग पर बल देना होगा

⑤ पाठ्यक्रम में विविधता तथा चुनौतियों पर बल दिया जाना चाहिये।

⑥ मोटी किताबों तथा लम्बे पाठ्यक्रम का विरोध किया गया

12/10/19

⑦ कक्षा में अनुशासन के लिये आत्मअनुशासन का सुझाव दिया व दण्ड का विरोध किया गया है।

⑧ समावेशी शिक्षा पर बल दिया गया है।

⑨ विकलांगता समाज द्वारा निर्मित है।

V. Imp.

⑩ एक बालक की असफलता पूरी शिक्षा व्यवस्था की असफलता को दर्शाती है।

⑪ प्रतिसप्ताह एक पुस्तकालय कालांश होना चाहिये जिसमें बालक स्वयं पुस्तक चुने।

⑫ पाठ्यक्रम में आये हुये स्थानों का प्रत्यक्ष अवलोकन

⑬ शारीरिक शिक्षा पर विशेष बल

⑭ बालकों में रचनात्मकता के विकास पर बल

⑮ गतिविधि आधारित शिक्षण पर बल

⑯ शिक्षा बिना बोझ के रिपोर्ट में मूल्यांकन के लिये निम्न सुझाव दिये गये हैं-

(i) सतत व व्यापक मूल्यांकन

(ii) खुली पुस्तक परीक्षा

(iii) 10वीं व 12वीं की परीक्षा को ऐच्छिक करने का सुझाव

Scanned by CamScanner

(17) शांति शिक्षा पर बल ⇒ सभी के प्रति समानतापूर्ण शिक्षा का विकास

(18) कला शिक्षा पर बल

(19) काम आधारित शिक्षा (औद्योगिक व व्यावसायिक शिक्षा)

(20) कक्षा 1-2 तक कोई Home work नहीं, कक्षा 3-5 प्रतिसप्ताह 2 घण्टे का Home work, कक्षा 6-8 प्रतिदिन 1 घण्टे तथा 9-12 प्रतिदिन 2 घण्टे का Home work दिया जाना चाहिये।

(21) शिक्षा में नवीन तकनीकि जैसे- कम्प्यूटर शिक्षा पर बल

Scanned by CamScanner

12/10/19

[शिक्षण अधिगम प्रक्रिया]

गेज:- "शिक्षण का उद्देश्य दूसरों के व्यवहार में परिवर्तन करना है।"

स्मिथ:- "शिक्षण एक उद्देश्य निर्देशित क्रिया है जो सीखने में उत्सुकता प्रदान करती है"

मॉरीशन:- "शिक्षण में एक अधिक परिपक्व व्यक्ति कम परिपक्व व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन करता है।"

① शिक्षा व शिक्षण में अन्तर:-

शिक्षा	शिक्षण
1. व्यापक	सीमित
2. सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया	केवल ज्ञानात्मक व क्रियात्मक विकास की प्रक्रिया
3. जीवनपर्यंत चलती है	केवल सीमित समय तक चलती है
4 यह औपचारिक, अनौपचारिक व निरऔपचारिक रूप में होती है	यह केवल औपचारिक होता है।

② शिक्षण व अनुदेशन में अन्तर:-

शिक्षण	अनुदेशन
(i) इसमें अन्त: क्रिया होती है	अन्त: क्रिया नहीं होती
(ii) इसमें अध्यापक का होना आवश्यक है।	अध्यापक आवश्यक नहीं
(iii) ज्ञानात्मक + क्रियात्मक विकास	केवल ज्ञानात्मक
(iv) इसमें अनुदेशन निहित है।	अनुदेशन शिक्षण नहीं होता

Scanned by CamScanner

12/10/19

शिक्षण के चर :-

(I) स्वतंत्र चर → शिक्षक
(II) आश्रित चर → विद्यार्थी
(III) मध्यस्थ चर → पाठ्यक्रम

शिक्षण की विशेषतायें :-

(1) शिक्षण कला तथा विज्ञान दोनों है।
(2) शिक्षण मनोवैज्ञानिक व उद्देश्ययुक्त प्रक्रिया है।
(3) शिक्षण के दो पक्ष होते हैं - (A) सीखने वाला (B) सिखाने वाला
(4) शिक्षण औपचारिक प्रक्रिया है
(5) शिक्षण ज्ञानात्मक व क्रियात्मक प्रक्रिया है।

शिक्षण की अवस्थायें :- P.W. जैक्शन ने बताई।

(1) पूर्व क्रियावस्था → उद्देश्यों का निर्धारण, पाठ्यवस्तु व शिक्षणविधियों का चुनाव
(2) अन्तः क्रिया :- कक्षाकक्ष में जाने के बाद की जाने वाली क्रियायें
(3) उत्तर क्रिया :- कक्षा आकार की अनुभूति, विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण, उद्देश्यों की प्राप्ति

उत्तम / प्रभावी शिक्षण की विशेषतायें :-

(1) शिक्षण नियोजित (Planing) होना चाहिये
(2) शिक्षण मनोवैज्ञानिक (बालक रुचि आधारित) होना चाहिये
(3) शिक्षण बालकेंद्रित होना चाहिये

Scanned by CamScanner

12/10/19

(4) शिक्षण बालक के पूर्वज्ञान पर आधारित होना चाहिये

(5) शिक्षण व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर आधारित होना चाहिये

(6) शिक्षण निदानात्मक तथा उपचारात्मक होना चाहिये।

(7) शिक्षण अन्तःक्रियायुक्त होना चाहिये (संवादमूलक)

(8) शिक्षण क्रियाशीलतायुक्त होना चाहिये (शिक्षक व अध्यापक)

(9) शिक्षण लोकतांत्रिक होना चाहिये (बच्चे डरें नहीं)

(10) शिक्षण निर्देशात्मक न कि आदेशात्मक

(11) शिक्षण बालक के जीवन से जुडा होना चाहिये (व्यावहारिक)

(12) शिक्षण उद्देश्ययुक्त होना चाहिये।

V.Imp

शिक्षण अधिगम के सोपान

I.K. डेविज ने बताये, इनकी Book - "शिक्षण अधिगम का प्रबंधन"

(1) शिक्षण अधिगम का नियोजन :-

(i) उद्देश्यों का निर्धारण

(ii) पाठ्यवस्तु विश्लेषण

(iii) कार्य विश्लेषण

(2) शिक्षण अधिगम की व्यवस्था :-

(i) शिक्षण विधियों तथा पाठ्यवस्तु की सहायता से अधिगम वातावरण का निर्माण

(3) शिक्षण अधिगम का मार्गदर्शन/अग्रसरण :-

(1) अभिप्रेरणा प्रदान करना

Scanned by CamScanner

12/10/19

(4) शिक्षण अधिगम का नियंत्रण :-

- मूल्यांकन सम्बन्धी क्रियायें।

अधिगम - अनुदेषन व शिक्षण का सम्बन्ध :-

शिक्षण के प्रकार :- ब्लूम के अनुसार

1. ज्ञानात्मक
2. भावात्मक
3. क्रियात्मक

स्तर के आधार पर शिक्षण के प्रकार :-

1. स्मृति स्तर (रटने पर बल) — हरबर्ट
2. बोध स्तर — मारीशन
3. चिन्तन स्तर (समझने पर बल) — हण्ट

Scanned by CamScanner

12/10/19 V. Imp.

मापन एवं मूल्यांकन

स्टीवेन्स :- निर्धारित नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया मापन है।

मापन के कार्य :-

(1) वस्तुओं की श्रेणी को निर्धारित करना
(2) वस्तुओं को अंक प्रदान करना
(3) संख्याओं की श्रेणी को निर्धारित करना

मापन के प्रकार :- ④

1. **शाब्दिक स्तर मापन :-** विशेषताओं के आधार पर मापन करना
2. **क्रमिक मापनी :-** उच्चतर से निम्नतर
3. **अन्तराल मापनी :-** दो वस्तुओं या दो अंकों के मध्य की दूरी को मापने वाली (थर्मामीटर)
4. **अनुपात मापन :-** (सर्वोच्च स्तर का मापन) किमी., मीटर आदि।

मूल्यांकन

गाण्डेकर :- "बालक द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया गया है, यह जानने की व्यवस्था मूल्यांकन कहलाती है।"

अर्थ :- मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जहाँ मापन के सन्दर्भ में निर्णय प्रदान किया जाता है।

* व्यक्ति की उपलब्धियों का मात्रात्मक वर्णन + योग्यता का गुणात्मक वर्णन = निर्णय प्रदान करना

Scanned by CamScanner

12/10/19

मापन व मूल्यांकन में अन्तर -

मापन	मूल्यांकन
1. यह मात्रात्मक होता है।	1. मात्रात्मक + गुणात्मक दोनों है।
2. मापन पहले होता है।	2. मूल्यांकन बाद में होता है।
3. मापन निर्धारित समय पर होता है।	3. मूल्यांकन निरन्तर होता है।
4. मापन सीमित है।	4. मूल्यांकन व्यापक होता है।

मूल्यांकन के सोपान :- ③

1. शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण
2. अधिगम अनुभव प्रदान करना
3. व्यवहार परिवर्तन के आधार पर मूल्यांकन

मूल्यांकन के उद्देश्य :-

(1) शिक्षा के उद्देश्यों को स्पष्ट करना
(2) विद्यालयी कार्यक्रम का मूल्यांकन करना
(3) पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियों की सफलता की जाँच करना,
(4) बालकों का वर्गीकरण करना
(5) निदानात्मक व उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करना

अच्छे मूल्यांकन / उपलब्धि परीक्षण / प्रश्नपत्र की विशेषतायें :-

(I) वैधता :- जिन उद्देश्यों के लिये बनाया गया है उनकी पूर्ति करता हो।

(II) वस्तुनिष्ठता :- जाँचकर्ता की मनोदशा का प्रभाव नहीं पड़े तथा बहुविकल्प हों।

Scanned by CamScanner

(III) विश्वसनियता :- जिसके के परिणाम के ऊपर समय तथा स्थान का प्रभाव नहीं पड़ता है। (प्राप्तांकों में अंतर नहीं आना)

(IV) विभेदकारिता :- परीक्षण प्रतिभाशाली, सामान्य व मन्दबुद्धि बालकों में अन्तर करने वाला है

(V) व्यापकता :- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम व सभी पक्षों (ज्ञानात्मक, भाव. व क्रियात्मक) का मापन करता है।

(VI) व्यावहारिकता :-

(VII) मितव्ययी :-

(8) क्रमबद्धता है।

मूल्यांकन की प्रकृति/ विशेषतायें :-

1. निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
2. मूल्यांकन उद्देश्ययुक्त मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।
3. बालकेंद्रित प्रक्रिया है।
4. निर्णय प्रदान करने वाली प्रक्रिया है।
5. मूल्यांकन व्यापक (ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक) प्रक्रिया है।

मूल्यांकन के प्रकार :-

परिमाणात्मक
लिखित
मौखिक
प्रयोगात्मक

गुणात्मक
प्रश्नावली, साक्षात्कार, व्यक्ति इतिहास, समाजमिती, चैकलिस्ट, अवलोकन, साक्षात्कार, Rating Scale, संचयीवृत, घटनावृत

Scanned by CamScanner

मूल्यांकन के सामान्य प्रकार :-

① रचनात्मक मूल्यांकन
② योग्यात्मक मूल्यांकन
③ निदानात्मक मूल्यांकन
④ सतत् व व्यापक मूल्यांकन

उपलब्धि परीक्षण

- गैरीसन व अन्य :- "विषय विशेष में बालक द्वारा सीखे गये ज्ञान तथा सफलता की जाँच उपलब्धि परीक्षण कहलाता है।"

उद्देश्य/उपयोगिता :-

① विषय विशेष में ज्ञान की जाँच करना।
② शिक्षण की सफलता की जाँच करना।
③ शिक्षणविधियों की सफलता की जाँच करना।
④ पाठ्यक्रम के उपयोगिता की जाँच करना।
⑤ व्यक्तिगत निर्देशन व परामर्श।
⑥ निदानात्मक व उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करना।

परीक्षण के प्रकार

- मानकीकृत
  - सामान्य
  - विशेष
- शिक्षक निर्मित
  - निबन्धात्मक
  - वस्तुनिष्ठ
  - निदानात्मक

Scanned by CamScanner

आकलन :- ③

अर्थ :- सूचनाओं को एकत्रित करने की प्रक्रिया जो मूल्यांकन से पहले होता है।

आकलन के प्रकार

अधिगम के रूप में आकलन
⇓
सीखने-सिखाने के दौरान किया जाने वाला आकलन

अधिगम के लिये आकलन
⇓
यह निदानात्मक रूप में तथा बच्चों के साथ-चर्चा करते हुये किया जाता है।

अधिगम का आकलन
⇓
कार्य की समाप्ति के बाद किया जाने वाला आकलन

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CC) :-

⇒ सतत् का अर्थ है- निरन्तर या लगातार

⇒ व्यापक का अर्थ है- कक्षा के अन्दर और कक्षा के बाहर अनुभव

⇒ CC का उल्लेख RTE की धारा-29 में है।

CC के उद्देश्य :-

(1) परीक्षा के प्रति भय को समाप्त करना।
(2) परीक्षा को कक्षा-कक्ष की गतिविधि से जोड़ना।
(3) नामांकन व ठहराव में वृद्धि करना।
(4) सर्वांगीण विकास करना।

⇒ राजस्थान में अप्रैल 2010 से जयपुर के 20 विद्यालय और अलवर के 40 विद्यालयों से CC चालू किया गया था।

⇒ CBSE ने अक्टू. 2009 में कक्षा-9 में शुरू किया था।

Scanned by CamScanner

रचनात्मक / निर्माणात्मक मूल्यांकन :-

⇒ सीखने- सिखाने के दौरान निरन्तर किया जाने वाला मूल्यांकन

आधार रेखा मूल्यांकन :-

⇒ बालक के पूर्वज्ञान की जाँच करने के लिये किया जाने वाला मूल्यांकन

योगात्मक मूल्यांकन :- एक निर्धारित अवधि के बाद किया जाने वाला मूल्यांकन। ये राजस्थान में पहले 4 होते थे वर्तमान में तीन होते हैं और कक्षा- 5 में केवल '2' होते हैं।

योगात्मक मूल्यांकन के आधार पर तीन ग्रेड दी जाती है:-

(I) A - जो स्वतंत्र रूप से कार्य करता है
(II) B - जो दूसरों की सहायता से कार्य करता है
(III) C - जिसको विशेष सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

A, B, L :- गतिविधि आधारित अधिगम (करके सिखाना)

⇒ इसमें कक्षा- 1 व 2 के लिये लहरकक्ष भी होता है

CC का वर्तमान नाम - SIQE (State Intiative Quality Edu.)

CC में प्रयुक्त सामग्री :-

(1) अध्यापक योजना डायरी
(2) कार्यपत्रक (अभ्यास कार्य)
(3) पोर्टफोलियो फाईल
(4) आर्टक्लिट

Scanned by CamScanner

शिक्षा नीतियाँ

स्ट्रेसर :- शिक्षा नीतियाँ वे योजनायें होती हैं जिनमें बालक के अधिगम अनुभव, पाठ्यवस्तु विश्लेषण तथा व्यवहार परिवर्तन के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।

ये दो प्रकार की होती हैं-

(1) लोकतांत्रिक और
(2) प्रभुत्ववादी नीतियाँ

(1) लोकतांत्रिक नीतियाँ :-

(I) योजना प्रोजेक्ट विधि (किलपैट्रिक) :-
(II) ऐतिहासिक खोज विधि - जेरोम ब्रुनर
(III) स्वामित्व अधिगम विधि - ब्लूम
(IV) अन्वेषण विधि - आर्मस्ट्रॉंग
(V) समस्या समाधान विधि - जॉन डी.वी. व सुकरात
(VI) पर्यटन विधि - रैन, पेस्टॉलॉजी
(VII) सूक्ष्म शिक्षण (1961) - हैलन
(VIII) दल शिक्षण - अमेरिका से प्रारम्भ - लेक्सिंगटन
(IX) वाद-विवाद विधि - सुकरात
(X) प्रश्नोत्तर विधि - सुकरात
(XI) गृहकार्य विधि -
(XII) संवेदनशील प्रशिक्षण विधि :-
(XIII) मनोनाट्कीय विधि/ अभिनय विधि - जे. एन. मोरेनो

Scanned by CamScanner

② प्रभुत्ववादी विधियाँ:- ⑤

* इन विधियों में अध्यापक प्रधान होता है।

(I) व्याख्यान विधि

(II) पाठ्यपुस्तक विधि

(III) प्रदर्शन विधि

(IV) अनुवर्ग - बालकों को छोटे-छोटे समूह में विभाजित करके अध्यापक द्वारा समस्या प्रदान की जाती है तथा अध्यापक के नियंत्रण में ही समस्या का समाधान होता है।

(V) अभिक्रमित अनुदेशन विधि-

- रेखीय
  - ↓ स्किनर

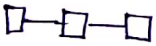

- शाखीय
  - ↓ क्राउडर

- मैथेटिक्स
  - ↓ गिल्बर्ट
  - अवरोही

Scanned by CamScanner

मानसिक स्वास्थ

प्रतिपादक - C.W. वियर्स, प्रेरणा- एडोल्फ मेयर
Book- A Mind that Found itself (1908)
आन्दोलन - डोराथिया डिक्स

लैडेल के अनुसार - "वास्तविकता के धरातल पर वातावरण से पर्याप्त सामंजस्य स्थापित करने की योग्यता।"

- हेडफील्ड - "मानसिक स्वास्थ व्यक्तित्व की सामंजस्यपूर्ण व संतुलित क्रियावस्था को व्यक्त करता है।"
- क्रो एण्ड क्रो - "मानसिक स्वास्थ का सम्बन्ध मानव कल्याण तथा मानव सम्बन्धों से है।"
- जेम्सड्रेवर - "मानसिक स्वास्थ का अर्थ नियमों की खोज करना तथा उनका संरक्षण करना है।

मानसिक स्वास्थ की प्रकृति :-

(I) मानसिक स्वास्थ एक गतिशील अवधारणा है।
(II) मानसिक स्वास्थ एक सकारात्मक अवधारणा है।
(III) यह शारीरिक स्वास्थ से जुड़ी हुई अवधारणा है।
(IV) मानसिक स्वास्थ सामाजिकता, नैतिकता व कार्यकुशलता से सीधा सम्बन्ध नहीं रखता है।

Scanned by CamScanner

उद्देश्य :-

(1) मानसिक रोगों व विकारों को दूर रखना
(2) मानसिक स्वास्थ में रोगों के कारण जानना
(3) मानसिक स्वास्थ का उपचार करना
(4) मानसिक स्वास्थ को वातावरण के अनुकूल बनाना
(5) स्वस्थ रुचियाँ, व अभिवृत्तियों का विकास करना

मानसिक स्वास्थ के तत्व :- (5)

(1) शारीरिक स्वास्थ
(2) मानसिक स्वास्थ
(3) संवेगात्मक स्वास्थ
(4) स्वस्थ वातावरण
(5) स्वस्थ रुचियाँ व अभिवृत्तियाँ

मानसिक रोगों के प्रकार :-

(1) दुश्चिन्ता विकार :- (4)

(I) फोबिया :-

(A) विशिष्ट फोबिया → व्यक्ति विशेष या वस्तु विशेष से डरना
(B) सामाजिक फोबिया - अन्तः क्रिया नहीं कर पाना
(C) विवृति फोबिया - अनजान जगह से डरना

(II) मनोग्रस्ति विकार :- एक ही क्रिया को बार-बार करना।

Scanned by CamScanner

(III) मनोग्रस्ति बाध्यता विकार - अपने विचारों को हीन समझना

(IV) उत्तरी अभिघातज दबाव विकार - संवेगात्मक शून्यता

② विच्छेदी विकार :-

(I) व्यक्तित्व लोप - कुछ समय के लिये अपने-आपको भूल जाना।

(II) विच्छेदी स्मृति लोप - अतीतकालीन कुछ घटनाओं को भूल जाना।

(III) विच्छेदी आत्मस्मृति लोप - अतीतकालीन जीवन को भूल जाना

(IV) बहुव्यक्तित्व दोष :- एक ही परिस्थिति में अलग-अलग प्रकार का व्यवहार

③ भावदशा विकार :-

(I) अवसाद ⇒ नींद न आना, मन नहीं लगना, आत्महत्या का विचार आना

(II) उन्माद ⇒ अत्यधिक सक्रियता / अत्यधिक उत्तेजनशीलता

④ मनोविदालिता सम्बन्धी रोग :- [सिजोफ्रेनिया]

⇒ चिंतन शक्ति कमजोर होती है, संवेग अस्थिर होते हैं, प्रत्यक्षण नहीं होना

(I) भ्रमाशक्ति :- मुझे किसी ने कुछ करवा रखा है ऐसा विचार आना अर्थात् एक गलत विश्वास जिसका कोई आधार नहीं होता। जैसे - मेरे खिलाफ कोई साजिश रच रहा है।

(II) भ्रांति - जो चीज है नहीं फिर भी दिख रही हो अर्थात् बिना बाह्य उद्दीपक के प्रत्यक्षीकरण होना (भूत दिखना) [हेलुजिनेशन]

(III) केटाटोनिया :- विचित्र मुखमुद्रा, एक ही स्थिति में रहना।

(IV) अलोगिया :- वाक् अयोग्यता

Scanned by CamScanner

⑤ विकासात्मक विकार :-

(I) अवधान न्यूनता अतिक्रिया विकार :-

➢ एक जगह ध्यान केंद्रित नहीं कर पाना, लगातार भागना-दौड़ना अर्थात् शांति से नहीं बैठता है।

V. Imp.

(II) ऑटिज्म शैश्व स्वालिनता :-

➢ एकांतवासी, दोस्त नहीं बनाना, सामाजिक अन्तः क्रिया नहीं करना, एक ही क्रिया को बार-बार करना।

मानसिक रोगों के उपचार की विधियाँ :-

I व्यवहारवादी चिकित्सा

Imp.

① पावलव के अनुसार -

(i) Flooding (फ्लडिंग) ➢ डरने वाली जगह पर रोगी को लगातार रखना।

(II) अन्तः स्फोटात्मक चिकित्सा ➢ रोगी को डराने वाली वस्तु के बारे में लगातार सोचने के लिये कहा जाता है।

(III) क्रमिक विसंवेदीकरण :- जोसेफ वोल्फ

➢ इसमें डर उत्पन्न करने वाले व्यक्ति या वस्तु के बारे में सोचने के साथ-साथ अन्तः क्रिया भी करनी होती है।

(IV) विरुचि चिकित्सा :-

➢ इसमें हानिकारक आदतों को दूर किया जाता है।

Reet-2018 Imp

② स्किनर के अनुसार चिकित्सा :-

(i) टोकन इकोनॉमी [सांकेतिक व्यवस्था] :-

➢ प्रत्येक अच्छे व्यवहार के बदले में एक टोकन और कुछ टोकनों के बदले में निश्चित उपहार।

Scanned by CamScanner

③ संज्ञानात्मक चिकित्सा

(i) संवेग तर्क चिकित्सा विधि - प्रतिपादक- अल्बर्ट एलिस :-
तार्किक कारणों द्वारा गलत विश्वास को दूर किया जाता है।

④ मानवतावादी चिकित्सा विधि :-

(i) रोगी केन्द्रित चिकित्सा विधि :- प्रतिपादक- कार्ल रोजर्स
→ इसमें आत्मसिद्धी पर बल दिया जाता है।

⑤ लोगो / उद्बोधक विधि :- विक्टर फ्रैंकल

रोगी को अस्तित्व व वर्तमान से परिचित करवाया जाता है।

⑥ गैस्टाल्ट चिकित्सा :- फ्रेडरिक व लारा

आत्म जागरूकता व आत्म स्वीकृति पर बल दिया जाता है।

⑦ मनोविश्लेषण चिकित्सा :-

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति की विशेषतायें :-

(I) आत्मविश्वासी
(II) सहनशीलता
(III) संवेगात्मक परिपक्वता (भावनाओं पर नियंत्रण)
(IV) स्वाभाविकता (दिखावा नहीं करते
(V) उत्तम कार्यक्षमता
(VI) स्वतंत्र निर्णयशक्ति
(VII) उत्तम समायोजन शक्ति
(VIII) प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता
(IX) आत्मसम्मान की भावना

Scanned by CamScanner

(X) स्पष्ट जीवनलक्ष्य

(XI) स्वस्थ रुचियाँ व अभिवृत्तियाँ

(XII) वास्तविकता में विश्वासी

(XIII) स्वस्थ जीवनदर्शन (अपने कर्तव्यों का पता होना)

(XIV) आत्मचेतना

बालक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक:-

(I) वंशानुक्रम

(II) पारीवारिक वातावरण

(III) सामाजिक वातावरण (जाति, ऊँच, नीच)

(IV) विद्यालय का वातावरण

(V) शारीरिक रोग या दोष

विशेष:- "पर्सनलटी एण्ड कल्चर पैटर्न" नामक पुस्तक में प्लाण्टने परिवार की निर्धनता को जिम्मेदार माना है"

अध्यापक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक:-

(1) वेतन की कमी

(2) पद की असुरक्षा

(3) अत्यधिक कार्यभार

(4) जातिय विद्यालय (भेद-भाव)

(5) निरंकुश प्रशासन (बात-बात पर डराना)

(6) शिक्षण सहायक सामग्री का अभाव

(7) मनोरंजन के साधनों का अभाव

Scanned by CamScanner

(8) शिक्षकों का आपसी संघर्ष।

(9) मनोरंजन के सस्ते साधनों का अभाव।

(10) अपरिपक्व बालकों का होना।

(11) सामाजिक सम्मान न मिलना।

रुचि

Interest शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Interesse से हुई है जिसका अर्थ होता है लगाव होना, महत्वपूर्ण होना

अर्थ- रुचि वह प्रेरक शक्ति है जो हमें ध्यान देने के लिये आकर्षित करती है।

रुचि के पहलू:- (3)

(1) जानना (ज्ञानात्मक)

(2) अनुभव करना (भावात्मक)

(3) इच्छा करना (क्रियात्मक)

रुचि के प्रकार:- (2)

(1) जन्मजात- मूलप्रवृत्ति से सम्बन्धित- जैसे- खेलना, खाना आदि।

(2) अर्जित- इसका सम्बन्ध भाव संवेदना से होता है- जैसे- पढाई करना उपन्यास पढना आदि।

सुपर के अनुसार:-

(I) अभिव्यक्त रुचि

(II) प्रदर्शित रुचि

(III) परीक्षित रुचि

(IV) प्रपञ्च रुचि

Scanned by CamScanner

रुचि की विशेषतायें :-

(1) रुचि परिवर्तनशील होती है।

(2) रुचि सदैव सकारात्मक होती है।

(3) रुचि व अभियोग्यता में सकारात्मक संबंध पाया जाता है।

* रुचि का मापन सबसे पहले 1914 में कर्निगी संगठन द्वारा किया

रुचि मापन परीक्षण :-

(1) स्ट्रॉंग व्यावसायिक रुचि परीक्षण - 1927

(2) थर्स्टन प्राथमिक रुचि परीक्षण - 1953

(3) कुडर अधिमान रुचि परीक्षण - 1954

* भारत में 1956 में इलाहाबाद ब्यूरो ने परीक्षण किया था।

अभियोग्यता

अर्थ :-

किसी कार्य को करने की विशेष योग्यता/कुशलता/दक्षता/प्रवीणता अभियोग्यता कहलाती है।

अभियोग्यता की विशेषतायें :-

(1) अभियोग्यता केवल जन्मजात होती है।

(2) अभियोग्यता व्यक्ति के भविष्य की ओर संकेत करती है।

(3) अभियोग्यता के मुख्य तीन घटक होते हैं- (i) बुद्धि (ii) रुचि व (iii) पेशेवर विलक्षणता

(4) अभियोग्यता पर वंशानुक्रम व वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है।

अभियोग्यात्मक के प्रकार :-

(1) अभि संवेदनात्मक अभियोग्यता - दृष्टि, ध्वनि, स्पर्श

(2) मैकेनिकल अभियोग्यता

(3) कलात्मक अभियोग्यता

Scanned by CamScanner

(4) व्यावसायिक अभियोग्यता (लिपिकीय कार्य)

(5) शैक्षिक अभियोग्यता (अध्ययन-अध्यापन)

शिक्षा में अभियोग्यता का उपयोग :-

(1) वर्गीकरण में उपयोगी।

(2) निर्देशन व परामर्श देने में उपयोगी।

(3) बालक की भविष्यवाणी करने में उपयोगी।

(4) विषय तथा संकाय-चयन में उपयोगी।

D.A.T. (विभेद अभिक्षमता) परीक्षण :- प्रतिपादक- बेनेट, वेशमैन, तीसोर

अभिवृत्ति [Attitude] :-

* अभिवृत्ति का तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है जो किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति पसन्द या नापसन्द को व्यक्त करता है।

अभिवृत्ति के प्रकार :- (2)

(1) सकारात्मक और (2) नकारात्मक

(1) सकारात्मक :- स्वयं तथा दूसरों के प्रति विश्वास होना प्रेम होना।

(2) नकारात्मक अभिवृत्ति :- अविश्वास का होना, नफरत का भाव होना, दूर भागना

गौण प्रकार :-

(1) सामान्य अभिवृत्ति- सभी के प्रति प्रेम या नफरत का भाव

(2) व्यक्ति विशेष के प्रति नफरत का भाव- विशिष्ट अभिवृत्ति

अभिवृत्ति की विशेषतायें :-

(1) जन्मजात होती है।

(2) इसका सम्बन्ध भाव तथा संवेगों से होता है।

Scanned by CamScanner

(3) अभिवृत्ति परिवर्तनशील होती है।

(4) अभिवृत्ति पक्ष व विपक्ष दो दिशाओं में अभिव्यक्त की जाती है

(5) अभिवृत्ति के तीन घटक होते हैं- (i) ज्ञानात्मक (ii) भावात्मक और (iii) क्रियात्मक

अभिवृत्ति का मापन

(1) थर्स्टन :- युग्म तुलनात्मक परीक्षण [1927]

(2) थर्स्टन/चेव :- समदृष्टि अन्तर परीक्षण (1929)

(3) लिकर्ट - योग निर्धारण परीक्षण- 1932

(4) सफीर :- क्रमबद्ध अन्तर परीक्षण- 1937

(5) गटमैन :- स्केलोग्राम अन्तर परीक्षण - 1945

(6) एडवर्ड/किलपैट्रिक :- भेदबोधक परीक्षण - 1948

(7) ओसगुड :- सैमेन्टिक डिफरेशियल - 1953

(8) बोगार्डस :- सामाजिक अन्तर परीक्षण - 1954

Scanned by CamScanner

"अधिगम"

अर्थ:- व्यवहार में होने वाला वांछित व स्थाई परिवर्तन अधिगम है।

Imp.
(1) वुडवर्थ के अनुसार:- " सीखना विकास की प्रक्रिया है"

↳ गिलफर्ड- "व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन अधिगम है।"

V.V. Imp.
गेट्स व अन्य- " प्रशिक्षण व अनुभव द्वारा व्यवहार में आया परिवर्तन अधिगम है।"

↳ क्रो एण्ड क्रो:- आदत, ज्ञान, व अभिवृत्तियों का अर्जन करना ही अधिगम है।"

↳ स्कीनर - "व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया ही अधिगम है।"

गिलगार्ड- नवीन परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको अनुकूलित कर लेना ही अधिगम है।

मॉर्गन व किंग -" अभ्यास तथा अनुभूति के परिणामस्वरूप व्यवहार में होने वाला स्थाई परिवर्तन अधिगम है।"

पील -"व्यक्ति में परिवर्तन ही अधिगम है जो वातावरण के अनुसरण में होता है।"

(1) अधिगम के सोपान

(I) आवश्यकता / अभिप्रेरणा / प्रेरक
↓
(II) लक्ष्य / उद्देश्य
↓
(III) बाधा व तत्परता

Scanned by CamScanner

(iv) अधिगम स्थिति / वातावरण

(v) अनुक्रिया

(vi) समायोजन

(vii) व्यवहार में परिवर्तन

(viii) व्यवहार में स्थाई परिवर्तन

अधिगम की प्रकृति / विशेषतायें :-

(1) अधिगम एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।

(2) अधिगम व्यवहार में वांछित परिवर्तन है

(3) अधिगम सार्वभौमिक है। (कहीं भी सीखा जा सकता है)

(4) अधिगम व्यक्तिगत व सामाजिक प्रक्रिया है

(5) सीखना सकारात्मक व नकारात्मक दोनों है।

(6) सीखना एक समायोजन है। (लम्बी क्लासों में बोरिंग नहीं होना)

(7) सीखना उद्देश्यपूर्ण है।

(8) सीखना ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक प्रक्रिया है।

(9) अधिगम समस्या समाधान तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली प्रक्रिया है।

(10) सीखना उद्दीपक-अनुक्रिया में सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया है।

(11) अधिगम एक विवेकपूर्ण प्रक्रिया है।

(12) अधिगम अनुभव द्वारा अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है।

(13) अधिगम एक सक्रिय व रचनात्मक प्रक्रिया है।

(14) अधिगम एक प्रक्रिया है परिमाण नही।

(15) अधिगम स्थानान्तरण की प्रक्रिया है।

Scanned by CamScanner

(16) अधिगम अनुभव का संगठन है।

अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक :-

(A) व्यक्तिगत कारक :-

(1) अभिप्रेरणा - (सर्वाधिक प्रभावित करने वाला कारक)

(2) इच्छाशक्ति (Will power)

(3) आयु तथा परिपक्वता

विशेष :- परिपक्वता से व्यवहार में स्थाई परिवर्तन नहीं होता अस्थाई होता है- क्योंकि परिपक्वता जन्मजात है जो निर्धारित समय तक चलती है।
- इस पर अभिप्रेरणा व अभ्यास का प्रभाव नहीं पड़ता।

(4) शारीरिक व मानसिक स्वास्थ

(5) रुचि, ध्यान, थकान, संवेदना, प्रत्यक्षीकरण

(B) अध्यापक सम्बन्धी कारक

(1) विषयवस्तु का प्रस्तुतिकरण (सर्वाधिक प्रभावित)

(2) विषयवस्तु में निपुणता (Command)

(3) शिक्षक का मानसिक स्वास्थ व नेतृत्व

(4) शिक्षण विधियाँ

(C) वातावरणीय कारक

(1) भौतिक वातावरण (ठण्डी जलवायु में अधिक अधिगम होता है)

(2) सामाजिक वातावरण (परिवार, विद्यालय, समूह, सिनेमा, साहित्य

(3) सांस्कृतिक वातावरण (रीतिरिवाज, अन्धविश्वास, भाग्यवादी सोच)

(D) कार्य सम्बन्धी कारक

(1) कार्य की लम्बाई, उपयोगिता, रोचकता, कार्य की कठिनाई और समानता (जुड़ा हुआ होना आपस में)

Scanned by CamScanner

(E) संगठन सम्बन्धी कारक

समयसारणी, अनुशासन, अध्यापक-छात्र सम्बन्ध, निर्देशन व परामर्श, बैठक व्यवस्था

अधिगम के नियम (थॉर्नडाइक)

(1) तत्परता का नियम

⇒ किसी कार्य को करने के लिये हम शारीरिक व मानसिक रूप से तैयार हैं तो उसे हम सीख जाते हैं अन्यथा नहीं'

जैसे:- घोड़े को तालाब तक ले जाया जा सकता है लेकिन पानी पीने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता

⇒ इस नियम का प्रयोग रुचि उत्पन्न करने, ध्यान केंद्रित करने व जिज्ञासा जागृत करने में किया जाता है।

(2) अभ्यास का नियम:-

⇒ किसी भी कार्य को बार-बार करके सीख जाना।

दो प्रकार (i) उपयोग, (ii) अनुपयोग

⇒ इस नियम का प्रयोग आदत निर्माण, लेखन सुधार, उच्चारण सुधार तथा कला प्रशिक्षण में किया जाता है।

(3) प्रभाव/ सन्तोष/ परिणाम का नियम:-

⇒ किसी भी क्रिया या कार्य को सीखना उसके परिणाम पर निर्भर करता है

जैसे:- प्रशंसा, पुरस्कार, दण्ड

अधिगम के गौण नियम:-

(1) बहुप्रतिक्रिया का नियम:-

⇒ जैसे: गाड़ी-चलाना, कम्प्यूटर चलाना (बहुत सी क्रियाओं को करके सीखना)

Scanned by CamScanner

(2) आंशिक क्रिया का नियम :-

➢ विषयवस्तु को छोटे-2 भागों में विभाजित करते हुये क्रमशः से पूर्ण की ओर सीख जाना।

(3) मनोवृत्ति (Attitude) :-

➢ सीखना सकारात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

(4) आत्मीकरण का नियम :-

➢ पूर्वज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करते हुये सीख जाना।

(5) साहचर्य परिवर्तन :-

➢ एक परिस्थिति में किये गये कार्य या व्यवहार को दूसरी परिस्थिति में करना साहचर्य है।

अधिगम के उपनियम :-

(1) नवीनता
(2) प्राथमिकता
(3) सम्बद्धता का नियम
(4) उत्तेजन की तीव्रता का नियम

अधिगम के सिद्धांत

(A) अधिगम के व्यवहारवादी सिद्धांत :-

➢ व्यवहारवादी विचारधारा में प्रशिक्षण, अनुभव, वातावरण, व्यवहार, अनुबंधन को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है।

➢ व्यवहारवादी विचारधारा में पशुओं/जानवरों पर प्रयोग हुये हैं।

➢ इस विचारधारा के अनुसार अध्यापक अधिगम परिस्थितियों का निर्माता होता है।

Scanned by CamScanner

S-R पुनर्बलन
⇓
थार्नडाइक, C.L. हल
पावलव, स्कीनर,
मिलर

S-R अपुनर्बलन
⇓
गुथरी, वाटसन, एस्टेट

(1) प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धांत :-

अन्यनाम:-

(i) उद्दीपन अनुक्रिया का सिद्धांत (S-R थ्योरी)
(ii) संयोजनवाद का सिद्धांत
(iii) बन्ध का सिद्धांत
(iv) आवृत्ति का सिद्धांत
(v) हर्ष व दुःख का सिद्धांत
(vi) परिश्रम व धैर्य का सिद्धांत

प्रतिपादक: थॉर्नडाइक - 1898
Book's - एनीमल इन्टेलीजेन्स
प्रयोग - भूखी बिल्ली पर
उद्दीपक - मछली का टुकड़ा

⇒ इस सिद्धांत में तीन चरण थे -
(1) विभिन्न अनुक्रियायें करना
(2) सही अनुक्रियाओं का चुनाव करना
(3) उद्दीपक अनुक्रिया में सम्बन्ध स्थापित करना

इस सिद्धांत की शिक्षा में उपयोगिता

(1) गणित, विज्ञान तथा समाजशास्त्र में उपयोगी है।
(2) मंदबुद्धि व बडी आयु के लिये उपयोगी
(3) क्रमिक रूप से सीखने, करके सीखने, अनुभव द्वारा सीखने व अभिप्रेरणा से सीखने पर बल देता है।

Scanned by CamScanner

(4) यह सिद्धांत गामक योग्यताओं को सिखाने में उपयोगी है।

(5) अर्जित ज्ञान को उपयोगी बनाने में सहयोगी।

आलोचना:-

(1) यांत्रिकता (एक क्रिया को बार-बार करना) पर बल देता है।

(2) प्रतिभाशाली ~~बच्चा~~ बच्चों के लिये उपयोगी नहीं, अन्तःदृष्टि का प्रयोग नहीं होता

विशेष:- मैक्डूगल ने चूहे पर तथा लॉयड मॉर्गन ने कुत्ते पर प्रयोग किया था।

V.V. Imp.

(2) अनुकूलित अनुक्रिया का सिद्धांत

अन्य नाम:-

(i) सम्बद्ध अनुक्रिया का सिद्धांत

(ii) प्रतिवादी / प्रतिस्थापक का सिद्धांत

(iii) प्राचीन / परम्परागत अनुबन्धन का सिद्धांत

(iv) S- अनुबन्धन सिद्धांत

(v) शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धांत

प्रयोग- कुत्ते पर

प्रतिपादक :- I. P. पावलव (शरीर विज्ञानी) - 1904

↳ पाचन क्रिया पर नोबेल पुरस्कार

"सीखना एक अनुकूलित ~~आ~~ अनुक्रिया है"- पावलव

प्रयोग से पूर्व- भोजन — लार

UCS UCR

(अनुबन्धित)

अनुबान्धित घण्टी — X (लार नहीं टपकी)

CS

प्रयोग के दौरान- CS घण्टी + भोजन = लार
CS UCS UCR

Last - घण्टी x ——— लार (सम्बद्ध क्रिया)
CS CR

अनुबन्धन के प्रकार :- ④

(1) सहकालिक अनुबन्धन ⇒ घण्टी व भोजन दोनों एकसाथ देना

(2) विलम्बित अनुबन्धन ⇒ घण्टी का प्रारम्भ तथा अन्त दोनों पहले होता है।

(3) अवशेष अनुबन्धन ⇒ घण्टी व भोजन में समय अन्तराल अधिक होता है

(4) पश्चगामी अनुबन्धन ⇒ भोजन पहले घण्टी बाद में

* उत्तेजन का नियम :- घण्टी को बार-बार बजाने पर कुत्ते द्वारा लार का टपकाना

* आंतरिक अवरोध व विलोपन का नियम :-

⇒ लगातार घण्टी के उपस्थित होने पर लार का टपकना बन्द हो जाना विलोपन कहलाता है।

* स्वतः पुनर्लाभ :- कुछ माह बाद पुनः घण्टी बजने पर लार टपकना

* उच्चकोटि अनुबन्धन :- घण्टी के पहले की परिस्थितियों के प्रति अनुबन्धन का होना। (जैसे- मालिक द्वारा Room की Light जलाना)

* स्व आभासी अनुबन्ध :- स्वतः अनुबन्धित अनुक्रिया का होना।

Imp.
* उद्दीपक सामान्यकरण :- मूल उद्दीपक के प्रति की जाने वाली क्रिया को अन्य उद्दीपक के प्रति भी करना।

Scanned by CamScanner

विभेदन :- मूल उद्दीपन व कृत्रिम उद्दीपन में अन्तर करना

अनुबन्धन को प्रभावित करने वाले कारक :-

(1) प्रेरक का प्रभाव (भूख)

(2) उत्तेजन का सम्बन्ध व आवृत्ति (भोजन व घण्टी के निकट का सम्बन्ध)

(3) नियंत्रित वातावरण

(4) मानसिक स्वास्थ (कुत्ता पागल न हो)

(5) लिंग व बुद्धि का प्रभाव

18/10/19

अधिगम का प्रबलन सिद्धांत

उपनाम :- Imp सबलीकरण का सिद्धांत
- Imp आवश्यकता अवकलन का सिद्धांत
- Imp प्रेरणा · प्रबलन - ह्रास
- क्रमबद्ध व्यवहार
- Imp गणितीय सिद्धांत
- विधिक सिद्धांत
- परिष्कृत सिद्धांत
- यथार्थ का सिद्धांत

- इस सिद्धांत का नाम Imp. है।

प्रतिपादक : C.L. हल, 1915

Book : व्यवहार के सिद्धांत

प्रयोग : चूहे पर

Best Line :

"सीखना आवश्यकता की पूर्ति के द्वारा होता है"
- क्लार्क हल

$B = D \times H$

व्यवहार = चालक × आदत

Q. कौनसा सिद्धांत गणितीय सिद्धांत कहलाता है?

* प्रबलन सिद्धांत गणितीय सिद्धांत कहलाता है। इस सिद्धांत में गणित के 17 नियमों उपनियमों का प्रयोग होता है।

Formula - S - O - R

S - उद्दीपक - O - प्राणी - R - अनुक्रिया ⇒ वुडवर्थ

Scanned by CamScanner

⇒ क्लार्क L हल ने वुडवर्थ के S-O-R सूत्र को स्वीकार किया है।

प्रबलन सिद्धांत की शिक्षा में उपयोगिता:-

(1) यह सिद्धांत शिक्षा में अभिप्रेरणा तथा आवश्यकता के सम्बन्ध पर बल देता है।

(2) यह सिद्धांत सीखने को यथार्थ जीवन से जोड़ने पर बल देता है।

विशेष:- स्कीनर ने इस सिद्धांत को अधिगम का सर्वश्रेष्ठ तथा चालक न्यूनता का सिद्धांत कहा है।

शेष:- अनुकूलित अनुक्रिया अथवा I.P. पावलव के सिद्धांत की शिक्षा में उपयोगिता:-

(1) यह सिद्धांत भाषा विकास में उपयोगी है।

(2) समूह निर्माण में उपयोगी है।

(3) भय अथवा संवेगात्मक अस्थिरता को दूर करने में उपयोगी है।

(4) अच्छी आदतो के निर्माण में उपयोगी है।

(5) सकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण करने व मानसिक रोगों का उपचार करने में उपयोगी है।

(6) यह सिद्धांत अनुशासन को स्थापित करने व लेखन सुधार में उपयोगी है।

④ क्रिया प्रसूत अनुबन्धन सिद्धांत:-

उपनाम: (I) सक्रिय अनुबन्धन सिद्धांत
(II) कार्यात्मक प्रतिबद्धता सिद्धांत
(III) नैमैत्तिक अनुबन्धन सिद्धांत
(IV) R-S अनुबन्धन सिद्धांत
(V) रिक्त प्राणी उपागम सिद्धांत
(VI) साधनात्मक अनुबन्धन सिद्धांत

प्रतिपादक:
B.F. Skinar

प्रयोग:
सफेद चूहा व कबूतर पर

Scanned by CamScanner

Imp. वह व्यवहार जिसमें उद्दीपक की जानकारी ना हो क्रिया- प्रसूत व्यवहार कहलाता है।

Imp. यह प्रभाव के नियम पर आधारित है।

Imp. इस सिद्धांत में अनुक्रिया तथा पुनर्बलन को महत्वपूर्ण माना जाता है।

Imp. किसी क्रिया को करने के बाद यदि बल प्रदान करने वाला उद्दीपक मिलता है तो इस क्रिया को करने की शक्ति में वृद्धि हो जाती है।

क्रिया प्रसूत अनुबन्धन सिद्धांत की विशेष अवधारणायें :-

(1) पुनर्बलन

- सकारात्मक
  - प्राथमिक → जन्मजात आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले
  - द्वितीयक → प्रशंसा, पुरुस्कार
- नकारात्मक → भय, दण्ड

(2) पुनर्बलन अनुसूची

- सतत
- आंशिक
  - अनुपात
    - निश्चित अनुपात
    - परिवर्त्य अनुपात
  - अन्तराल
    - निश्चित अन्तराल
    - परिवर्त्य अन्तराल

Scanned by CamScanner

(III) Shaping / आकृतिकरण / रूप निर्धारण / ढलना :-

⇒ बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने के लिये पुनर्बलन का न्याय-संगत प्रयोग।

(IV) वंचन :-

⇒ सही अनुक्रिया होने तक पुनर्बलन को रोके रखना वंचन कहलाता है।

(V) शृंखला :- इसकी व्याख्या स्कीनर ने की है।

(VI) अनुक्रिया सामान्यीकरण :-

⇒ एक ही अनुक्रिया की बार-बार पुनरावृत्ति

स्कीनर के अनुसार शाब्दिक व्यवहार के प्रकार :-

(1) माण्ड (माँग)

(2) टैक्ट - वस्तु को देखकर उसके बारे में बोलना।

(3) प्रतिध्वनिक व्यवहार :- आपके द्वारा बोले गये शब्द बच्चे द्वारा बोलना

(4) ऑटोक्लिटिक व्यवहार :- आपके बाद स्वतः ही बच्चे द्वारा बोलना

क्रिया प्रसूत सिद्धांत की शिक्षा में उपयोगिता :-

(1) बालक के भाषा विकास में अनुक्रिया तथा पुनर्बलन को सबसे महत्वपूर्ण मानता है।

(2) आत्मविश्वास को बढ़ाने तथा चिंताओं को दूर करने में उपयोगी

(3) बालक के व्यवहार परिमार्जन में यह सिद्धांत उपयोगी है।

(4) निदानात्मक तथा उपचारात्मक शिक्षण में उपयोगी

(5) परिणामों की जानकारी देने व सकारात्मक पुनर्बलन पर बल देता है।

(6) यह सिद्धांत अभिक्रमित अनुदेशन की गति को बढ़ाने में उपयोगी

Scanned by CamScanner

⑤ समीपता अनुबंध सिद्धांत :-
स्थानापन्न " "

प्रतिपादक :- एडविन गुथरी
प्रयोग :- खरगोश व बालक पीटर पर

(i) इस सिद्धांत के अनुसार उद्दीपक अनुक्रिया (S-R) में सम्बन्ध पुनर्बलन के आधार पर नहीं अपितु समीपता के आधार पर होता है।

(ii) इस सिद्धांत के अनुसार सीखना एक ही प्रयास का परिणाम होता है।

(iii) इस सिद्धांत में ~~उत्तेजक~~ को अनुक्रिया को उत्तेजक की तरफ प्रतिस्थापित किया जाता है।

कथन :- एक उत्तेजक प्रतिमान जो किसी प्रतिक्रिया के समय क्रियाशील है यदि वह दोबारा होगी तो उस अनुक्रिया को पुनः उत्पादित करने की योग्यता रखता है। (व्यवहारवाद समाप्त)

[संज्ञानवाद]

» यह विचारधारा मानसिक क्रिया, स्कीमा, सूझ, सूचना संगठन तथा आत्मानुभूति को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानता है।

संज्ञानवाद के दो भाग हैं-

(A) प्राचीन संज्ञानवाद :- पियाजे, कोहलर, वर्दीमर, टॉलमैन, कुर्त लेविन
(B) आधुनिक संज्ञानवाद :- बान्डुरा, आसुबेल, जेरोम ब्रूनर, ~~टॉलम~~ नोर्मन

Scanned by CamScanner

(1) पियाजे का संज्ञानात्मक विकास:-

प्रतिपादक: जीन पियाजे - स्विटजरलैंड

BOOK'S	प्रयोग स्वयं के बच्चों पर
(i) बालचिंतन की भाषा	(i) लारेण्ट
(ii) बालक का मनोविज्ञान	(ii) ल्यूसीन
(iii) बुद्धि का मनोविज्ञान	(iii) जेक्लीन
(iv) संसार के बारे में बच्चों के विचार

⇒ पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास आरोही क्रम में गुणात्मक रूप में होता है।

⇒ पियाजे के अनुसार "बालक वातावरण के साथ सम्बन्ध बनाते हुये अपनी समझ का विकास करता है।"

संवेगात्मक विकास की अवस्था:-

(1) संवेदीगामक या इन्द्रियगामक विकास:- 0-2 वर्ष

विशेषतायें:-

(i) बालक संवेदना तथा शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से सीखता है।

(ii) बालक वातावरण से स्वयं को अलग समझता है।

(iii) व्यावहारिक बुद्धि का अभाव

(iv) स्मृति, अनुकरण, ध्यान व जिज्ञासा प्रवृत्ति का विकास

(v) क्रिया व प्रेरणा में सम्बन्ध सम्बन्ध स्थापित करता है।

(vi) वस्तु स्थायित्व की प्रवृत्ति 18-24 माह (कबूतर द्वारा वस्तु का नहीं ले जाना)

Scanned by CamScanner

इस अवस्था के 6 भाग हैं :-

(1) सहज प्रतिवृत क्रिया ⇒ 0-30 दिन (चूसना, मुस्कराना)

(2) प्रमुख वृतीय प्रतिवृत्त ⇒ 1-4 माह (दोहराना)

(3) गौण प्रतिवृत्त क्रिया ⇒ 4-8 माह (वस्तु को पकड़ना, दौड़ना)

(4) गौण स्कीमेटा ⇒ 8-12 माह (अनुकरण करना, वस्तुओं की खोज)

(5) तृतीय प्रतिवृत क्रियायें ⇒ 12-18 माह तक - वस्तुओं के गुणों की खोज करना

(6) मानसिक संयोग द्वारा साधनों की खोज की अवस्था (वस्तु स्थायित्व की प्रवृत्ति)

(II) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष) :-

- आत्मकेंद्रित (Ego Centerism) (2-4 वर्ष)
- अन्तःप्रज्ञात्मक (Intutive)

(1) बालक में मौलिक भाषा का संकेतों के माध्यम से सर्वाधिक विकास।

(2) बालक में अनुकरण, खेलना तथा अभिनय करने की प्रवृत्ति का सर्वाधिक विकास।

(III) सजीववाद (Animism) :-

(1) गतिशील वस्तुओं को सजीव समझना तथा भौतिक घटनाओं का मानवीकरण करना। जैसे - सूर्य आज उदास है।

(2) कलेक्टिव मोलेलो :- अपने आप से बातें करना।

(3) कलेक्ट्रीकरण :- वस्तु के एक ही पक्ष पर ध्यान देना।

Scanned by CamScanner

(4) अहम् भाव - अपने ही विचारों को सही समझना तथा यह सोचना कि कोई वस्तु मेरा पीछा कर रही है। जैसे - बादल का साथ चलना।

(III) अन्तः प्रज्ञात्मक अवस्था (4-7 वर्ष) :-

(1) बालक सहज रूप से विचार करना प्रारम्भ कर देता है तथा साधारण मानसिक क्रिया करना। जैसे - जोड़ना, घटाना, भाग देना आदि।

(2) अनपलटन का दोष - नियमों को नहीं समझना घर दूरी स्कूल

(3) वर्गीकरण व क्रमबद्धता का अभाव

(IV) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11 वर्ष) :-
(ठोस)

(1) मूर्त रूप से चिंतन या ~~विकास~~ विचार करना

(2) V. Imp. वस्तुओं का वर्गीकरण करेगा, सम्बन्ध स्थापित करेगा, तुलना करेगा विचारों में क्रमबद्धता।

(3) अहम् भाव को छोड़ देना।

(4) पलटन का गुण आजायेगा।

(5) नियमों की समझ आयेगी।

(6) संरक्षण की समझ (लम्बाई, चौड़ाई, दिशाओं, समय का ज्ञान)

(V) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था 12-15 वर्ष ..... :-

(1) अमूर्त चिंतन, अपसारी (हर पल सोचना) चिंतन, व्यवस्थित व योजनाबद्ध चिंतन का विकास।

Scanned by CamScanner

(2) परिकाल्पनिक निगमन तार्किक योग्यता (संभावना से वास्तविकता की ओर समस्या का समाधान)

(3) सभी प्रकार की मानसिक योग्यताओं का विकास जैसे- विश्लेषण, संश्लेषण, रचनात्मकता, कल्पना, समस्या समाधान तथा अधिगम स्थानान्तरण की योग्यता का विकास।

→ पेण्डुलम तथा ढोलक की अवस्था का सम्बन्ध इसी से था।

पियाजे की अवधारणायें:-

① स्कीमा:- सूचनाओं की असंगठित संरचना जो समस्याओं का समाधान करने में योगदान देती है।

⇒ यह दो प्रकार की होती है-

(I) व्यावहारिक स्कीमा ⇒ किसी से शारीरिक क्रियायें करना

(II) मानसिक स्कीमा ⇒ मानसिक क्रिया करना

स्कीमा के कार्य:- विकास के तीन पक्ष होते हैं-

(1) जैविक परिपक्वता,

(2) भौतिक वातावरण से प्राप्त अनुभव,

(3) सामाजिक वातावरण से प्राप्त अनुभव।

⇒ इन तीनों पक्षों में संतुलन स्थापित करने तथा संज्ञानात्मक संरचना में परिवर्तन करने का कार्य स्कीमा करती है।

→ वे व्यवहार जिन्हें हम प्रतिदिन दोहराते हैं स्किम्स कहलाते हैं। जैसे:- कपड़े पहनना, नहाना, खाना खाना इत्यादि।

Scanned by CamScanner

(11) अनुकूलन :-

» बालक वातावरण से समायोजन स्थापित करने के लिये तीन प्रकार की अनुक्रियायें करता है-

(A) आत्मीकरण (Assimilation) :-

» पूर्व स्कीमा की सहायता से नवीन वस्तु की व्याख्या करना।

(B) समंजन (Accomodation) :-

» पहले से मौजूद स्कीमा में परिवर्तन करते हुये नवीन स्कीमा विकसित करना।

(C) साम्यधारण / संतुलीकरण :-

» पूर्व स्कीमा और नवीन स्कीमा में संतुलन स्थापित करते हुये सही स्कीमा विकसित कर लेना संतुलीकरण या साम्यधारण कहलाता है। (जीन पियाजे समाप्त)

(12) अन्तः दृष्टि / सूझ का सिद्धांत :-
समग्र / गैस्टाल्टवादी

प्रतिपादक :- कोहलर (कोफ्का), मैक्स वर्दीमर - 1917
प्रयोग :- चिम्पांजी (सुल्तान)
स्थान :- कैनारी (जर्मनी)

अर्थ :- किसी समस्या का अचानक से समाधान सूझना।

गुड :- "सूझ या अन्तः दृष्टि वास्तविक स्थिति का आकस्मिक, तात्कालिक तथा स्थाई ज्ञान है।"

Scanned by CamScanner

↳ अन्तःदृष्टि को प्रभावित करने वाले कारक:-

(1) बुद्धि का प्रभाव
(2) कल्पना का प्रभाव
(3) प्रत्यक्षीकरण

शिक्षा में उपयोगिता:-

(1) गणित तथा भौतिक शास्त्र में उपयोगी है।

(2) यह सिद्धांत उच्च स्तर की मानसिक क्षमताओं जैसे- समस्या समाधान कल्पना, चिंतन, अवबोध, रचनात्मकता, स्मृति तथा सामान्यीकरण का विकास करता है।

(3) वैज्ञानिक कार्यों तथा अधिगम स्थानांतरण में उपयोगी है।

(4) एकीकृत पाठ्यक्रम का निर्माण करने तथा विषयवस्तु के तार्किक प्रस्तुतीकरण में उपयोगी है।

गेट्स व अन्य के अनुसार:- यह सिद्धांत स्वयं खोज करके सीखने पर बल देता है।

सूत्र:- सम्पूर्ण से अंश की ओर

* आकारमिकता
* अहा अनुभव
* प्रत्यक्षीकरण
* समग्रता (सम्पूर्णता)

Scanned by CamScanner

③ कुर्त लेविन का क्षेत्रीय सिद्धांत / तलरूप सिद्धांत / प्रकृतिक दशा का सिद्धांत :-

प्रतिपादक : कर्ट लेविन, जर्मनी, 1917

$B = f \times [P \times E]$

(1) व्यवहार व्यक्ति तथा वातावरण की अन्तःक्रिया का परिणाम होता है।

(2) जीवनक्षेत्र के आधार पर व्यवहार की व्याख्या की है।

(3) वेक्टर्स — आकर्षण - लक्ष्य की ओर ले जाने वाली शक्ति
विकर्षण - लक्ष्य से दूर ले जाने वाली शक्ति

(4) टोपोलॉजी :- गणित का शब्द जो मनुष्य के जीवन में होने वाले परिवर्तनों को व्यक्त करता है।

कर्ट लैविन ने तीन तत्वों को सबसे महत्वपूर्ण माना है -

(1) लक्ष्य
(2) भर्त्सना
(3) अवरोध

विशेष :- कर्ट लेविन ने अधिगम को सापेक्षिक क्रिया माना है।

④ चिन्ह अधिगम सिद्धांत :-

उपनाम : (i) उद्देश्यपूर्ण व्यवहार का सिद्धांत
(ii) गुप्त अधिगम
(iii) स्थान अधिगम
(iv) अव्यक्त अधिगम
(v) संज्ञानात्मक मानसिक प्रत्याशा सिद्धांत

Scanned by CamScanner

प्रतिपादक : एडवर्ड टोलमैन

Book : उद्देश्यपूर्ण व्यवहार जानवर तथा मनुष्य पर

प्रयोग : चूहे पर

(1) यह सिद्धांत व्यवहारवाद, संज्ञानवाद, गेस्टाल्टवाद, मनोविश्लेषणवाद, हार्मिक - मनोविज्ञान (मैक्ड्गल का 14 मनोवृत्तियों वाला) गत्यात्मक मनोविज्ञान (वुडवर्थ) का मिश्रण है।

(2) यह सिद्धांत मोलार व्यवहार पर बल देता है।

(3) इस सिद्धांत के अनुसार लक्ष्यप्राप्ति में अनुक्रिया की अपेक्षा मार्ग महत्वपूर्ण है। (अर्जुन, द्रोणाचार्य - चिड़िया की आँख)

(4) लक्ष्यप्राप्ति में पुरुस्कार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(प्राचीन संज्ञानवाद समाप्त)

[आधुनिक संज्ञानवाद]

(1) सामाजिक अधिगम सिद्धांत :-

उपनाम : (1) सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत
(2) प्रत्यक्ष अधिगम सिद्धांत
(3) मॉडल / भूमिका अधिगम सिद्धांत

प्रतिपादक : अल्बर्ट बाण्डूरा, वाल्स

प्रयोग : बालक, बैबी डॉल, जोकर पर

लैण्डग्रेन - सामाजिक अधिगम की प्रक्रिया अन्तःक्रिया या सम्पर्क से प्रारम्भ होती है।

सामाजिक अधिगम के सोपान :-

(1) अवलोकन / अवधान / ध्यान
(2) धारण / प्रतिधारण Retention
(3) पुनः उत्पादन / पुनः प्रस्तुतीकरण
(4) पुनर्बलन / अभिप्रेरणा

Best line :-

" हम खुद से नहीं दूसरों को प्रत्यक्ष रूप से देखकर सीखते हैं।"

Scanned by CamScanner

सामाजिक अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

(1) सामाजिक कारक :-

समानता, अवलोकन, सुझाव, प्रतिस्पर्धा, सहानुभूति, सहयोग

(2) मनोवैज्ञानिक कारक :-

चालक, प्रेरणा, उत्तेजना, मॉडल की विशेषता

(3) शारीरिक कारक :-

- परिपक्वता, आयु, थकान, शारीरिक रोग, अन्तः स्त्रावी ग्रंथियाँ

सामाजिक अधिगम सिद्धांत की शिक्षा में उपयोगिता

(1) व्यक्तित्व निर्माण में उपयोगी।

(2) भाषा विकास में उपयोगी।

(3) सामाजिक व्यवहार को सिखाने में उपयोगी।

(4) कला प्रशिक्षण (संगीत, अभिनय) को सिखाने में उपयोगी।

(2) अधिगम सोपानकी सिद्धांत :-

प्रतिपादक : रॉबर्ट गैने - 1965

Book : Condition of Learning

इनके 8 सोपान हैं-

(1) संकेत अधिगम :-

➢ घंटी की आवाज (संकेत) को सुनकर कुत्ते द्वारा लार टपकाना।

(2) उद्दीपक अनुक्रिया अधिगम :-

➢ उद्दीपक (भोजन) को देखकर व्यवहार में परिवर्तन आना।

(3) शृंखला अधिगम :- (i) शाब्दिक शृंखला → अभिकल्पित अनुदेशन

(ii) अशाब्दिक शृंखला → चिन्हों के माध्यम से सीखना

Scanned by CamScanner

(4) शाब्दिक साहचर्य अधिगम :-

⇒ शब्दों के माध्यम से व्यवहार में परिवर्तन होना जैसे- कविता, गाने आदि।

⇒ डेविड आसुबेल ने आधुनिक संज्ञानवादी सिद्धांत में इसके चार प्रकार बताये हैं-

(i) अभिग्रहण
(ii) रटकर सीखना
(iii) खोजकर सीखना
(iv) अर्थपूर्ण सीखना (समझकर सीखना)

(5) बहुभेदक :-

⇒ वस्तुओं में अन्तर करना, रंगों में अंतर करना बहुभेदक अधिगम कहलाता है।

(6) सम्प्रत्यय/अवधारणा अधिगम :- केण्डलर

⇒ किसी वस्तु की व्याख्या उसके गुणों के आधार पर करना।

(7) सिद्धांत अधिगम :-

⇒ नियमों के आधार पर सीखना

(8) समस्या समाधान अधिगम :-

⇒ यह अधिगम का सर्वोच्च प्रकार है।
⇒ इसे व्यक्तिगत या जटिल अधिगम भी कहा जाता है।

Scanned by CamScanner